10, II

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

हेमन्ताङ्क

वर्ष १०
सं० २००७

संख्या २
पौष



वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्क का मूल्य १।) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक–

(१) जो महानुभाव ३००) तीनसौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायँगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायँगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण, मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे; अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्त्तन) की पत्र पत्रिकाएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय', सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवानेमें उक्त मूल्यमें चार आने रजिस्ट्री खर्च के अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहकसंख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य या एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसी को नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे, उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

वर्तमान दशम वर्षके नववर्षाङ्क (गतांक) की अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष रही हैं, अतः जिन पुराने ग्राहकोंने अभी तक अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है वे शीघ्र ही ४) चार रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज कर इस 'हेमन्तांक' के साथ ही 'नववर्षाङ्क' भी प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा विलम्ब करने पर पीछेसे यह 'नववर्षाङ्क' किसी भी मूल्यमें उन्हें प्राप्त न हो सकेगा। यह नववर्षाङ्क और 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक अङ्क कितने उपयोगी सिद्ध हुए हैं—इसका प्रमाण भारतके कोने-कोनेसे आई हुई विद्वानोंकी सम्मतियां पत्र पत्रिकाओंकी प्रशंसा और विज्ञ पाठक स्वयं है।

गत 'वसन्तांक' से बने हुए ग्राहकों के लिए

गत चैत्रमास (अप्रैल १९५०) के 'वसन्ताङ्क' (वर्ष ९ संख्या ३) से बने हुए ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके पहुंचने पर समाप्त हो जायेगा। उन ग्राहकोंको इस वर्षके आगामी चैत्र और आषाढ़के शेष दो अङ्कोंका मूल्य २॥) रु० फाल्गुन शु० १५ ता० २३ मार्च १९५१ के प्रथम ही कार्यालयमें भेज देना चाहिए। जो सज्जन 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक रहना चाहें, उनको आगामी वर्षका मूल्य ४) भी साथ ही भेजनेमें सुविधा होगी। अतः ऐसे ग्राहकोंको १८ मासके ६ अंकोंके लिए ६॥) छः रुपये आठ आने मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज देना चाहिए।

जो सज्जन गत वर्षके हेमन्ताङ्क (जनवरी १९५०) से ग्राहक बने थे उनका मूल्य गत 'नववर्षाङ्क' में समाप्त हो चुका है, इस वर्षके शेष ३ अंकोंके लिए उन्हें ३) भेज कर यह 'हेमन्ताङ्क' शीघ्र मंगवा लेना चाहिए।

बिना मूल्य दुबारा अंक नहीं भेजा जायगा

'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही निश्चित तिथि पर सब ग्राहकोंके नाम बहुत सावधानी पूर्वक दो बार जांच कर भेज दिया जाता है। परन्तु डाककी अव्यवस्थाके कारण कई ग्राहकोंकी शिकायतें आई और उन्हें दुबारा अङ्क भेजना पड़ा, इस प्रकार कार्यालयको बहुत कठिनाई हुई। अतः अब यह अंक सब ग्राहकोंके नाम पौष शु० १० को एक पैसेका मार्गव्यय (टिकट) कम लगा कर भेजा जा रहा है ताकि दो पैसेका बेरंग होकर ग्राहकोंको यथासमय मिल जावे। इतने पर भी यदि किसी ग्राहकको न मिले तो वे १५ दिनके अन्दर कार्यालयको पत्र लिखकर मंगवा लें। १५ दिनके बाद स्थायी ग्राहकोंको आधा मूल्य ॥=) आने और ।=) डाक रजिस्ट्री खर्चके कुल १) भेजने पर ही रजिस्ट्रीसे भेजा जावेगा।

नाम और पूरा पता स्पष्ट देवनागरी (हिन्दी) अक्षरों में लिखिये

बहुतसे ग्राहक वार्षिक मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम पता और ग्राहक संख्या आदि कुछ भी नहीं लिखते और कई उर्दू अंग्रेजीमें अस्पष्ट अक्षरोंमें पता लिखते हैं, इससे बड़ी कठिनाई होती और अङ्कके विलम्बसे पहुँचने या गुम होनेका भय रहता है, अतः प्रत्येक ग्राहकको मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम और पूरा पता स्पष्ट देवनागरी (हिन्दी) अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

आगामी अंक

'श्रीस्वाध्याय'का आगामी 'वसन्ताङ्क' चैत्र शु० १ को प्रकाशित हो जायेगा। इसमें सं० २००८ का सविस्तर भविष्यफल, कालसर्पयोगका पूर्ण विवेचन, सिंहलग्न जातक फल, सं० २००८ में व्यापारकी स्थिति, फलितपर विचार, अनुभूत योग, राशिफल, तथा धार्मिक सांस्कृतिक दार्शनिक महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होंगे।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

विषय-सूची

❀ श्रीः ❀

❀ श्रीस्वाध्याय ❀

—०००—

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

★

संरक्षक—

धर्ममार्तण्ड राजासाहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।
श्रीमान् चौधरीसाहब गगनसिंहजी रईस जण्डवाल (होशियारपुर)
श्रीमान् ला० शिवचरणदासजी, सदस्य परामर्शदातृ-समिति हिमाचलप्रदेश, सोलन।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।
श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलओनर, लहरागागा (पटियाला राज्यसङ्घ)
श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, दिल्ली।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर (उत्तरप्रदेश)
श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल सिल्चर (आसाम)
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।
श्रीमान् ला० शिवप्रसादजी आढ़ती, खड़ (पञ्जाब)

★

प्रधान सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उप सम्पादक—

साहित्यरत्न काव्यतीर्थ श्री पं० भवानीशङ्कर त्रिवेदी शास्त्री बी० ए०

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन [हिमाचल प्रदेश]

★ नये सहायक वर्गको धन्यवाद ★

श्रीस्वाध्याय-परिवारको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि इस वर्षसे निम्नलिखित चार महानुभावोंने 'श्रीस्वाध्याय'के सहायक बन कर सहयोग देना प्रारम्भ किया है —

१— श्रीमान बा० भागीरथलालजी मिलओनर, लहरागागा

आप लहरागागा मण्डी (पटियाला राज्य संघ)के परम धार्मिक विद्यानुरागी रईस और भू० पू० आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। पटियाला राज्य संघके प्रायः सभी उच्चाधिकारी एवं स्थानीय जनता आपकी न्यायप्रियता, निरभिमानतादि सद्गुणोंसे सदा संतुष्ट रहती है। ज्योतिर्विज्ञान और भारतीय साहित्य संस्कृतिमें आपकी विशेष श्रद्धा होनेके कारण 'श्रीस्वाध्याय' एवं 'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग' पर आपका स्वाभाविक अनुराग है। इस वर्षसे आपने 'श्रीस्वाध्याय' का सहायकत्व स्वीकार किया है। अतः इस उदार स्नेह सहयोगके लिए हम आपको हार्दिक धन्यवाद देते हुए प्रभुसे प्रार्थी हैं कि ऐसे गुणग्राही उदार सज्जनका सर्वविध कल्याण होता रहे।

२— श्रीमान् लाला अमरनाथजी रईस, दिल्ली

आप दिल्लीके सुप्रसिद्ध रईस और न्यूअमर टाकीज [अजमेरी गेट]के अधिपति हैं। सौम्य स्वभाव, निरभिमानता, गुरुजन-गुणिजन सेवा, उदारता एवं भगवद्भक्तिमें परम-निष्ठा आदि अनेक सद्गुणोंके कारण आप जनप्रिय एवं स्थानीय अधिकारियोंके सम्मान भाजन बने हुए हैं। भारतीय संस्कृति एवं ज्योतिर्विज्ञानसे आपको विशेष प्रेम है। 'श्रीस्वाध्याय'की शाखा दिल्लीमें स्थापित करनेके लिए आपने निकट भविष्यमें ही अपना स्थान देनेका वचन देकर उदारता प्रकट की है। अतः इस स्नेह सहयोगके लिए आपको जितने भी धन्यवाद दिये जायें थोड़े हैं। ईश्वर ऐसे गुणग्राही हितैषी सज्जनका सर्वविध मंगल करते हुए शतायुः करें। यही हमारी मंगलकामना है।

३— श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल अनूपशहर (उत्तरप्रदेश)

आप अनूपशहर (बुलन्दशहर) के विख्यात धर्मप्रेमी विद्यानुरागी सज्जन हैं। सभी समागत सन्त महात्मा एवं विद्वानोंका आपके यहां भारतीय परंपरानुसार उचित आतिथ्य सत्कार होता है। आप प्रथमवर्षके प्रथमाङ्कसे ही 'श्रीस्वाध्याय'के निरन्तर स्थायी ग्राहक हैं और अपने इष्ट-मित्रोंको भी ग्राहक बनाया है। आपने हमारे गताङ्कके निवेदनको पढ़ कर स्वतः आन्तरिक प्रेरणासे इस वर्षसे सहायकत्व स्वीकार किया है, अतः हम आपको अनेक धन्यवाद देते हुए चिरायुकी कामना करते हैं।

उक्त तीनों महानुभावोंने अपना नाम परिचय प्रकाशित न करनेकी हमसे प्रार्थना की थी। किन्तु हमने उसी समय कह दिया था कि जैसे शुभ कार्यमें सहायता करना आपकी इच्छा पर निर्भर है वैसे ही परिचय प्रकाशित करना न करना यह हमारी इच्छा पर निर्भर है। आशा है कि इसके लिए उक्त महानुभाव असन्तुष्ट न होंगे।

४— श्रीमान सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल सिल्चर

आप सिल्चर (आसाम) के सुप्रसिद्ध उद्योगपति महानुभाव हैं। सज्जनता गुणग्राहकता एवं निरभिमानतादि सद्गुण आपके प्रशंसनीय हैं। धार्मिक उदारता आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इस वर्षसे आपने भी 'श्रीस्वाध्याय' का सहायकत्व स्वीकार कर अपनी गुणग्राहकताका परिचय दिया, तदर्थ आपके लिए सधन्यवाद प्रभुसे कल्याण कामना की जाती है।

यदि इसी प्रकार कुछ और 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी समर्थ सज्जन संरक्षकत्व वा सहायकत्व स्वीकार करके सक्रिय सहयोग देना प्रारम्भ कर दें तो पहलेकी क्षति पूर्ण हो जावे और हम इसे अधिक उपयुक्त सुन्दर सामग्रीके साथ मासिक रूपमें शीघ्र ही प्रस्तुत कर सकें। आशा है पाठक इस ओर अवश्य ध्यान देंगे। जिनमें संरक्षक वा सहायक बननेकी सामर्थ्य नहीं हैं वे अपने इष्ट मित्रोंको अधिकसे अधिक ग्राहक बनाकर सहयोग दे सकते हैं।

'श्रीस्वाध्याय' प्रश्न पत्रिका (कूपन)

१५ मार्च १९५१ तक उपयोगी

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः   ॐ श्रीः ॐ   स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्ताङ्क]

स्वराष्ट्राशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष १० | सोलन, पौष शु० १० बुधवार सं० २००७ वि० | संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयंस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

निवेदन

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

परागाढ्यं श्रीसद्गुरुचरणपाथोजयुगली-
समूढं हे चित्त ! भ्रमर ! मकरन्दामृतरसम् ।
समास्वाद्योन्माद्यत्प्रतिभयजरामृत्युहरणं
भजेथाः स्वात्मानं निरतिशयमानन्दसदनम् ॥१॥

ज्वलत्कामक्रोधावलिभिरवलीढेन मनसा
पुरारातेर्यद्याप्यतिकठिनमाप्यं शिवपदम् ।
दयार्द्रस्वान्तश्रीगुरुचरणनिर्णेजनजलैः
पवित्रीभूतानां ननु तदपि किं स्यान्न सुलभम् ॥२॥

सम्पादकीय विचार:—

गता नरशिखित्रयी

पिछले तीन मासोंमें भारत और विश्वको तीन विभूतियोंसे वंचित हो जाना पड़ा। वे थे योगिराज श्री अरविन्द, श्री सरदार पटेल और जार्ज बर्नार्ड शा। ये तीनों अपने क्षेत्र व समयके सर्व-श्रेष्ठ व्यक्तियोंमें से थे।

योगीराज श्री अरविन्द—

भारतके विश्वविख्यात महान् राजयोगी श्री अरविन्दने विगत मार्गशीर्षमासमें चिरसमाधि ले ली। उनकी इस चिरयोगनिद्रासे आध्यात्मिकजगत्को एक बड़ा आघात सा पहुँचा। पर जैसा कि उनके परम विद्वान् मनीषि भक्त श्री अभयदेवजीने अपने वक्तव्यमें कहा है कि—योगीकी इस चिरसमाधि पर शोकातुर होकर विचलित होनेकी आवश्यकता नहीं। महापुरुषोंके आविर्भाव और तिरोभाव दोनों ही से विश्वका कल्याण होता है। और यह तो उसकी अपनी लीला है। एक और भी बात—विश्वको आने वाले महान् संकटसे बचानेके लिए ही जगत्के रक्षक इस योगिराजने अपने भौतिक देहका बलिदान किया है।' आजका युग अत्यधिक प्रत्यक्षवादी अथ च भौतिकताका उपासक है। तदनुसार संसारके कोने-कोनेमें बिखरे हुए साधकोंकी इन योगीराजके भौतिक देहके अन्तिम दर्शनों की इच्छा हो सकती थी। इसी लिए उनका निष्प्राण भौतिक देह पूरे ७८ घण्टे तक तेजयुक्त बना रहा। तीन दिनमें संसारका कोई भी मनुष्य कहीं से भी जाकर उनके अन्तिम दर्शनोंकी इच्छा पूर्ण कर सकता था। योगियोंके लिये यह बात सामान्यसी होती हुई भी हम साधारण प्राणियोंके लिये तो सर्वथा असाधारण ही है। अब योगीराजके भौतिक विग्रहके हमारे मध्यसे उठ जानेपर भी उनके कार्य और उपदेश विश्वमें सदा एक दिव्य प्रेरणा का संचार करते रहेंगे। अब हमें अरविन्द-साहित्यके पठन पाठन को अधिकाधिक प्रचारित करनेका प्रयत्न करना चाहिए। उनकी सम्पूर्ण आध्यात्मिकता उनके उपदेशों या ग्रन्थोंमें निहित है। अरविन्दके ग्रन्थोंका स्वाध्याय कर तथा यथाशक्ति तदनुसार अपने जीवन को आध्यात्मिक सांचेमें ढालकर अपने आपको उन्नत बनानेकी ओर अग्रसर होना ही इस महान् योगीका अनुयायी बनना है।

श्री सरदार पटेल—

विगत मार्गशीर्ष शु० ७ ता० १५ दिसम्बरको भारत के लोहपुरुष श्रीसरदार पटेलका हृदय पर आक्रमणके रोग से बंबईमें स्वर्गवास हो गया। गांधीजीके निधनके पश्चात् भारतसे यह एक दूसरा राजनैतिक महापुरुष छिन गया। श्री सरदार पटेलकी समता अनेक ऐतिहासिक महापुरुषोंसे की गई हैं, पर उनके लिए सबसे अधिक उचित उपमान आचार्य चाणक्य ही हैं। राजनैतिक क्षेत्रमें जैसी दृढ़ता, कर्मनिष्ठा, नीतिपटुता और सबसे बढ़ कर स्वराष्ट्रकी हितभावना चाणक्यमें थी, श्री सरदार पटेल ठीक उसके प्रतिरूप थे। आचार्य चाणक्यने जिस प्रकार सम्पूर्ण भारतको चन्द्रगुप्तके झण्डेके नीचे लाकर एक सूत्र में ग्रथित कर दिया था ठीक वैसे ही सरदारश्रीने भी विविध राज्योंको भारतकी एक पताकाके नीचे लाकर संयुक्त कर दिया। इसके अतिरिक्त इस लोहपुरुषका एक और सबसे बड़ा कार्य था कांग्रेस और सरकारकी आन्तरिक प्रमुख प्रतिस्पर्धी शक्तियोंका संतुलन स्थिर रखना। सरदार के रहते मंत्रिमंडलमें या कांग्रेसमें कोई भी व्यक्ति या पार्टी इतना अधिक बल नहीं पकड़ सकती थी कि दूसरे पक्षकी सर्वथा उपेक्षा कर दे। उनके रहते वास्तविक अर्थोंमें कोई भारतका 'डिक्टेटर' नहीं बन सकता था। पर अब उनके उठते ही वह संतुलन बिगड़ गया। राज्य के बागडोरकी संचालक प्रमुख शक्ति परसे एक मधुर अंकुश उठ सा गया। यही कारण है कि प्रमुख पुरुष पर अब अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण भार आ पड़ा है। पहले तो बिगड़ीको बनाने वाला बैठा था। कुछ बिगड़ता दिखता तो प्रत्येक पक्षको साम दाम दण्ड भेदसे समझा बुझा, डरा धमका या मना कर कोई मध्यम मार्ग वह निकाल लेता था फिर भी अपने सिद्धान्तसे कभी झुकता न था।

यही तो उसका लोहपुरुषत्व था। इस समयमें सरदारश्री जैसे निर्भीक दृढ़ और प्रभावशाली नेताकी भारत को अत्यधिक आवश्यकता थी। सरदारके स्थानकी पूर्ति तो हो नहीं सकती। यह क्षति देशके लिए बड़ी गहरी और मर्मान्तक है। ऐसे समयमें देशकी वही दशा हो गई है, जो अनुभवी और बूढ़े किन्तु प्रभावशाली पिताके उठ जाने पर उसकी अनुभव-हीन नवयुक्त सन्तानोंकी हुआ करती है। ऐसे अवसर पर राष्ट्रका कर्तव्य है कि वह अधिक संगठित हो कर कर्मक्षेत्रमें जुट जाय, स्वार्थ और भ्रष्टाचार का समूलोन्मूलन करनेकी प्रतिज्ञा कर ले। ऐसा करने पर ही हम सरदारश्री को सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकेंगे।

श्री जार्ज बर्नार्ड शा—

बर्नार्डशाका स्थान विश्वके वर्तमान प्रमुख साहित्यिकोंमें बहुत ऊंचा है। इस महान् कलाकारका जीवन अत्यन्त सात्विक सादगीपूर्ण और आडम्बर हीन था। साम्प्रदायिक भावसे ऊपर उठा हुआ यह अमर-मानव भारतके प्रति सदैव सानुराग रहा। महात्मा बुद्धकी प्रतिमाको शा सदैव अपने कक्षमें विराजित रखते थे। पक्के वैष्णवकी भांति वे आजन्म निरामिश भोजी रहे। इंग्लैण्डमें रहने वाले किसी व्यक्तिके लिए सदैव शाकाहारी रहना उतना सरल नहीं है जितना कि भारतीयोंके लिए। शा ९६ वर्षकी लम्बी आयुमें मृत्यु समय तक सर्वथा कार्यक्षम और स्वस्थ एवं समर्थ रहे। इससे यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि भारतके बताए हुए सात्विक जीवन और सात्विक निरामिश आहारको अपना लेनेसे मनुष्य सदा स्वस्थ रह कर पूर्णायुः प्राप्त कर सकता है। शाकी इच्छानुसार उनका दाहसंस्कार हो किया गया। शवका दाहसंस्कार भारतीय आर्य सभ्यताकी एक अत्यन्त उपयोगी वैज्ञानिक प्रथा है। इस प्रकार यह विश्व-विख्यात महान् साहित्यकार विश्वभरके प्राणिमात्रके प्रति सहानुभूतिशील होता हुआ भी भारतके प्रति अपनी विशेष रुचि रखता था। अब अपने भौतिकशरीरसे मुक्त हो जानेके पश्चात् भी वे यशः शरीरसे युगयुगान्तरों तक हमारे मध्य वर्तमान रहेंगे। इस युरोपके स्रष्टा महामानवकी साहित्यिक सम्पत्तिके साथ ही साथ अतुल भौतिक सम्पत्ति भी विश्व हितके कार्योंमें प्रयुक्त होती रहेगी ऐसी आशा है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन कोटा—

गत सप्ताहमें अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन राजस्थानके सुन्दर नगर कोटामें सानन्द सम्पन्न हो गया। इस अधिवेशनकी अपनी विशेषता थी। भलाई बुराई सभी दृष्टियोंसे यह सम्मेलन अपनी निराली छटा लिए हुए था। जहां तक स्वागत समितिके कार्योंका और प्रबन्धका सम्बन्ध है, अधिवेशन सफल ही था। समागत अतिथियोंके भोजन, निवास आदिकी व्यवस्था उत्तम थी। विशाल पण्डाल और उसका भव्य द्वार आकर्षक एवं दर्शनीय था। स्वागताध्यक्ष श्री सेठ बुधमलजी बापनाकी विनम्र आतिथ्य-सत्कारकी भावनाका सबके हृदयों पर एक मूक पर गम्भीर और स्थायी प्रभाव पड़ रहा था। यह तो हुई स्वागत समितिके प्रबन्धकी बात, पर जब हम सम्मेलनके कार्य-कलापों पर विचार करते हैं तो लेखनी कुछ विशेष उत्साह और आनन्दका अनुभव नहीं करती। लेखनी कुछ लिखनेसे सकुचाती-सी है। और एक हमारी ही क्यों, हमारे जैसे सभी लेखकों की यही दशा है। बात तो यह है कि कोटामें सम्पन्न हुए इस साहित्यिक मेलेका एक शब्दमें विश्लेषण करना हो तो कह सकते हैं कि यह साहित्यिकोंके दो दलोंका एक अच्छा और निरन्तर चार दिन चलने वाला दंगल था। पर इसमें दोनों पक्ष सम-बल नहीं थे। अतः निर्बल पक्ष या तो प्रायः चुप रहता या झुंझला उठता अथवा विरोध प्रदर्शन करने लगता। तटस्थ प्रतिनिधियोंको इन दोनों पक्षोंके संघर्षसे कोई प्रयोजन न था, अतः वे मन ही मन खिन्न हो रहे थे और कभी-कभी मंच पर आकर अपने खेद-को प्रकट करनेका प्रयत्न भी करते थे, पर वहां सुनता कौन। टण्डनजी आदि अनेक प्रमुख साहित्यिक व नेता तो पहले ही दिन वहांसे प्रस्थान कर गये। सम्मेलनके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री चन्द्रबली पाण्डेय तो विवश होकर फूट-फूटकर रोने तक लगे। इधर इस वर्षके अध्यक्ष महोदय श्री जयचन्द्रजी विद्यालङ्कार भी सम्मेलनकी कार्यवाहीको सुचारु रूपसे चलानेमें विवशसे प्रतीत होते थे। अध्यक्षके भाषणमें पूर्ण सत्यता है। कहीं भी अत्युक्ति

से काम नहीं लिया गया, पर वह अत्यधिक कटु सत्य है।

संक्षेपमें कह सकते हैं कि इस वर्ष कोटामें सम्पन्न हुआ यह हिन्दी साहित्यिकोंका मेला हिन्दी जगत्के सम्मुख बिना कोई विशेष कार्यक्रम रखे सामान्यतापूर्वक समाप्त हो गया। सम्मेलनका स्थान नगरसे दूर होनेके कारण बाहरके प्रतिष्ठित साहित्यिकोंकी तो बात ही क्या नगरके दर्शक भी बहुत कम आ पाए। यहां तक कि श्रीजयप्रकाशनारायणके भाषणमें भी श्रोता मंचके निकट तक ही सीमित थे। दर्शनपरिषद्, विज्ञानपरिषद् आदिमें उपस्थित होने वालोंकी संख्या तो अंगुलियों पर गिनी जा सकती थी। इस प्रकार सम्मेलनका यह कोटा अधिवेशन सम्मेलनकी प्रगतिका सूचक नहीं कहा जा सकता। सम्मेलनके अधिकारियोंका कर्तव्य है कि वे इस वास्तविकताको पहचाने और उसके कारणोंको ढूंढकर उनका निराकरण करनेका प्रयत्न करें अन्यथा राष्ट्रकी यह महान् संस्था अपने महान् कार्यको कैसे सम्पन्न कर सकेगी। सम्मेलनमें शिथिलता आ जानेका अर्थ है हिन्दी जगत्में शैथिल्य। अतः सम्मेलनको सबल बनाये रखना इस समय अत्यन्त आवश्यक है और वह कार्य सम्मेलनके वर्तमान अधिकारियोंके ही हाथोंमें है।

संस्कृतिकी रक्षा कैसे हो ?—

विगत सप्ताहको एक प्रकारसे सांस्कृतिक सप्ताह कह सकते हैं। इसमें अनेक स्थानों पर अनेक अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन सभाएं और आयोजन हुए। राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजीने अनेक आयोजनोंमें भाग लेकर जनताको भारतीय संस्कृतिको अपनाने तथा रक्षा करनेके लिये कहा। भारतीय संस्कृतिकी रक्षा इस समय परमावश्यक है। यह तो ठीक, पर प्रश्न यह है कि उस संस्कृतिकी रक्षाके उपाय क्या हैं? वास्तवमें भाषा-भूषा, आचार-विचार और दर्शन ही तो संस्कृतिके सूचक हैं। अतः जब तक राष्ट्रभाषा हिन्दी और संस्कृतका प्रचार न किया जायगा भारतीय संस्कृतिकी रक्षा हो नहीं सकती। एक ओर तो अंग्रेजीको दिनोंदिन बढ़ाया जा रहा है और दूसरी ओर भारतीय संस्कृतिको अपनानेके लिये कहा जाता है, ये दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं। या यों कहें कि कहा कुछ जाता है और किया कुछ जाता है। कथनी और करनीमें एकता नहीं है। जब तक दोनोंमें एकता न होगी तबतक कोरी बातोंका प्रभाव पड़ेगा नहीं। अतः हमारा निवेदन है कि जो भारतीय संस्कृतिकी रक्षा करना चाहता है उसे सर्वप्रथम अपनी भाषा हिन्दी और संस्कृतको अपनाना चाहिए और साथ ही भारतमाताकी जीवित प्रतिमा गौ माताकी रक्षाके लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिए। बिना भारतकी भाषा और गौमाताकी रक्षाके भारतीय संस्कृति की रक्षा कदापि नहीं हो सकती।

राजस्थानका मन्त्रि-मण्डल—

संयुक्त राजस्थान सरकारमें जबसे शास्त्री-मंत्रिमंडलका निर्माण हुआ तभीसे प्रान्तीय कांग्रेसका उसके प्रति असन्तोष रहा है। मन्त्रिमंडलके प्रति अविश्वासके प्रस्ताव भी कांग्रेसने स्वीकार किये थे। दोनों पक्षोंमें एक लम्बे समय तक रस्साकशी चलती रही। जहां जनता द्वारा निर्वाचित व्यवस्थापिका परिषद् है वहां मन्त्रिमंडलका निर्माण प्रमुख दलके पूर्ण सहयोगसे ही होना चाहिए। पर राजस्थानका मन्त्रिमंडल आरम्भ ही से कांग्रेसका सहयोग प्राप्त न कर सका। यह स्थिति कुछ वांछनीय प्रतीत नहीं होती थी। पिछले दिनों कांग्रेस और प्रधानमन्त्री श्री पं० हीरालालजी शास्त्रीमें विरोधको हटाकर एकताके प्रयत्न हुए। और अब शास्त्रीजीने त्याग-पत्र दे दिया। वहां अभी नवीन मन्त्रिमंडलका निर्माण होनेमें कुछ समय और लग जायगा, आशा है इस बारका मन्त्रिमंडल स्थायी और दृढ़ होगा। उसमें सभी प्रमुख तत्वोंका पूर्ण सहयोग भी वांछनीय है। प्रान्तीय कांग्रेसके अध्यक्ष श्री जयनारायण व्यास एक सुलझे हुए नेता हैं, श्री माणिक्यलालजी वर्मा आदि उनके सहयोगी भी कर्मठ तपी हैं। इन नेताओंके द्वारा निर्मित मन्त्रीमंडलको जनहितको प्रमुख रखना होगा। और ऐसे कार्य कर दिखाने होंगे कि जनताको अधिकसे अधिक सुख सुविधा प्राप्त हो सके। तभी कांग्रेसकी व सरकारकी प्रतिष्ठा स्थिर रह सकेगी।

जीवनका लक्ष्य

[लेखकः— श्री जगदीशचन्द्रजी प्रभाकर]

यम की ही भांति नियमोंकी भी संख्या पांच ही है। योग साधनामें यम नियमोंके पालनका अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके पालनसे ही साधकको एक अनिर्वचनीय शान्तिका अनुभव होने लगता है। योगके शेष अंगोंकी साधना सरल और निर्विघ्न हो जाती है। अतः साधकोंको चाहिए कि यम नियमोंके पालन करनेका भरसक प्रयत्न करें।

नियम पांच हैं :—

(१) शौच, (२) सन्तोष, (३) तपस्, (४) स्वाध्याय (५) ईश्वर प्रणिधान।

(१) शौचः—शौचका शब्दार्थ पवित्रता है। इसके दो भेद हैं (१) बाह्य (२) आभ्यन्तर। (शौचं तु द्विविधं प्रोक्तं बाह्याभ्यन्तरं तथा) बाह्य शौच शरीरको मृत्तिका, गोमय, जल आदिसे पवित्र करना होता है। जिसका प्रचलन जनतामें पाया जाता है। उपवास और शुद्ध सात्विक पदार्थोंका भोजन करना भी बाह्य शौचमें ही माना जाता है। इसके साथ-साथ आभ्यन्तर शौच पर अत्यधिक ध्यान देना वाञ्छनीय है। इसमें सन्देह नहीं कि बाह्य शौच भी मनोवृत्तियोंको एकाग्र करनेमें साधक है पर अधिक कार्य करनेमें आभ्यन्तर शौच ही समर्थ है। आभ्यन्तर शौचमें बाह्य साधनोंकी आवश्यकता नहीं होती। इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि शत्रुओंका इनकी विरोधी वृत्तियों मैत्री, करुणा आदिके द्वारा शमन करना होता है। आभ्यन्तर शौचमें हरिस्मरण अपूर्व बल रखता है :—

"यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।"

शौचसे अपने शरीरके प्रति घृणा हो जाती है। इसके साथ ही अन्य शरीरोंसे भी असंसर्गकी भावना उत्पन्न हो जाती है। मनकी प्रसन्नता एकाग्रता, इन्द्रियजय और आत्मदर्शनकी योग्यता शौच द्वारा प्राप्त हो जाती है। फिर यह विचार उत्पन्न हो जाता है। यथा —

विष्ठादि नरकं घोरं भगं च परि निर्मितम्।
किमु पश्यसि रे चित्त ! कथं तत्रैव धावसि॥
(अवधूत गीता)

शौचात्स्वाङ्ग जुगुप्सा परैरसंसर्गः।
सत्त्व शुद्धि सौमनस्यैकाग्र्येन्द्रिय-
जयात्मदर्शन योग्यत्वानि च॥
(यो० २।४०, ४१)

(२) सन्तोष :— विकारसमूहोंकी जड़ कामना है। यदि व्यक्ति कामनासे मुक्त हो जाय तो वही वास्तवमें सुखी कहलानेका अधिकारी है और वास्तविक स्थायी सुखका अनुभव भी वही कर सकता है। कामना जैसे जीवके शत्रु पर जय प्राप्त करनेकी क्षमता है तो वह सन्तोषमें। किसी वस्तुको प्राप्त करनेकी कामना उत्पन्न होती है और उसकी प्राप्तिके लिए मनुष्य कामान्ध होकर प्रत्येक उचित अनुचित साधनोंका सहारा लेता है उसमें गुरुजनोंका अपमान, विश्वासघात, झूठ, मित्रद्रोहका होना भी सम्भव हो सकता है। यदि कामना पूरी हो जाय तो कामाग्नि उससे भी अधिक प्राप्तिके लिए प्रचण्ड हो जाती है। यदि असफलता हो जाय तो विघ्न उपस्थित करने वाले जीवोंके प्रति क्रोध उत्पन्न होना स्वाभाविक है। लोभ तो इसकी जड़में रहता ही है। सफलता होने पर मद और मात्सर्यका साम्राज्य भी अवश्यम्भावी है। बुद्धि नष्ट होकर जीवको पतन प्राप्त होता है और इससे कल्याण से विपरीत दिशामें अग्रसर होने लग जाता है। तो इस भीषण शत्रुको शमन करनेकी क्षमता 'संतोष' ही में पाई जाती है। एक हिन्दी कवि भी कहते हैं :—

"जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समान।"

साधारण रूपसे जीवन यापनके अर्थ सामग्री प्राप्त होने पर ही तृप्त हो जाना चाहिए। आवश्यकताओंको घटाते जाना ही सन्तोषका साधन है। इससे अनुपम सुखकी प्राप्ति होती है। यथा :—

'सन्तोषादनुत्तमः सुखलाभः।'
(यो० २।४२।)

(३) तप :— शीत, उष्ण, भूख, प्यास, सुख दुखादि द्वन्द्व हैं, इनका सहन करते हुए नियमित और संयम पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए यही तप है। तपको तीन भागोंमें इस प्रकार विभक्त कर सकते हैं :— (१) शारीरिक तप (२) वांग्मयतप और (३) मानसिक तप। अपनेसे बड़ों अर्थात् गुरुजनोंकी सेवा सत्कार, ब्रह्मचर्य, अहिंसाका पालन और चान्द्रायण व्रतादि का अनुसन्धान शारीरिक तप है। मितभाषण, सद्ग्रन्थोंका स्वाध्याय, सत्य बोलना आदि वांग्मय तपके अन्तर्गत आ जाता है। और मौनता तथा आत्मनिग्रह आदि तीसरे (मानसिक) तपमें कहने चाहिएं। मेरी मतिमें कृच्छ चान्द्रायण आदि व्रतोंका अनुसंधान आधुनिक भोजन व्यवस्थाको दृष्टिमें रखकर करना लाभदायक होनेके विपरीत हानिकारक सिद्ध हो सकता है, कारण कि शरीरोंमें उतनी भी सहन-शक्ति आजकल नहीं पाई जाती जितनी कि २०, २५ वर्ष पूर्व थी। इसलिए सप्ताहमें एक व्रत रख लेना ही पर्याप्त होगा और यह अजीर्णादि रोगोंका निवारण करेगा। इसके अतिरिक्त जो कार्य गत कालोंमें चान्द्रायण आदि व्रत करते थे वही साप्ताहिक उपवास इस भीषणतम कालमें कर सकता है।

तपसे अशुद्धिका क्षय होकर काया और इन्द्रियकी सिद्धि प्राप्त होती है। यथा :—

"कायेन्द्रिय सिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः।"
(यो० २।४३)

(४) नियमोंका चौथा अंग 'स्वाध्याय' है। मोक्षशास्त्रोंका अथवा ईश्वर सम्बन्धी ग्रन्थोंका पठन, श्रवण, संशय रहित मनन करना चाहिए और उन बातोंको अपने जीवनमें धारण करनेका प्रयत्न भी साथ-साथ करते रहना चाहिए। प्रणवमंत्र (ॐ कार) का जप अथवा किसी अन्य शास्त्रोक्त या किसी योग्य गुरु द्वारा दिया हुआ मंत्रका जप करना चाहिए। ॐकारका जप सर्वश्रेष्ठ है। यह योग शक्तियोंको जागृत करता है और निष्काम भाव का भी प्रतिपादन करता है। मुखसे मन्त्रोच्चारण करना इतना उपयोगी नहीं जितना मन द्वारा जाप करना। कारण कि मन ही चंचलता प्राप्त करके अवनति देता है और यही सीधे मार्ग पर चलने पर मुक्त भी कर देता है। अतः इसीका सुधार वांछनीय है। जप करनेका इसीको अवसर देना चाहिए — इसे ही साधु बनाना अभीष्ट है। अतः मानसिक जप ही अधिक उपयोगी है। इसके पश्चात् स्वतः मनका स्वभाव बन जायगा और सोते-बैठते खाते-पीते जप होता ही रहेगा, बुद्धि निर्मलताको प्राप्त हो जाएगी। इन्द्रियां जो इसीके अंकुशके नीचे रहती है शान्ति प्राप्त करेंगी। वही अवस्था प्राप्त हो जायगी जैसा कि सुनते हैं :—

"राम हमारा जप करे और हम बैठे आराम।"

स्वाध्याय द्वारा जिसका ऊपर वर्णन हुआ है, इष्ट देवताके दर्शन प्राप्त होते हैं। यथा

स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः। (यो० २।४४)

(५) पांचवां नियम 'ईश्वर प्रणिधान' प्रमुख है। (अर्थात् सब कार्यों को ईश्वर के अर्पण करनेकी बुद्धि से करना)। कर्म जो भी किया जाय, और उसका फल परमपिता ईश्वरके अर्पण कर दिया जाय। निष्काम भाव से अहंता रहित होकर सब सांसारिक व्यापार चलते रहें। इससे चित्तमें अनिवर्चनीय शान्ति और आनन्दकी अनुभूति होगी। प्रभुका अनन्य (तैल धारावत्) जप होगा। इस नियमका पालन समाधि अवस्थाको प्राप्त करा देता है।

समाधिसिद्धिरीश्वरप्राणिधानात्। (यो० २।४५)

जो आनन्द इसके द्वारा प्राप्त होता है वह जो अनुभव करता है वही जानता है। योगमार्गमें उपस्थित होने वाले विघ्न स्वतः इस नियमके पालनसे नष्टभ्रष्ट हो जाते हैं। यदि आवें भी तो केवल दर्शनमात्र करानेके

लिए। ऐसे साधकके साधनकी चिन्ता साधकको नहीं अपितु परम गुरु (ईश्वर) को स्वयं होती है। उसके यन्त्रको चलाने वाली विशेष रूपमें वही शक्ति होती है जिसने अर्जुनका रथ चलाकर उसे जय प्राप्त कराई। ऐसा साधक इस लिए असफल नहीं होता कि वह करता सभी कुछ उसी मायापतिके सहारेसे हैं। इस साधनामें 'अहं' और 'मम' शब्दोंका अभाव-सा प्रतीत होने लगता है और समय आने पर समाप्त ही हो जाता है।

(३) आसन

आसनकी साधना भी यम नियमके साथ ही साथ करते रहना चाहिए।

आसन किसे कहते हैं? 'स्थिरसुखमासनम्।'
(पातञ्जल० साधनपाद ४६)

आसन वही श्रेयस्कर हैं जिसमें शरीर स्थिर रहे अर्थात् हिलेजुले नहीं, शरीरको किसी प्रकारका कष्ट अनुभव न हो। योगशास्त्रमें अनेक आसनोंका उल्लेख आता है, परन्तु सिद्धासन और पद्मासन सर्वश्रेष्ठ हैं। सिद्धासन करनेकी क्रिया गोरक्ष मतानुससार इस प्रकार है:—

योनिस्थानकमङ्घ्रिमूलघटितं कृत्वा दृढं विन्यसेत्।
मेढ्रे पादमथैकमेव हृदये कृत्वा समं विग्रहम्॥
स्थाणुः संयमितेन्द्रियोऽचलदृशा पश्यन्भ्रुवोरन्तरं।
चैतन्याख्यकपाटभेदजनकं सिद्धासनं प्रोच्यते॥
(गोरक्षसंहिता ११)

अर्थात् बाएं पैरकी एड़ीसे गुदा और मूत्रेन्द्रियके बीचके भागको दबाकर और दूसरे पैरसे मेढ़ू देशको आबद्ध करके ठोढीको जमावे। देहको सीधा रखे अर्थात् मेरु दण्ड (रीढ़की हड्डी) सीधा रहे। ध्यान भ्रूमध्यमें करे और निश्चल भावसे बैठे। यह सिद्धासनकी क्रिया है।

इस आसनसे सब प्रकारके अनिष्ट दूर होते हैं। मूलाधार या गणेश चक्रकी साधना भी इसे ही कह सकते हैं। जिस प्रकार गणेशजीका पूजन विघ्न विनाशक है, उसी प्रकार यह आसन विघ्न दूर करता है। पाठक गणेश पूजनका रहस्य समझ गए होंगे। इस आसनसे कुण्डलिनी शक्तिके जाग्रत होनेसे सहायता मिलती है और वायुका पथ सरल हो जाने के कारण सफलता शीघ्र मिलनेकी सम्भावना होती है।

दूसरा आसन पद्मासन दो प्रकारका है। मुक्त और बद्ध! उसकी क्रिया गोरक्षसंहितामें इस प्रकार दी है—

वामोरुपरि दक्षिणं हि चरणं संस्थाप्य वामं तथा।
दक्षोरुपरि चैव बन्धनविधिं धृत्वा कराभ्यां दृढम्॥
तत्पृष्ठे हृदये निधाय चिबुकं नासाग्रमालोकयेद्।
एतद् व्याधिविकार नाशनकरं पद्मासनं प्रोच्यते॥
(गोरक्ष संहिता १२)

"बाएं चरणको दाहिनी जंघा पर और दाहिने चरणको बाईं जन्घा पर रखकर दोनों हाथों को पीठकी ओरसे घुमाकर बांये हाथ से बाएं पैरका और दाहिने हाथसे दाहिने पैरका अंगूठा पकड़ना चाहिए। ठोढीको छातीसे लगाकर नाक की नोक पर दृष्टि रखें। यह आसन व्याधि और विकारों को नाश करने वाला 'बद्ध पद्मासन' है। इसी प्रकार यदि अंगूठे न पकड़े जायं और हाथ घुटनों पर चित रक्खे जायं तो मुक्त पद्मासन कहलाता है। इस आसनसे (बद्धसे) आलस्य दूर होता है और कुण्डलिनी चैतन्य होती है।

अनुभव——

उपरोक्त आसन लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसमें दृष्टि नासिकाके अग्रभाग पर न भी जमाई जाय तो भी ठीक है। रहस्य इस आसनमें यह है कि नेत्र ही मनकी चञ्चलताके द्योतक और प्रतिपादक हैं। इसीलिए साधन ग्रंथोंमें नेत्रोंको निश्चल करनेकी आज्ञा दी है। नेत्रोंके निश्चल होनेसे मन निश्चल हो जाता है। इस आसनमें पैरके अंगूठे पकड़े जानसे दृष्टि दो या तीन मिनटमें ही निश्चल हो जाती है और मनकी संकल्प उठानेकी क्रिया शांत हो जाती है। क्योंकि पैरके अंगूठोंमें वह नस समाप्त होती है जिसका नेत्रोंसे क्रमशः सीधा सम्बन्ध है। जब अंगूठे खिंचते हैं तो किञ्चित् पीड़ा अवश्य होती है पर मन निश्चल करने की अद्भुत विधि है। दूसरे इस आसन में मेरुदण्ड स्वतः सीधा रहता है। इसलिए यह आसन अनुभवमें ठीक बैठा है। यदि भजन करते २ आलस्य

आ जाय तो दो-चार मिनट यह आसन करलो,आलस्य या निद्रा भाग जाते हैं। मेरे विचारमें यह आसन अच्छा रहेगा। बाकी आसन वही अच्छा है जिससे मनुष्य पर्याप्त समय तक आरामसे बैठा रहे। आसन एक ही अपनाना चाहिए। अधिक आसनोंमें भटकना ठीक नहीं।

बद्धपद्मासन ५ मिनट करनेके बाद मुक्त अवस्थामें बैठे रहो। यदि मनमें चंचलता प्रतीत हो फिर बद्ध कर लो।

आसनकी सिद्धि कमसे कम ३ घण्टे ३६ मिनट और अधिकसे अधिक ४ घण्टे ४८ मिनट तक एक ही स्थितिमें बैठने से होती है।

आसन सिद्धिके लिए सहायक उपाय यह है कि हृदयमें अथवा सिर पर शेषनागका ध्यान किया जाय। ऐसा पातञ्जलि का मत है।

अन्य प्रान्तोंमें शीर्षासनको भी किया जाता है। पर उनमें पूजन, अर्चन, जप आदि क्रियाएं होनी मुश्किल हैं। अन्य आसनोंको समय-समय पर रोग चिकित्सा रूपमें कर लिया जाय तो हानि नहीं। जैसे उदर सम्बन्धी रोगोंके लिए चक्रासन अच्छा है।

क्रिया——

पैरोंके बल बैठ जाओ। बायां हाथ पीछे दो फीटके अन्तर पर भूमि पर रखो। फिर दाहिने हाथको ऊपरसे घुमाकर बाएं हाथके पास रख दो, इस प्रकारसे शरीर धनुष आकारमें आ जाएगा। पेटकी नसें खिंच जाएंगी पेटके रोगोंको शान्त करनेका अद्भुत आसन है। इसे प्रातः शौच जानेके पश्चात् दो मिनट कर लेना पर्याप्त है।

—★—

श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्

[अवलोककः— श्री रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न]

'श्रीराष्ट्रालोकके' मङ्गलाचरणपरक प्रथमश्लोकमें यह बतलाया जा चुका है कि राष्ट्र और राष्ट्रिय क्या हैं? तथा इस ग्रन्थ निर्माण का क्या प्रयोजन है। यह पहले कहा गया है कि ग्रन्थ निर्माण ऐसे समयमें हुआ है जब कि राष्ट्र परतन्त्र था। इसी की झलक आगे के श्लोक—

'समभ्यस्यन् ग्रन्थमिममाचरंश्च प्रचारयन्।
राष्ट्रविज्ञानकुशलः स्वातन्त्र्यं प्राप्स्यति ध्रुवम् ॥१०७॥'

तथा—

'दुष्टाराष्ट्रियपारतन्त्र्यनिगडच्छेदेन तोषावहो
राष्ट्रालोक उदार बुद्धिविषयः स्वातन्त्र्यदीक्षागुरुः।
............................" ॥१०८॥

आदिमें पाई जाती है;किन्तु इस ग्रन्थमें कुछ ऐसी मूल भूत बातें निहित हैं, जो आर्य प्रकृतिके प्रत्येक राष्ट्रके लिये चाहे वह स्वतन्त्र हो, अथवा परतन्त्र, सब काल और परिस्थितियोंमें समुन्नतिके हेतु सहायक हो सकती हैं।

अब अनुबन्ध चतुष्टयके रूपमें द्वितीय कारिकाका सन्निवेश इस प्रकार किया गया है—

'राष्ट्रदृष्टिं नमस्यामो राष्ट्रमङ्गलकारिणीम्।
यया विना न पश्यन्ति राष्ट्रं स्वनिकटस्थितम् ॥२॥

इसका अर्थ इस प्रकार है :—

राष्ट्रका मङ्गल करने वाली राष्ट्र दृष्टिको हम नमस्कार करते हैं। जिस राष्ट्र दृष्टिके बिना अपने पास ही रहने वाले भी राष्ट्रको नहीं देखते हैं ॥२॥(प्रकाशित अनुवादसे)

अर्थ वैसे तो सीधा साधा है, पर कम चक्करदार भी नहीं है। सबसे पहले पाठक को जो भ्रममें डालने वाली बात है वह 'राष्ट्र दृष्टि' है। राष्ट्रकी दृष्टि क्या? राष्ट्र एक अचेतन पदार्थ है, वह दृष्टि तो रख ही नहीं सकता क्योंकि नेत्राभाव हेतु विद्यमान है, फिर राष्ट्रका लक्षण भी 'समानसंस्कृतिमतां यावती पितृपुण्यभूः' के अनुसार ऐसा है जिसका दृष्टिसे कोई सम्बन्ध जुड़ता प्रतीत नहीं

होता। ऐसी स्थितिमें स्वाभाविक यह भ्रम ही हो जाता है कि राष्ट्र दृष्टि क्या और उसके लिये नमन किया जाना कैसा ? प्रत्येक राष्ट्रमें मुख्यतः जो वस्तु आधार भूत होती है वह राष्ट्रकी शक्ति होती है। फिर क्या कारण है जो राष्ट्रके इस मूल सिद्धान्तभूत ग्रन्थरत्नमें प्रारम्भमें राष्ट्र शक्तिको नमस्कार न कर राष्ट्र दृष्टिको किया गया है। ऐसी शंका स्वभावतः जिज्ञासु पाठकके मनमें उत्पन्न होती है। किन्तु इसके लिये पूर्वापर सम्बन्ध मिलाना पड़ेगा। राष्ट्र दृष्टिका वास्तविक अभिप्राय जाननेके लिये श्रीराष्ट्रालोकके ८, ९, और दसवें श्लोकको इससे सम्बन्धित करना होगा। श्रीराष्ट्रालोकके ८, ९, १० श्लोकमें राष्ट्र दृष्टिका वर्णन इस रूपमें हुआ है :—

दरिद्रास्ते ऽति दुर्भाग्या रोगैस्ते समभिप्लुताः।
येषां नराणां सा राष्ट्रहितदृष्टिर्नविद्यते ॥८॥
मानवानां कुले जन्म लब्ध्वा यैरर्जिता न हि।
राष्ट्रदृष्टिः पुच्छहीनाः कोलास्ते गूथभक्षिणः ॥९॥
ग्रस्तं राष्ट्रग्रहपतिं दुष्टाऽराष्ट्रिय राहुणा।
राष्ट्रदृष्टिविहीनास्तु कथं पश्यन्तु कौशिकाः ॥१०॥

इन श्लोकों पर तो विशेष विचार यथा समय किया जायगा किन्तु इससे यह विदित हो जाता है कि राष्ट्र दृष्टिसे क्या तात्पर्य है ? अर्थात् राष्ट्रके प्रति राष्ट्रियोंकी जो हित कामना है वही राष्ट्र दृष्टि है। इस पर विचार करनेसे पूर्व जरा राष्ट्रशक्ति शब्द पर और विचार करें कि यह राष्ट्रालोकमें कहां आया है—

'स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव कदाचिदपि लभ्यते।
योगक्षेमसमर्थैका राष्ट्रशक्तिः प्रभाविनी ॥८२॥
राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीस्तथा राष्ट्रसरस्वती।
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्षप्रदायिनी ॥८३॥'

अर्थात् भिक्षा मांगनेसे कभी स्वतंत्रता नहीं मिलती। राष्ट्रशक्ति ही योग क्षेम प्राप्तिमें केवल समर्थ होती है। राष्ट्रशक्तिसे आशय राष्ट्रकी तीन शक्तियों राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मी और राष्ट्रसरस्वतीसे है। व्यावहारिक शब्दों में कहा जाय तो सैन्यशक्ति, धनशक्ति और ज्ञानशक्ति का सम्मिलित रूप ही राष्ट्रशक्ति है। जिस राष्ट्रमें जितनी मात्रामें इन शक्तियोंका प्रादुर्भाव विकास होता है उतनी ही मात्रामें वह राष्ट्र उन्नत होता है। किंतु ये शक्तियां भी स्वतः प्रकट नहीं होती न हो सकती ही हैं। इनका भी उद्गम स्थान जैसे महाकाल्यादि तीनों देवियोंका महाशक्तिरूप स्वयम्भू ज्योतिर्बिन्दु है वैसे ही इनका भी कोई न कोई महाशक्ति हमें मानना पड़ेगा। अर्थात् सैन्य, धन और ज्ञानका विकास जनमें ही तो होता है, और जनोंका समूह ही राष्ट्र है। अतः राष्ट्रशक्ति पदका अर्थ 'राष्ट्रालोक' की भाषामें राष्ट्रकी जनशक्ति रूपमें ठहरता है। वैसे राष्ट्रशक्ति शब्द एक अर्थबहुल शब्द है और और इसमें सब प्रकार की शक्तियोंका समावेश हो जाता है, किंतु ग्रन्थकारको राष्ट्रकी जिस मूल शक्तिसे प्रयोजन है और जिसकी ओर वे सङ्केत करना चाहते हैं उसकी झलक 'राष्ट्रशक्ति' शब्दसे सहसा नहीं प्रतीत होती—इसलिए मङ्गलाचरणमें इस व्यापक शब्दको छोड़कर ग्रन्थकारने 'राष्ट्रदृष्टि' शब्द लिया है। राष्ट्र दृष्टि क्या है? राष्ट्रके प्रति राष्ट्रियोंकी वह अमिट अटूट उत्कट भावना है जिसके कारण राष्ट्रिय राष्ट्र पर स्वकीय सर्वस्व समर्पण करते हैं। राष्ट्रको गुरु आचार्य और पितासे अधिक वन्दनीय मानते हैं। जिस भावनाके कारण राष्ट्र पर बलिदान होते हैं वह भावना 'राष्ट्र-दृष्टि' है और राष्ट्रकी सर्वाधिक सम्मुन्नतिके लिए वही भावना सर्वोपरि होना नितान्त आवश्यक है। इसी हेतु दूसरी कारिकामें आया है 'राष्ट्रदृष्टिं नमस्यामः' अर्थात् हम राष्ट्रदृष्टिको नमस्कार करते हैं। इससे भी पूर्व ग्रन्थके आमुखमें एक श्लोक है:—

'ऐन्द्रीं भूतिं नित्यां दत्त्वा शौक्लीं कीर्तिं विस्तार्यैषा।
शक्तिं सौरीं पूर्तिं नीत्वा राष्ट्रं गौरीदृङ् नः पायात् ॥'

अर्थात् यह गौरी दृष्टि (भगवती विज्ञान रूपा सरस्वतीकी ज्योति) हमारे राष्ट्रमें सम्पत्तियां नित्य देती हुई शुभ्र कीर्तिका विस्तार करती हुई, सूर्यकी भांति राष्ट्रको वर्चस्वी बनाती हुई, राष्ट्रकी रक्षा करे।

इस श्लोकमें भी गौरीदृष्टिका वन्दन किया गया है, जिससे भली भांति सिद्ध होता है कि ग्रन्थकारकी दृष्टिके प्रति कितनी श्रद्धा है। विश्वमें सदसद्विवेकमें दृष्टि अत्यन्त सहायक होती है। वेदादि शास्त्रोंमें सदसद्विवेचनपरा

दृष्टिकी महिमा भली भांति वर्णित है। दृष्टिके बिना व्यावहारिकतामें भी कोई काम नहीं चल सकता। फिर राष्ट्रियकी सबसे अधिक महत्त्व शाली वस्तु राष्ट्रके प्रति दृष्टि ही हो सकती है जिसके द्वारा राष्ट्रका अन्तर्बाह्यरूपसे दर्शन कर सर्वविध समुन्नतिकी सम्भावना हो सकती है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि सर्व प्रथम राष्ट्रकी आन्तरिक और बाह्य दशाका अध्ययन कर राष्ट्रका स्वरूप चिन्तन करना चाहिए। बिना राष्ट्रकी देखभाल किये समुन्नति हो ही नहीं सकती। ऊपर राष्ट्रशक्ति शब्द से राष्ट्रकी जनशक्ति भाव ध्वनित किया गया है किंतु राष्ट्रको उन्नत बनानेमें सर्व प्रथम उस शक्तिकी आवश्यकता होती है जिससे राष्ट्रके सम्पूर्ण स्वरूपका पहले ज्ञान हो। अतः ऐसी मूल शक्ति को सर्वप्रथम नमन करना समुचित ही है।

राष्ट्र और राष्ट्रिय एक ही वस्तु हैं, या राष्ट्रियोंका सर्वस्व राष्ट्र ही होता है, उसे वे प्राणाधिक प्रिय मानते हैं। 'राष्ट्रदृष्टि' शब्दसे राष्ट्रिय भावनाका भी ध्वनन होता है अतः इसका अर्थ राष्ट्र-भावनाको प्रणाम करना है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रके प्रति दृष्टि या भावना राष्ट्रियोंके बिना हो नहीं सकती। क्योंकि कार्य कारण बिना सिद्ध नहीं हो सकता। और राष्ट्रियएवं राष्ट्र दृष्टिमें आधाराधेय सम्बन्ध भी है, फलतः राष्ट्रदृष्टि नमनका आशय राष्ट्रदृष्टिके आधारभूत राष्ट्रियपुरुषोंके नमनमें परिणत भी हो जाता है। जो ग्रन्थके मङ्गलमें विशेष वैचित्र्य प्रस्तुत करता है। राष्ट्रदृष्टि शब्दसे श्री आचार्यचरण जहां यह सूचित करते हैं कि राष्ट्रकी उन्नतिके अभिलाषुकोंमें राष्ट्र के प्रति अटूट निष्ठा आवश्यक है वहां राष्ट्रियोंका स्मरण और वन्दन भी कर लेते हैं। कितने सुन्दर ढंगसे राष्ट्रिय पुरुषोंका जिन्होंने राष्ट्रकी सेवामें सर्वस्व समर्पण किया है, अभिनन्दन हो गया है। वास्तव में यह ग्रन्थ सूत्र रूपमें है और अत्यन्त गूढ़ है, अतः विस्तारमें न कर बीजरूपमें ही सब बातें दी गई हैं, तथा राष्ट्रके सर्वस्व समर्पण करने वालोंके प्रति श्रद्धा प्रदर्शन भी उसी रूपमें किया गया है। राष्ट्रवादमें न तो व्यक्ति पूजाको स्थान ही है और न यह ग्रन्थ किसी राष्ट्र-विशेषके लिये लिखा ही गया है; अतः नाम सङ्केतादि करना अभिप्रेत कैसे हो? अतएव ग्रन्थ लेखन परम्परा की परिपाटीका निर्वाह भी इस एक शब्दसे ही हो गया है। अतः राष्ट्रदृष्टि रूपी कल्याणकारिणी राष्ट्रभावनाके बिना राष्ट्रको निकट होते हुए भी नहीं देखा जा सकता यह कथन यथार्थ है। हम राष्ट्रमें रहते हैं और भी रहते हैं किन्तु आत्माकी भांति राष्ट्रके स्वरूपको भलाभांति कितने देखने आते हैं? जब तक हममें आत्मदर्शनकी भांति राष्ट्रदर्शन क्षमता नहीं आती तब तक हम सच्चे राष्ट्रीय नहीं हो सकते—यह इस द्वितीय श्लोकका सन्देश है। और ऐसी राष्ट्रदृष्टि एवं राष्ट्रद्रष्टा ही वन्दनीय हैं यह भी भलीभांति विदित होता है। आचार्यचरण के इस अनुपम भाव - गाम्भीर्य और उदाराशयता को समक्ष सोच कर अत्यन्त चकित चमत्कृत होना पड़ता है। और कहना पड़ता है :—

'कथं स्वल्पमतिर्गच्छेत् पारं ग्रन्थमहोदधेः ॥'

★

शिशिर

[लेखकः— श्री नन्द चतुर्वेदी]

झोंपरी पर हैं वस्त्र अङ्ग हू न ओढवे, उनसों कहेंका हाय! महल विशालाकों।
थर-थर कांपत करे जो शीत ब्यार लागे, कहिये तिन्हें हा! कहा रेशमी दुशालाकों॥
'नन्द' जिन्हें जनम निकारिबो भयो है भार, कहत लगे हा लाज प्याला मधुशालाकों।
दीजे रंगशाला रतिशालाको हवाला कहा, बिलखत जो हैं आज एक ही निवालाकों॥

★

भारतीय सभ्यतामें नारी

[ले०— कविराज श्री पं० नन्दकिशोरजी आयुर्वेदाचार्य]

[गताङ्कसे आगे]

पतिकुलमें स्त्रीका अधिकार वा कर्त्तव्य —

पतिगृहमें स्त्री पतिकी अनुमतिसे प्रत्येक काम करती थी। परस्पर शुद्ध प्रेम होनेके कारण दोनोंके विचार समान ही होते थे :—

अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत्।
शौचे धर्मे चान्नपंक्त्यां पारिणाह्यस्य चेक्षणे।
(मनु० ९।११)

पति, धन या गृहोपयोगी वस्तुएं एकत्रित करने, व्यय करनेमें, घर वस्त्र आदिको स्वच्छ और पवित्र रखनेमें, धार्मिक आचारमें, रसोई बनानेमें, घरके उपकरणोंकी देख-भाल करनेमें पत्नीको नियुक्त करे। वात्स्यायन मुनिजीने इस विषयको जिस सुन्दरतासे बतलाया है वह नीचे दिखाते हैं :—

"भार्यैकचारिणी गूढ विश्रम्भा
देववत्पतिमानुकूल्येन वर्तेत।"

स्त्री विश्वासपूर्वक पतिको इष्टदेवता समझकर, उसकी इच्छानुसार बर्ताव करे।

"तन्मतेव कुटुम्बचिन्ता मात्मनि संनिवेशयेत्"

पतिकी अनुमतिसे कुटुम्ब सम्बन्धी व्यवहारको अपने हाथमें रखे।

"वेश्म च शुचि सुसंमृष्टस्थानविरचित विविध कुसुमं संश्लक्ष्णभूमितलं हृद्यदर्शनं त्रिषवणाचरितबलिकर्मपूजितदेवतायतनं कुर्यात"

घरको पवित्र रखे, स्वच्छ उचित स्थानों पर पुष्प बिखेर देवे, गृहभूमिको मृदु रखे, घरके देखनेसे ही मन प्रसन्न हो जाये, तीनों काल बलि देवे, और देवगृह (ठाकुर रखनेका स्थान) को सुन्दर बनाये रखे।

"गुरुषु मंत्रवश्येषु भृत्यवर्गेषु, नायकभगिनीषु, तत्पतिषु च यथाऽर्हं प्रतिपत्तिः।"

श्वसुर आदि पूज्यवर्ग, दासगण, ननद और ननदका पति इन सबका यथोचित सम्मान करे।

"परिपूतेषु हरितशाक वप्रा निक्षुस्तम्बाञ्जीरक सर्षपाजमोद शतपुष्पा तमालगुल्मांश्च कारयेत्"

पवित्र भूमियोंमें धनिया, अदरक, पालक आदि शाकोंकी क्यारियें, गन्नेके स्तंब, जीरा, सरसों, अजमोद, सौंफ तथा तमाल (एक सुगन्धित द्रव्य) के पौदे लगवायें।

"कुब्जकामलक मल्लिकाजाती कुरंटक नवमालिका तगर नन्द्यावर्त जपागुल्मानन्यांश्च बहुपुष्पान्वालकोशीरक पातालिकांश्च वृक्षवाटिकायां च स्थंडिलानि मनोज्ञानि कारयेत्" मध्ये कूपं वापिकां दीर्घिकां वा खानयेत्"

कुब्जाफुल्ल, आमलकी, मालती, चमेली कुरंटक नवमालिका तगर नन्दी आवर्तकी, जपा पुष्प प्रभृति तथा अन्य भांति-भांतिके फूल लगवाये, खसकी क्यारियें तथा वृक्षवाटिकामें सुन्दर-सुन्दर स्थंडिल (बैठनेके लिये) बनवाये और पुष्पवाटिकाके मध्यभागमें कुआं, वापी या दीर्घिका (पोखरका भेद) पुष्प सींचनेके लिये बनवाये।

"भिक्षुकी श्रमणाक्षपणा कुलटा कुहकेक्षणिका
मूलकारिकाभिर्न संसृज्येत"

भीख मांगने वाली सन्यासिनी दुष्टचरित्रा कौतुक दिखाने वाली प्रश्न बताने वाली और वशीकरण आदिके प्रयोग करने वाली स्त्रीसे मेलजोल न रखे।

"भोजने रुचितमिदमस्मै द्वेष्यमिदम्पथ्यमिद-मपथ्यमिद मितिच विद्यात् त्यागोपादानार्थम्"

भोजनमें यह वस्तु पतिको भाती है और यह अच्छी नहीं लगती, अमुक वस्तु इसे पथ्य है और अमुक अपथ्य, यह बातें जान रखे बनाने वा न बनाने के लिये।

"स्वरं बहिरुपश्रुता भवन मागच्छतः
किं कृत्यमिति ब्रुवती सज्जा भवन मध्ये तिष्ठेत्"
"परिचारिकामपनुद्य स्वयं पादौ प्रक्षालयेत्"

घरके भीतर आ रहे पतिके शब्दको पहिचान कर आदिष्ट होने वाले कार्यको करनेके लिये प्रस्तुत होकर आंगन में ठहरे।

दासी को हटाकर स्वयं पतिके पांव धोवे।

"नायकस्य च न विमुक्तभूषणं विजने संदर्शने तिष्ठेत्"

मलिन या दुर्वेष पहिनकर एकान्तमें कभी भी पतिके सामने न आवे।

"अतिव्ययमसद्व्ययं वा कुर्वाणं रहसि बोधयेत्"

अधिक व्यय या अनुचित व्यय करते हुए पतिको एकान्तमें समझावे।

"आवाहे विवाहे यज्ञे गमने सखीभिः
सह गोष्ठीं देवताभिगमनमित्यनुज्ञाता कुर्यात्"
"सर्वक्रीड़ासु च तदानुलोम्येन प्रवृत्तिः"

कन्या वा वरके घर, यज्ञ आदि उत्सवमें, सहेलियों के प्रीति भोजनमें तथा देवदर्शनके लिये पतिकी आज्ञा लेकर जावे और इसी प्रकार अन्य उत्सव क्रीडाओंमें पतिकी अनुमतिसे ही जावे।

"पश्चात् संवेशनं पूर्वमुत्थानमनवबोधनं च सुप्तस्य"

पतिके सो जानेके अनन्तर स्वयं सोये और पतिके जागनेसे पहिले जागे।

"महानसं च सुगुप्तं स्याद्दर्शनीयं च"

पाकशाला सुरक्षित और रमणीक बनाये रखे।

"नायकापचारेषु किंचित्कलुषिता नात्यर्थं निर्वदेत्"

पतिसे अपराध हो जाने पर भी उससे अतिविवाद (झगड़ा) न करे।

"दुर्व्याहृतं दुर्निरीक्षितमन्यतो मंत्रणं द्वारदेशाव-स्थानं निरीक्षणं वा निष्कुटेषु मंत्रणं विविक्तेषु चिर-मवस्थानमिति वर्जयेत्"

पतिसे कठोर भाषण करना, प्रेमरहित दृष्टिसे उसे देखना, बातचीतके समय अपनी दृष्टि इधर-उधर रखना, गृहद्वारमें बैठना तथा वहांसे बाहिर झांकना, पुष्पवाटिकामें जाकर दूसरी स्त्रियोंसे गुप्त बातचीत करना, एकान्त स्थानोंमें बहुत समय तक बैठे रहना, प्रभृति कार्य स्त्रीको नहीं करने चाहियें।

"स्वेद दन्तपंक दुर्गन्धांश्चबुध्येतेति विराग कारणम्"

पसीना, दांतोंका मैल तथा दूसरी दुर्गन्ध वाली वस्तुओंसे शरीर स्वच्छ रखे।

"बहुभूषणं विविध कुसुमानुलेपनं विविधांगराग समुज्वलं वास इत्यभिगामिको वेषः" "प्रतनुश्लक्ष्णाल्पदुकूलता परिमितमाभरणं सुगन्धिता नात्युल्वणमालेपनं तथा शुक्लान्यन्यानि पुष्पाणीति वैहारिकोवेषः"

अनेक प्रकारके गहने पहिनना, भिन्न-भिन्न प्रकारके पुष्प मालाएं और माथे पर चन्दन वा कुंकम, सीमन्त प्रदेशमें सिंदूर रेखा, ओष्ठ, कपोल, लोचन, हाथ, पांव, नखादि पर मेंहदी, काजल तथा अन्य रंजक द्रव्य लगाना, यह सभी कुछ रहसि होना चाहिए।

पतले नर्म तथा हलके वस्त्र, सौभाग्य प्रदर्शक गिने-चुने भूषण, दुर्गन्धका न होना, साधारण तिलक, तथा श्वेत पुष्प मालायें, कौमुदी उत्सव आदि में विहार के समय पहनने चाहिएं।

"नायकस्य व्रतमुपवासं च स्वयमपि करणेनानुवर्तेत। वारितायां च नाहमत्र निर्बन्धनीया—इति तद्वचसो निवर्तनम्"

पति जिन जिन नियमोंका पालन और जिन जिन एकादशी आदिके उपवासोंको स्वयं करता हो उन्हें स्त्री करे। यदि पति उसे ऐसा करनेसे रोके तो "आप मुझे इन बातोंसे न रोका करें" ऐसा कहकर उससे अनुमति प्राप्त कर लेवें।

"मृद्विदल काष्ठ चर्म लोह भांडानां च काले समर्घग्रहणम्"

मिट्टीके घड़ा आदि, विदलभांड टोकरा पटारी आदि, लकड़ीके डिब्बे तथा पीढ़ी, पलंग आदिका सामान, कुरसियें आदि चर्मकी वस्तुयें और गागर गड़वो प्रभृति धातुओंसे बने भांडोंको जब जब वह थोड़े मूल्योंमें विकते हों खरीद लेवे।

"तथा लवणस्नेहयोश्च गंधद्रव्य कटुक भांडौषधानां च दुर्लभानां भवनेषु प्रच्छन्नं निधानम्"

"मूलकालुक पालंकी ...... प्रभृतीनां सर्वौषधीनां च बीजग्रहणं काले वापश्च"

लवण, घी, तैल तथा हींग, जीरा आदि सुगन्धित द्रव्य—मरिच आदि कड़वी चीजें और दूसरे दुर्लभ भांडे वा औषधियें सावधानीसे घरमें रखें। मूली, आलू, पालक आदि शाकोंके बीज संग्रह करे और उचित ऋतु कालमें बो देवे।

"स्वयं च सारस्य परेभ्यो नाख्याने भर्तृमंत्रितस्यच"

पतिके साथ की हुई सलाहको तथा अपनी धनराशिको दूसरोंको न बतलाये।

"सांवत्सरिकमायं संख्याय तदनुरूपं व्ययं कुर्यात्"

वार्षिक आयको देखकर उसके अनुसार ही व्यय करे।

"भोजना वशिष्टाद्गोरसात् सार ग्रहणं तथा तैल गुडयोः कर्पासस्य च सूत्रकर्तनं, सूत्रस्यवानं, शिक्यरज्जु-पाश वल्कल संग्रहणं, कुट्टन कण्डनावेक्षणम्, आचाममण्ड तुषकण कुठ्यंगाराणामुपयोजनम्, भृत्य वेतन भरणज्ञानं कृषि पशुपालन चिन्तावाहन विधान योगाः, मेष कुक्कुट लावक शारिका परभृत मयूर वानर मृगाणामवेक्षणम्, दैवसिकायव्यय पिण्डीकरणमिति च विद्यात्"

भोजनसे शेष बचे हुए दूधसे तथा तिल और गन्नोंसे घी, तैल, गुड़ संगृहीत करे। कपास कात कर सूत बनाये तथा बुने, छिका, रस्सियें, पशु बांधनेके लिये रस्से, और सन आदिकी छालका संग्रह करे, धान कूटे, टुकड़ोंको पृथक् करे, मंड, धानोंके तुष, चावलोंकी कणियें, चावलोंका पराग, कोयले इनका उचित उपयोग करे। भृत्योंका वेतन तथा उनके पालनादिमें जो व्यय हो उसका ज्ञान रखे। खेतीका समय पर बोवे वा कटवाये, घोड़े आदि सवारीकी वस्तुओंकी देखभाल करे। मेष, कुक्कुट, बटेर, मैना, कोयल, मोर, बानर और हरिण पालित जीवोंकी सावधानता से सर्वथा रक्षा करे। दैनिक आय व्ययकी जांच करे।

"तज्जघन्यानां च जीर्ण वाससां सञ्चय स्तैर्विविध रागैः शुद्धैर्वा कृतकर्मणां परिचारकाणामनुग्रहो मानार्थेषु च दानमन्यत्र वोपयोगः"

पुराने, पहिने हुए कपड़ोंको एकत्रित रखे, उन्हें रंग कर या वैसे ही काम करने वाले लोगोंको देवे या किसी भृत्य आदिको संतुष्ट करनेके लिए वह कपड़े देवे अथवा किसी दूसरे उपयोगमें लावे।

"नायकमित्राणां च स्रगनुलेपन ताम्बूल दानैः पूजनं न्यायतः"

घरमें आये पतिके मित्रोंका पुष्प चन्दन पान सुपारी से यथोचित सम्मान करे।

"श्वश्रू श्वशुर परिचर्या तत्पारतंत्र्यमनुत्तर वादिता परिमिताप्रचंडालापकरणमनुच्चैर्हासः" "तत्प्रियाप्रियेषु स्वप्रियाप्रियेष्विव वृत्तिः"

सास ससुरकी सेवा करे, उनकी आज्ञाका पालन करे, उनसे विवाद न करे, उनसे थोड़ा और नम्रता पूर्वक वार्तालाप करे, उनके सामने जोरसे न हंसे। उनकी प्रिय वस्तुमें अपनी प्रिय वस्तु तथा उनकी अप्रिय वस्तुमें अपनी अप्रिय वस्तुकी भांति व्यवहार करे।

"भोगेष्वनुत्सेकः परिजने दाक्षिण्यम्, नायकस्यानिवेद्य न कस्मैचिद्दानम्, स्व कर्मसु भृत्यजननियमनमुत्सवेषु चास्य पूजनमित्येकचारिणीवृत्तम्"

भोग्य पदार्थोंसे अधिक लगाव न रखे। परिवारमें धीरता, उदारता कार्य कुशलता आदिको व्यवहार द्वारा प्रकट करती रहा करे। पति या घरका जो प्रमुख व्यक्ति हो उसकी आज्ञाके बिना किसीको कोई वस्तु न देवे भृत्योंको उनके अपने २ कामोंमें लगाये। उत्सवोंके दिन वस्त्र-भोजन वा द्रव्य देकर उनका सत्कार करे, यह स्त्रीका साधारण कर्त्तव्य है॥

यदि पति विदेशमें हो तो कुछ नीचे लिखे अनुसार रहन सहनमें परिवर्त्तन हो जाता है।

"प्रवासे च मङ्गल मात्राभरण देवतोपवासपरा वार्तायां स्थिता गृहानवेक्षेत। 'शय्या च गुरुजन मूले, तदभिमता कार्य निष्पत्तिः। नायकाभिमतानां चार्थाना मर्जने प्रति संस्कारे च यत्नः। नित्य नैमित्तिकेषु कर्मसूचितो व्ययः॥ तदारब्धानां च कर्मणां समापने मतिः। ज्ञाति कुलस्यानभिगमनमन्यत्र व्यसनोत्सवाभ्याम्। तत्रापि नायक परिजनाधिष्ठिताया नातिकालमवस्थानमपरिवर्तित प्रवास वेषत्ता च। गुरुजनानुज्ञातानां करणमुपवासानाम्। "परिचारकैः शुचिभिराज्ञाधिष्ठितैरनुमतेन क्रय-विक्रय कर्मणा सारस्यापूरणं तनूकरणं च शक्त्या व्ययानाम् आगते प्रकृतिस्थाया एव प्रथमतो दर्शनं दैवत पूजन मुपहाराणां चाहरणमिति प्रवासचर्या॥

प्रवासकाल [जब पति घरसे बाहिर गया हुआ हो] में केवलमात्र सौभाग्यवती दिखाने वाले गिने चुने गहने पहिने पतिको मङ्गलकामनासे देवताओंके व्रत पूजनादि करे पतिके कुशलसमाचार सुननेको उत्सुक रहा करे और इसलिए लोगोंसे पूछताछ किया करे। रातको सास जेठानी आदि गुरुजनोंके समीप सोना चाहिए। उनके बताये कार्यको करे। पतिके अभिलषित द्रव्योंको इकट्ठा करे और उनकी देखभाल करती रहे। दैनिक कार्योंमें तथा उत्सवादि नैमित्तिक कार्योंमें देश-काल वा अपनी स्थिति अनुसार उचित व्यय करे। पतिने यदि कोई गृह बनवाना वाटिका लगवानी वा अपना कोई दूसरा काम प्रारम्भ किया हो तो उसको पूरा करनेका ध्यान रखे। इत्सव (विवाह आदि) और व्यसन (मरण या कोई विपत्ति) के बिना पिताके घर न जाये। और वहां पर भी पतिगृह से कोई व्यक्ति साथ लेकर जावे तथा बहुत दिन तक पिताके घर न ठहरे और प्रवासके वेषको न बदले॥ सास ससुर आदिकी अनुमतिसे ही व्रत उपवास करे। सदाचार तथा आज्ञा पालन करने वाले भृत्यों द्वारा उचित क्रय-विक्रय करके धनको बढ़ावे और यथा सम्भव व्ययको घटाये। जब लौट कर पति घर आवे तो पहिले प्रवास कालिक वेष में ही उसके सम्मुख जावे और देवताओंको पूजा भेंट चढ़ावे। यह प्रवास चर्या है॥

ऊपर संक्षेपसे भारतीय सभ्यतामें नारीका रहन सहन अधिकार और कर्तव्य दिखाया है, इन सभी बातोंके चिन्ह आज भी प्रत्येक घरमें देखे जा सकते हैं और जिन परिवारोंमें पूर्णतया भारतीयत्व है वहां यह सभी कुछ पूरा पूरा देखा जा सकता है।

क्या भारतीय सभ्यतावलम्बी परिवारोंमें स्त्रियें दुःखी रहती हैं ?

आजकल कई लोगोंके मनमें यह भ्रान्त धारणा फैली हुई है कि हिन्दु परिवारोंमें स्त्रियें दुःखमय जीवन व्यतीत करतीं हैं, अर्थात् पुरुष उन्हें बहुत दुःख देते हैं परन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं है (भारतीय समाजमें नारी का अधिकार क्या है अथवा उसे सुखी जीवन बितानेके लिये कहां तक स्वतन्त्रता है यह ऊपर बता दिया गया है) आओ जरा इसपर विचार करें कि भ्रांत धारणा कैसे फैली—वास्तवमें भारतवर्षमें कुछ ऐसे परिवार हैं जो कि नाम मात्रसे ही भारतीय हैं। जिन्होंने भारतीय जीवन निर्वाह प्रणालीको सर्वथा भुला दिया या दासता-निर्धनता आदि दोषोंने जिन्हें भारतीय सभ्यतासे दूर कर दिया है, उन्हीं परिवारोंमें स्त्रियोंको दुःख उठाना पड़ता है और उन्हें जो दुःख होता है वह पुरुषोंके कारणसे नहीं अपितु स्त्रियोंकी ओरसे ही अधिकतर होता है।

हमारे घरोंमें कुछ कुरीतियें घुस आई थीं जिनसे सास ननद आदि यही समझने लगीं थीं कि नवागत वधू पर शासन करना ही हमारा कर्त्तव्य है। इनको उचित या अनुचित ढंगसे डांटते ही रहना चाहिए, यह नवोढ़ा स्त्रियें निडर हो जायेंगी आदि २। मैं सौ बातकी एक ही बात कह देता हूं कि यदि आप सौ दुःखित हिन्दु नारीकी जांच करें तो आपको प्रतीत होगा कि इनमेंसे अधिकतर ऐसी ही हैं जो कि सास-ननद-जेठानी या देवराणी आदिके द्वारा ही दुःख उठाती हैं। यदि श्वशुर जेठ देवर आदिसे इन्हें कोई दुःख मिले तभी पुरुष समाज को दोषी ठहराया जा सकता है। स्त्री समाजका अपराध पुरुषों पर डालना न्याय नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ वर्षोंसे लेकर आजतक कई भारतीय स्त्रियों पर अत्याचार होते चले आरहे हैं परन्तु इसका कारण यही है कि भारतीयोंने जबसे भारतीय सभ्यताको छोड़ना

प्रारम्भ किया है तभीसे यह अत्याचारका प्रवाह चला है और जब भारतीय जनता अपनी पुरातन भारतीय सभ्यताको अपना लेगी तब फिर यही स्त्री समाज पूर्ववत् भारतीय भूमिको स्वर्ग सदन बना देगा।

यहां एक बात यह भी स्मरण रखनी चाहिए कि इस अत्याचारका ढिंढोरा किसने पीटा? जब स्वार्थी विदेशी लोग भारतमें आये तब इन्होंने अपने समाजसे भिन्न जो भी रीति या रहन सहनकी पद्धति हमारे समाज में प्रचलित देखी उसे दूषित ठहराना प्रारम्भ किया। स्त्री समाजके विषयमें भी ऐसा ही हुआ, इन्होंने पितृकुलमें शिक्षित कन्याको मूर्ख ही समझा, चाहे वह गृहोपयोगी प्रत्येक कार्यमें पूर्णदक्ष थी। क्योंकि इनके दृष्टिकोणमें स्कूलमें जाकर सार्टिफिकेट प्राप्त करना ही शिक्षिताका चिन्ह है, चाहे उसे घरका साधारण सा भी कार्य न आता हो। परन्तु हमारी दृष्टिमें शिक्षा और साक्षरता दो वस्तुएं हैं। निरक्षर व्यक्ति भी शिक्षित हो सकता है, और साक्षर व्यक्ति भी मूर्ख हो सकता है। "पुस्तकसे अच्छे या बुरे पाठको पढ़ सकना साक्षरता है, परन्तु अच्छी बातोंको चाहे पढ़ी हों या देखी सुनी हों, अपने जीवनके व्यवहार में प्रयुक्त करना ही शिक्षा है"।

इसी प्रकार ईसाई धर्मप्रचारकोंने हमारे समाजमें पतिके परलोक जाने पर ब्रह्मचर्य्य पालन करती हुई तथा स्वेच्छासे सात्विक जीवन बिताने वाली स्त्रियोंको दुःखी समझ लिया। क्योंकि इनकी सभ्यता ही भोग प्रधान है, और इन्होंने जनताकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये इन बातोंको तोड़ फोड़ कर या घटाबढ़ा कर लोगोंके सामने रखा। भोला समाज बहुत अंशमें इनके जालमें फंस गया, और ईसाई सभ्यताके रंगमें रंजित होकर और भी दुःखी हो गया।

आज भी जिन परिवारोंमें भारतीय सभ्यताका प्रचार है वहां स्त्रियों पर कोई अत्याचार या उनसे कोई दुर्व्यवहार नहीं होता और वे परिवार विदेशी सभ्यतावलम्बी परिवारोंसे अधिक सुखी हैं।

भारतीय प्रणालीसे शिक्षित देवियोंने कई बार अपने सच्चरित्रोंके प्रभावसे अपने देशके मस्तकको उन्नत करके उच्चादर्शके शिखर पर पहुँचाया है, जिनमेंसे कुछ देवियों का उदाहरण रूपमें केवल दिग्दर्शन-मात्र ही कराया जाता है:—

ब्रह्मविद्यामें प्रेम—मैत्रेयीजीने ऋषि याज्ञवल्क्यजीसे ब्रह्म विद्याकी जिज्ञासासे ही विवाह किया था। उन्होंने गृहस्थाश्रम छोड़ते समय जब अपनी सम्पत्तिका आधा भाग उसे दिखाया, तब वह बोली "येनाहं नामृतास्यां किमहं तेन कुर्याम्" अर्थात् जिस वस्तुसे मैं अमर न बन सकूं उस सम्पत्तिको लेकरमैं क्या करूं। और अपने भागकी सम्पत्ति त्याग कर ब्रह्मविद्याका उपदेश सुना। इससे दो बातोंका पता चलता है कि भारतीय सभ्यतानुगामिनी बालाएं गुरुकुलमें पढ़ने न जाती थी, अतएव मैत्रेयी देवी ब्रह्मविद्या प्राप्त करनेके लिये शिष्यरूपसे ऋषिके पास न आई, अपितु विवाह कर लिया। दूसरी यह कि ब्रह्मज्ञान विषयिणी जिज्ञासा भारतीय स्त्रियोंमें उत्कट होती चली आई है। महारानी मदालसाने भी अलर्क प्रभृति अपने पुत्रोंको स्वयमेव ब्रह्मज्ञानका उपदेश दिया था।

शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान —

सुविख्यात महाकवि कालिदासजीकी पत्नी इतनी विदुषी थी, कि कोई बड़ेसे बड़ा विद्वान् भी शास्त्र चर्चा में उसे परास्त न कर सका था। इसी प्रकार पण्डित मण्डन मिश्रकी स्त्री भारती देवी जी दर्शन आदि शास्त्रों में तत्कालीन विद्वानोंसे कहीं बढ़ी चढ़ी थीं।

युद्ध विद्या —

महाराणी कैकेयी युद्धविद्यामें पूर्णतया निपुण थीं, और कई बार महाराज दशरथके साथ रणांगण में गईं।

महाराणी झांसीका आधुनिक ज्वलन्त उदाहरण भी हमारे सामने ही है, जिन्होंने दोनों हाथोंसे चन्द्रहास चालन के चमत्कारसे शत्रु दलमें चकाचौंध उत्पन्न कर दिया था। इसी प्रकार यवन साम्राज्य कालमें अनेक वीरांगनाओंने रणांगणमें जा जाकर शत्रुदलका दमन किया था।

चित्रकारी —

चित्रकलामें निपुण होनेके कारण कई स्त्रियें चित्रलेखा नामसे प्रसिद्ध हो चुकी हैं। ऊषाकी एक सखी भी इसी प्रकारकी चित्रलेखा थी। जब ऊषा स्वप्न में अनिरुद्धको देखकर उस पर अनुरक्त हो गई तब चित्र-

लेखाने तत्कालीन कई राजाओंके चित्र बना कर उषा को दिखाये तो कई चित्र देखती २ उसने अपने प्राणनाथ को पहिचाना। थोड़ेसे समयमें ही कई एक चित्र खींच डालना क्या साधारण जानकारी हो सकती है ?

शिक्षकरूप में —

महाराणी मदालसाका वर्णन ऊपर आ चुका है, इस देवीने अपने कई पुत्रोंको ब्रह्मविद्या तथा एक पुत्रको राजनीति निपुण बनाया था। आधुनिक समय में भी छत्रपति शिवाजीको जो कुछ भारतीय सभ्यतासे प्रेम–आर्यत्वका अभिमान देश प्रेम तथा आर्य इतिहास का ज्ञान हुआ था वह सभी कुछ उनकी माता छतराबाई की दी हुई शिक्षाका ही फल था।

आयुर्वेदका ज्ञान —

कई देवियें चिकित्सिक रूपसे भी प्रसिद्धि पा चुकी हैं। आज भी "तारा मंडूर" प्रभृति औषधियें उनके नामसे ही प्रसिद्ध हैं॥

गणित —

कहते हैं कि भास्कराचार्यजीने लीलावतीको भी गणित शास्त्र स्वयं ही पढ़ाया था और उसीकी स्मृति "लीलावती" नाम गणित पुस्तक आज तक करा रही हैं। इस बातका इतिहास साक्षी है कि उपर्युक्त देवियोंने उपर्युक्त विद्यायें किसी भी स्कूल कालिज या वेद–दर्शन शाला, मिलिटरी स्कूल आदिमें नहीं पाई थीं। अपितु पितृकुलमें या किसी २ ने पतिकुलमें सभी विषय भारतीय शिक्षा पद्धति द्वारा पढ़े थे। परन्तु ऐसा होने पर भी उनमें उन उन विषयोंकी कोई न्यूनता नहीं थी।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवरणसे स्पष्ट होता है कि संसार भरकी सभी प्रचलित सभ्यताओंमेंसे भारतीय सभ्यता में "नारी जगत्" को अत्यन्त सम्मानित स्थान प्राप्त है और इसी सभ्यताके प्रचार द्वारा नारी जगतको पूर्ववत् ऊंचा उठाया जा सकता है। आज तक भारतीय सभ्यताकी रक्षा करनेमें भी भारतीय नारियोंने विशेष भाग लिया है। और मुझे विश्वास है कि भविष्यमें भी हमारी मातायें अपने अनजान पुत्रोंके अपराध भुलाकर भारतीयताकी रक्षा करती रहेंगी।

कैसे लाज करैं ?

इनसौं लाज करै री ! कैसे ?
जैसे ये बाहिर ठाढ़े हैं भीतर हूं ये तैसे॥
जा पटसौं निज अंग दुरावौ तहं हू रहत सदाई।
हियमें बसि विचार सब हियके जानत कुंवर कन्हाई॥
स्नान करिय, यमुनामें जो सखि रहत जमुन जल मांय।
पवन, प्रकाश, अकाश, अवनि जल सब थल रह्यो समाय॥
ढूंढि ढूंढि हारी सारे जग, उन बिन थल न लहीजै।
'चन्द्रकला' अब सब नन्द-सुवन सौं कैसे लाज करीजै॥

पौराणिक उपाख्यान—

सत्यवादी चाण्डाल

[अनुवादक—श्री पं० गोविन्ददासजी 'सन्त' धर्मशास्त्री]

[ब्रह्मपुराणकी इस कथामें 'श्रीस्वाध्याय'के गताङ्कमें यह बात आ चुकी है कि एक चाण्डाल एकादशीका उपवास करता था और उस दिन देव मन्दिरके नीचे जाकर जागरण किया करता था, एवं भगवान्की सेवामें पहुंचानेके लिए जंगलमेंसे पुष्प चुन लाता था। एक दिन जब रात्रिमें पुष्प लेने गया तो शिप्रानदीके तट पर एक बहेड़ेके वृक्षमें रहने वाले ब्रह्मराक्षसने उसे पकड़ कर खा जाना चाहा। चाण्डाल किसी प्रकार शपथ (सौगंद) खाकर मन्दिरके नीचे आया और लोगोंके मना करने पर भी सवेरे ही ब्रह्मराक्षसके पास पहुंच गया। ब्रह्मराक्षसने उससे कहा कि 'मैं तुझे छोड़ देता हूँ, तू मुझे आजकी रात्रिके जागरण का फल देकर इस योनिसे छुड़ा दे' चाण्डाल जब रात्रिके जागरणका फल देनेको तैयार न हुआ तो उसने कहा कि 'यदि समग्र रात्रिका फल नहीं तो रात्रिके अन्तमें जो भजन तूने गाया उसीका फल मुझे दे दे।' इसके बाद जो चाण्डाल और ब्रह्मराक्षसका सम्वाद हुआ वह कथा नीचे दी जा रही है। — सम्पादक]

चण्डालने पूछा—हे ब्रह्मराक्षस, तुमने पूर्वजन्ममें ऐसा क्या बुरा कर्म किया था, जिस दोषसमूहसे तुम्हें ब्रह्मराक्षस होना पड़ा।

व्यासजी कहते हैं—चण्डालके यह वचन सुनकर ब्रह्मराक्षसको अपने किये हुएकी याद आई और दुःखसे सन्तप्त होकर उसने चण्डालसे कहना आरम्भ किया।

ब्रह्मराक्षस कहने लगा—सुनिए। पूर्वजन्ममें मैं कौन था और मैंने क्या पाप किया जिसके करनेसे मैं इस राक्षस की पाप योनिको प्राप्त हुआ।

पूर्वजन्ममें मैं सोमशर्मा नामक ब्राह्मण था। मेरे पिताका नाम देवशर्मा था। वे विधिपूर्वक यज्ञ करने वाले और अध्ययनशील थे। मैं न तो श्रौतसूत्र (जिनमें यज्ञ करनेकी विधि लिखी रहती है) जानता था, न मन्त्रोंको ही जानता था। इतने पर भी लोभ और मोहसे पीड़ित होकर राजाके यज्ञकर्ममें प्रवृत्त हुआ और राजाने मुझे उस यज्ञमें 'आग्नीध्र' बनाया। जब राजाका यज्ञ समाप्त हुआ तब मूर्खताके कारण दम्भ (ढोंग) करके मैंने द्वादशाह महासत्रका अनुष्ठान आरम्भ किया, जब वह महायज्ञ चल रहा था तब मेरे उदरशूल (पेटका दर्द) हुआ। उस उदरशूलके कारण यज्ञ समाप्त होनेके पूर्व ही दश रात्रिके बाद जब रुद्रकी आहुति दी जा रही थी और राक्षसवेला थी तब मैं मरा और इसी दोषसे ब्रह्मराक्षस हुआ।

मूर्खेण मन्त्रहीनेन सूत्रस्वरविवर्जितम् ॥
अजानता यज्ञविद्यां यदिष्टं याजितं च यत्।
तेन कर्मविपाकेन संभूतो ब्रह्मराक्षसः ॥

मैं मूर्ख था, मन्त्रसे हीन था, यज्ञविद्याको जानता नहीं था, अतः सूत्र और स्वरसे रहित जो यज्ञ किया और करवाया उस कर्मके फलसे मैं ब्रह्मराक्षस हुआ।

इसलिए पापके महासमुद्रमें डूबे हुए मेरा तुम उद्धार करो और एकादशीके जागरणमें गाये हुए सबसे पिछले एक भजनका फल मुझे दान करो।

व्यासजी कहते हैं—चाण्डालने उससे कहा कि यदि तू प्राणियोंको मारना छोड़ दे तो मैं तुझे सबसे पिछले भजनका फल दे सकता हूं।

ब्रह्मराक्षसने 'हां' कहा, तब चाण्डालने उसको

सम्बोधन करके एक घड़ी जागरणका और भजनका फल दिया। उस भजनका फल देनेके बाद ब्रह्मराक्षसने चण्डाल को प्रणाम किया और प्रसन्न होकर पृथूदक नामक श्रेष्ठ तीर्थमें चला गया। वहां निराहार रहनेका संकल्प करके उसने प्राण छोड़ दिए और उस भजनके फलके कारण राक्षस योनिसे छूट गया। उस तीर्थके प्रभावसे दुर्लभ ब्रह्मलोकमें निर्भय होकर दश हजार वर्ष तक रहा और उसके बाद बड़ा बुद्धिमान् और सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (सब शास्त्रोंका जानने वाला) ब्राह्मण हुआ। जिसका चरित्र मैं बादमें कहूंगा। अब उस चण्डालकी शेष कथाको मैं तुमसे कहता हूं, सुनो।

राक्षसके चले जाने पर बुद्धिमान् तथा आत्माको वशमें रखने वाले उस चाण्डालको ब्राह्मणका चरित्र सुनकर वैराग्य उत्पन्न हुआ। पवित्र तो वह था ही; उसने अपनी स्त्रीको पुत्रोंके सुपुर्द किया और पृथ्वी-प्रदक्षिणा करना आरम्भ किया। कोकामुख नामक तीर्थसे आरम्भ करके स्वामी कार्तिकके स्थान तक पहुँचा। स्वामी कार्तिकके दर्शन करनेके बाद धाराचक्र की प्रदक्षिणा की। फिर वहां से पर्वतोंमें श्रेष्ठ विंध्याचल पर आया। वहांसे पापमोचन नामक तीर्थमें पहुंचा। उस चाण्डालने वहां पर बड़ी श्रद्धासे पापोंसे मुक्त होनेके लिये स्नान किया। उस स्नानसे उसके सब पाप निवृत्त हो गये और उसको अपने पूर्वजन्मों का स्मरण हो आया।

वह चण्डाल पूर्वजन्ममें एक भिक्षुक (सन्यासी) था। मन और वाणी को पूरी तरह वश में रखता था। शरीर भी उसका बड़ा नियम से युक्त था। था भी बुद्धिमान् और वेद वेदाङ्गोंमें पारङ्गत, किन्तु एकबार ऐसा हुआ कि कुछ चोर नगरसे गायें चुराकर ले जा रहे थे। उस समय धकापेलमें उसकी भिक्षा धूलमें गिर पड़ी। संन्यासीने वही भिक्षा खाली। उस अधर्मके दोषसे वह चण्डाल योनि को प्राप्त हुआ।

फिर पापमोचन तीर्थमें स्नान करके वह पापमोचन तीर्थमें ही नर्मदा नदीके तट पर मरा। बादमें काशीजी में जन्म लेकर एक मूर्ख ब्राह्मण हुआ। तीस वर्षके बाद उसे एक सिद्ध पुरुष प्राप्त हुआ। सिद्ध पुरुषका रूप बहुत ही बुरा था, किन्तु था वह बड़ा योगी। उसको देखकर मूर्ख ब्राह्मणने उसकी हंसी करनेके लिए उसके चरण छूकर कहा—हे सिद्ध पुरुष! कुशल तो हैं; तुम कहां से आ रहे हो?

यह पूछने पर सिद्ध पुरुषने समझा कि इसने मुझे जान लिया है। इसलिए उसने कहा कि मैं स्वर्गसे आ रहा हूं। मूर्खने कहा—क्या तुम उर्वशी अप्सराको जानते हो? सिद्धने कहा— हां जानता हूं। वह इन्द्रके चंवर डुलाती है और स्वर्गका भूषण रूप है। ब्राह्मण दुष्ट था। इसलिए उसने सिद्धसे कहा— मित्र, उर्वशीसे मेरी बात कह देना। वह जो कुछ जवाब दे वह मुझसे आ कहना। सिद्धने कहा बहुत अच्छा। यह सुनकर ब्राह्मण बड़ा प्रसन्न हुआ।

सिद्ध फिरते-फिरते सुमेरु पर्वत पर सुरालयमें पहुँचा और उसने उर्वशीसे कहा, जैसा कि उस मूर्ख ब्राह्मणने उससे कहा था।

उर्वशीने कहा— मैं काशीके किसी ब्राह्मणको नहीं जानती। यह कहने पर सिद्ध फिर काशीमें आया। काशी में उस मूर्खने फिर पूछा कि उर्वशीने तुम्हें क्या कहा? सिद्धने कहा— उसने कहा कि मैं तो तुम्हें नहीं जानती। सिद्धका वचन सुनकर मूर्ख मुस्कराने लगा और कहा अब के जाओ तो उर्वशीसे पूछना कि तुम कैसे जान सकती हो। सिद्धने कहा — बहुत अच्छा।

सिद्ध फिर स्वर्गमें गया तो इन्द्रके भवनसे निकलते हुए उर्वशीसे यह बात कही। उर्वशीने कहा— यदि वह कुछ नियम रखे तो मैं उसे जान सकती हूं। सिद्ध पुरुषने आकर उसे यह बात कह दी। मूर्खने कहा— आजसे मैं यह नियम करता हूं कि 'गाड़ा कभी नहीं खाऊंगा' सिद्धने यह बात उर्वशीको सुना दी। उर्वशीने कहा— मैंने उसे पहचान लिया। वह मजाक करने वाला कोई मूर्ख है।

इसके बाद एकबार ऐसा हुआ कि सुन्दरी उर्वशी मत्स्योदरी नदी पर स्नान करनेके लिए गई थी। उसके स्नान करते समय अकस्मात् वह मूर्ख भी वहां पहुंच गया। उर्वशीको देखकर उसे काम-बाधा हुई और अनेक प्रकारकी चेष्टाएं करने लगा। उर्वशीने सिद्धके

बताए हुए उस मूर्खको पहिचान लिया। वह मुस्करा कर कहने लगी— हे महाभाग ! मुझसे तुम क्या चाहते हो। मैं तुम्हारा बचन करूंगी। तुमको विश्वास रखना चाहिए। मूर्खने कहा— हे शुचिस्मिते ! तुम आत्मदान करके मेरे प्राणोंकी रक्षा करो।

उर्वशीने ब्राह्मणसे कहा—मैं इस समय नियम पालन कर रही हूं। तुम थोड़ी प्रतीक्षा करो। ब्राह्मणने कहा—अच्छा में ठहरा हुआ हूं। उर्वशी स्वर्गमें चली गई। एक महीनेमें लौटी। उसने आकर देखा कि ब्राह्मण बहुत दुबला हो गया है और एक महीनेसे निराहार नदीके तट पर बैठा हुआ है। उसको इतना दृढ़ निश्चयी देखकर उर्वशी ने एक वृद्ध स्त्रीका रूप धारण किया और नदीके तट पर एक खांड, घी और शहदका गाढ़ा बनाया। उस ब्राह्मण को उसने बुला कर कहा— देव ! मैंने सौभाग्यके लिए एक व्रत किया था। आज उस व्रतकी समाप्ति है, इस लिए दान करना चाहती हूं, तुम लो। ब्राह्मणने कहा तुम यह खांडकी चीज क्या दे रही हो ! मेरा कंठ तो भूखसे सूख रहा है इसलिए मैं तुमसे पूछता हूं। उर्वशीने कहा, आटे और खांडका बना गाढ़ा है, इसे लेकर तुम अपनी भूख मिटाओ। यह सुन कर वह अपने नियमको याद करके बोला— हे भद्रे ! मैंने एक सिद्ध पुरुषके सामने यह नियम किया है कि 'मैं गाढ़ा नहीं खाऊंगा' जिससे कि उर्वशी मुझे पहिचान सके। तुम यह गाढ़ा किसी दूसरेको दे दो।

उर्वशीने कहा—हे भद्र ! तुमने तो लकड़ीके गाढ़ेका नियम किया है, यह तो लकड़ीका गाढ़ा है नहीं, आटे और खांडका है। तुम भूखे हो इसलिए इसे खालो।

ब्राह्मणने कहा— हे भद्रे ! मैंने अपने नियममें केवल गाढ़ा शब्द ही कहा था। उसके साथ कोई विशेषण नहीं लगाया था।

उर्वशीने कहा—यदि तुम नहीं खाते हो तो इसे घर ले जाओ तुम्हारा कुटुम्ब खा लेगा !

ब्राह्मणने कहा— हे सुमति, मैं तब तक घर नहीं जाऊंगा जब तक सुन्दरी उर्वशी वापिस न लौटेगी। मैंने काम पीड़ित होकर उससे प्रार्थना की थी, तब उसने कहा तुम ठहरो। आज एक महीना हो गया। उसके संगमके लिए मैं सत्य पर आरूढ़ हूं।

उसका यह वचन सुनकर उर्वशीने अपना उत्तम रूप धारण किया और हंस कर कहने लगी— ब्राह्मण ! तुमने स्थिरचित्तसे मेरा दर्शन चाहनेके लिए हठसे व्रत किया है। मैं उर्वशी हूं। तुम्हारी परीक्षा लेने आई हूं। मैंने तुम्हारी परीक्षा कर ली। तुम सचमुच सच्चे तपस्वी और ऋषि हो। तुम सूकर क्षेत्रमें रूपतीर्थ नामक स्थानमें जाओ। वहां तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी और तुम मुझसे मिलोगे।

इसके बाद वह ब्राह्मण रूपतीर्थमें गया। वहां शांति पूर्वक नियम धारण करके रहने लगा। देह छूटने पर गन्धर्व लोकमें गया। बादमें एक अच्छे कुलमें प्रजा पालक राजा हुआ और विविध यज्ञ किये। अन्तमें पुत्रों पर राज्य भार डाल करके फिर रूपतीर्थमें देह त्याग किया और इन्द्रलोकमें गया। तदनन्तर प्रतिष्ठानपुरमें बुधका पुत्र पुरूरवा हुआ, जहां उसे उर्वशीका समागम प्राप्त हुआ।

★★

गद्य काव्य

[श्रीमती शकुन्तला कुमारी 'रेणु']

प्रेम ही तेरी उच्चतम अभिव्यक्ति है देव ! — किन्तु विश्व-वासना उसे कलुषित कर ही देती है।
समर्पण ही तेरी अनन्य भक्ति है देव ! — किन्तु धर्मका आडम्बर उसे दूषित कर ही देता है।
सान्निध्य ही तेरी धन्यतम कृपा है देव ! — किन्तु व्यर्थ अभिमान उसे हेय बना ही देता है

कुण्डलीमेलनपर एक दृष्टि

[लेखकः — श्रीनन्दकिशोर 'गर्ग']

[गताङ्क से आगे]

ग्रहसे तात्पर्य यहां चन्द्रलग्नाधिपतिसे है। वर व कन्या दोनोंके चन्द्र लग्नेश लेकर उनका शत्रु, मित्र अथवा सम भाव है यह देख कर विचार किया जाता है। किन्हीं भी प्राणियोंमें शत्रुता अथवा मैत्री प्रतिकूल अथवा अनुकूल विचारधाराकेअनुसार होती है। अत: इस कूटका प्रधान उद्देश्य वरकन्याकी मानसिक गतिकी परीक्षा करना है,क्योंकि सुखी जीवन बनानेकेलिये अथवा प्रेममें स्थायित्वके लिये जीवन साथियोंके विचारोंमें अनुकूलता होना आवश्यक है। ग्रहों के मैत्री-चक्र तो शास्त्रीय पुस्तकोंमें अथवा साधारण पंचांगोंमें भी दिये रहते हैं। यदि वर कन्याके राशि-स्वामियोंमें नैसर्गिक मैत्री तथा तात्कालिक मैत्री दोनों ही हो तो अति उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त एक मित्र एक सम; दोनों सम, एक सम, एक शत्रु क्रमसे बल एवं शुभत्वमें कम होते जाते हैं। दोनों ही परस्पर शत्रु भाव रखते हों तो कूट निर्बल होता है। परन्तु इस प्रकारका शत्रु भाव हो तो और भी सूक्ष्मतासे चन्द्र स्थित नवांशके स्वामियोंको भी नैसर्गिक एवं तात्कालिक दोनों मैत्रीके अनुसार देख लेना चाहिये। यदि सभी अशुभ हों तो संबन्धकी अनुमति नहीं दी जा सकती।

राशियोंके पश्चात् नक्षत्र परसे विचार होता है। राशिकी अपेक्षा नक्षत्रका विचार सूक्ष्मतर होता है, क्योंकि यह मानव जातिको २७ भागोंमें विभाजित करता है। इसके भी लगभग आठ कूट हैं जिनमें प्रथम चारको सभी जगह ज्योतिषीगण देखते हैं (१) तारा (२) योनि (३) गण (४) नाड़ी (५) रज्जु (६) वर्ग (७) महेंद्र (८) नृदूर, स्त्रीदूर।

तारा

तारा (नक्षत्र) से तात्पर्य जन्म नक्षत्रसे है। वरके नक्षत्रसे कन्या नक्षत्र तक गिनना तथा कन्यासे वर तक। दोनोंमें नवका भाग देना, शेष रहे वह वर कन्याकी तारा कहलाती है। १ शेष रहे तो मध्यम, ३, ५, ७ अशुभ, तथा शेष उत्तम होती है। सातवां तथा आठवां कूट महेंद्र तथा नृदूर स्त्रीदूर भी इसीसे सम्बन्धित है। इसीसे इनका विभाजन अलग न कर कई जगह तो इसीमें कह दिये गये हैं। महेंद्रमें कहा गया है कि कन्याके जन्मनक्षत्र से वरका जन्म नक्षत्र यदि ४-७-१०-१३-१६-१९-२२ व २५ वां हो तो शुभ माना गया है। यह वरको दीर्घायु, बल तथा कन्याको सौभाग्य प्रदान करता है। इसी प्रकार अन्तिम कूटमें कहा गया है कि राशिकूटके अनुसार कन्या नक्षत्रकी दूरी वर नक्षत्रसे कम होना चाहिए। अधिकसे अधिक १३ तक ग्राह्य है। उपरांत अशुभ माना जाता है। क्योंकि 'स्त्रीदीर्घम्' दोष उपजाता है।

योनि

योनी प्रजनन - शक्ति तथा तीसरे पुरुषार्थ 'काम' की सफलताके हेतु देखी जाती है। इसके द्वारा कामप्रवृत्ति तथा अवयवोंके तुल्यत्व आदि अनेक बातों की योग्यताकी जांच की जा सकती है। प्रत्येक नक्षत्रोत्पन्न जातक उस नक्षत्रके गुणोंसे प्रभावित होता है, तथा इसी के समान प्रवृत्तियां मानवकी देखी गई हैं, जैसे अश्विनी में उत्पन्न जातककी अश्वके समान तो चित्रामें उत्पन्नकी चीतेके समान काम प्रवृत्ति होती है। योनियां १४ प्रकार की मानी गई हैं। दो वैर योनि वालोंका सम्बन्ध अहितकर होता है। उनमें परस्पर असंतोष, कलह तथा मनोमालिन्य होता है। नक्षत्रोंमें भी स्त्रीपुरुष संज्ञाके अनुसार दो पुरुष नक्षत्रोंका संबन्ध उचित नहीं, अन्यथा विग्रह झगड़े आदि होते हैं। वास्तवमें तो पुरुष नक्षत्र जातक पुरुष एवं स्त्री नक्षत्र जातक कन्याका सम्बन्ध मित्र योनियोंमें हो तो दांपत्य सुख, कामसे संतोष, परस्पर प्रेम तथा संतति सुख प्राप्त होता है। यदि दोनों स्त्री नक्षत्रोंमें हों तो भी मित्र योनि होने पर शुभ होता है। परन्तु दोनों पुरुष

नक्षत्रके होकर वैर योनि हो तो सर्वथा त्याज्य है।

उदाहरणार्थ उ.फा. में उत्पन्न वर तथा उत्तराभाद्रपदमें उत्पन्न कन्याका सम्बन्ध योग्य होता है, क्योंकि ये वृषभ (बैल) व गायकी सूचक हैं जो कि प्राकृतिक ही नर मादा हैं।

पुस्तकोंमें वैर योनियां दी रहती हैं, परन्तु उनमें भी स्वबुद्धि विवेकसे सोचना चाहिये कि मित्रता है तो कितनी मात्रामें और शत्रुता है तो कितनी मात्रामें। अन्यथा इस कूटका प्रभाव सीधा प्रजननशक्ति पर होता है। जो कि मानव जीवनमें इहलौकिक सर्वोपरि वस्तु है।

गण

नक्षत्र कूटोंमें यह दूसरा महत्वपूर्ण कूट है। मानसशास्त्रमें तीन प्रकारकी मनोवृत्तियां मुख्य मानी गई हैं। सत्व, रजस, तामस। इसीके अनुरूप तीन गण माने गये हैं। देवगण, मनुष्यगण तथा राक्षस गण। इनका प्रभाव नामवत् ही है। देवगण चरित्रकी पवित्रता महानता दया, प्रेम, उपकार आदि सत्व गुणोंका परिचायक है। मनुष्यगण, भले बुरेका मिश्रण होकर मध्यगुण राजसकी आभा दिखाता है। राक्षसगण तामसी मनोवृत्तिका परिचायक होकर जातकमें क्रोध, उच्छृंखलता, घृणा, नीचवृत्ति तथा अधार्मिकताका प्रादुर्भाव बताता है। अब यह विचारणीय है कि चाहे आर्थिक, सामाजिक शारीरिक योग्यतामें कितनी ही प्रबल हों परन्तु वे धर्म धारणाओं, विश्वासों तथा स्वाभाविक मनोवृत्तियोंकी प्रतिकूलताका शमन नहीं कर सकतीं। चरित्र तथा स्वभावमें पूर्ण समानता चाहे न हो परंन्तु परस्पर गुणोंका पूरक होना अति आवश्यक है।

देवगणः—पुनर्वसु, पुष्य, स्वाति, हस्त, श्रवण, रेवती, अनुराधा, मृगशिर, अश्विनी।

मनुष्यगणः—रोहिणी, पू. फा., पू. षा., पू. भा., तीनों उत्तरा, भरणी व आर्द्रा।

राक्षसगणः—कृतिका, अश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूला, धनिष्ठा, शतभिषा।

एक ही गणके वर कन्याका संबन्ध किया जा सकता है। देव व मनुष्यका सम्बन्ध भी अच्छा होता है, परन्तु देव व मनुष्यगण वरके लिये राक्षस कन्या तो नितान्त अवांछनीय है। सारांश यह कि वरका गण प्रबल होना चाहिये नहीं तो कन्याका गण प्रबल होनेसे सौभाग्य में रुकावट आवेगी।

नाड़ी

नाड़ी कूट स्वास्थ्य व दीर्घायुके लिये विचारणीय है। उसका आधार ऋषियोंने ज्योतिर्विज्ञान तथा आयुर्वेद दोनों ही शास्त्रों पर लिया है। यह़ी तीन होती हैं (आयुर्वेद) वात, पित्त व कफ। जब स्त्री पुरुषोंका आजन्म स्थायी सम्बन्ध करने जा रहे हैं, जिसमें पति पत्नीको परस्पर अर्धाङ्ग कहा है तो आयुर्वेद शास्त्रकी इस महत्वपूर्ण गणनाका विचार परमावश्यक हो जाता है। वैद्यक शास्त्रके अनुसार एक ही प्रकारकी नाड़ियोंका सम्बन्ध अस्वस्थकर बताया है। इसीके अनुसार इस कूटमें भी तीन नाड़ियां हैं— आद्य मध्य व अंत्य। जिस प्रकार नाड़ियोंकी स्थिति सर्पाकृति है, उसी प्रकार नक्षत्र गणना में भी यह बात स्पष्ट दिखाई देती है।

आद्या — अश्विनी, आर्द्रा पुन, उ. फा.हस्त, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा।

मध्या—भरणी मृग., पुष्य, पू. फा., चित्रा, अनुराधा पूर्वाषा, धनिष्ठा, उ. भाद्रपदा।

अन्त्या— कृत्तिका, रो., अश्लेषा, मघा, स्वाति., विशाखा, उ. षा. श्रवण, रेवती।

आद्यनाड़ीका ब्रह्मा स्वामी, वायुतत्व और वक्र गति है। मध्यनाड़ीका शिव स्वामी सुर्यतत्व और चंचल गति है। अन्त्य नाड़ीका विष्णुस्वामी चन्द्रतत्व व तीव्रगति है।

ज्योतिषशास्त्रमें बताया हैं कि एक ही नाड़ीके वरकन्याका विवाह अनुचित है। यदि दोनों आद्य हों तो पतिकी शीघ्र मृत्यु हो जाती है। क्योंकि वात प्रधान होनेसे पतिमें वीर्यकी मात्रा कम बनती है, तथा स्त्रीमें रजकी मात्रा अधिक होने से वह पतिका जीवन निचोड़ डालती है। मध्य नाड़ी दोनोंकी मृत्यु शीघ्र करती है, आयुर्वेद भी यही कहता है। पित्त प्रधान प्रकृतिके युग्ममें अधिक काम प्रवृत्ति होती है व दोनोंका नाश कर देती है। मध्य नाड़ीका स्वामीग्रह सूर्य है व स्वामी देव शिव है जो संहारक शक्ति है अतः दो उग्र अथवा संहारक प्रवृतियोंका संयोग इसके अतिरिक्त क्या परिणाम कर सकता है। इसी प्रकार दोनों

अंत्य नाड़ी वालोंका यदि विवाह होगा तो पत्नीकी मृत्यु पहिले हो जावेगी। कारण यह कि कफप्रकृतिवाला पुरुष तो अपनी वीर्य क्षति पूर्ण कर लेता है, परन्तु स्त्री कफज प्रकृतिकी होनेसे नहीं कर पाती, इससे उसके जीवन का शीघ्र अन्त हो जाता है। नाड़ी कूटमें मिलानके लिये उक्त बातोंको ही श्लोक बद्ध कर कहा है।

आद्य नाड़ी वरं हन्ति, अंत्य नाड़ी च कन्यका।
मध्यनाड़ी द्वयोर्हन्ति कथितं पूर्वसूरिभिः॥

यदि अन्य योग शुभ हों व नाड़ी ही दूषित हो जाती हों तो नक्षत्रके चरणों पर सर्पाकृति गतिसे विचार करना चाहिये। यदि चरणसे ठीक आवे तो ग्राह्य हो सकता है। साथ ही १ नक्षत्रके जातकोंको नाड़ी दोष नहीं होता।

वर्ग वैरः—इसके अतिरिक्त वर्ग वैर आता है। योनियोंके समान ही इसका विचार होता है। वैर वर्गोंका सम्बन्ध परस्पर प्रेममें बाधक होता है। इसके तीन भेद बताये हैं—

स्ववर्गात् पंचमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः।
उदासीनस्तृतीयस्थो वर्ग भेदस्तदोच्यते॥

अर्थात् निज वर्गसे पांचवां शत्रु, चौथा मित्र तथा तीसरा सम होता है। इसी अनुसार विचार करना चाहिए।

वेधः—कुछ नक्षत्र अन्य नक्षत्रोंको वेध करते हैं। परस्पर विद्ध नक्षत्रोंमें संबन्ध करना परस्पर कुप्रभाव उत्पन्न करता है।

रज्जुः—इसके पश्चात् यह अन्तिम कूट रज्जु भी विचारणीय है। २७ नक्षत्रोंको पांच विभागों में बांटा गया है।

(१) शिरो रज्जुः—धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिर। (२) कंठ रज्जु–रोहिणी, आर्द्रा हस्त, स्वाति श्रवण, शतभिषा (३) नाभि-रज्जुः—कृतिका, पुनर्वसु, उ. फा., विशाखा, उ. षाढ़ा व पूर्वा भाद्र (४) कटि रज्जुः—भरणी पुष्य, पू.फा., अनुराधा, पू. षा., उ. भाद्र. (५) पद रज्जुः—अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला रेवती।

ये पांच समूह हैं। वर कन्याके जन्म नक्षत्र एक ही रज्जुमें नहीं पड़ना चाहिए। अन्यथा शिरो रज्जुमें पड़ने पर युग्म तथा कुटुम्ब पर आपत्ति आती है, पतिकी मृत्यु शीघ्र होती है। कंठ रज्जुमें पड़नेसे पत्नीकी मृत्यु होती है जो आर्थिक तथा पारिवारिक दृष्टि से बालकोंके फांसी लगाती है—नाभि रज्जुमें पड़नेसे (उदरस्थ) संतति नाश आदि दुःख होते हैं। कटि रज्जूमें पड़नेसे निर्धनता कमर तोड़ देती है। तथा पद रज्जू निरन्तरभ्रमण कराकर परेशान करदेता है। अतःअन्य कूटोंके साथ इसकाभी जानना आवश्यक है। इनमेंसे आठ कूट (प्रथम चार नक्षत्रकूट तथा चार राशि कूट) मुख्य माने गये हैं तथा उनको ३६ गुण दिये हैं। जिनमेंसे आधे ऊपर १८ से अधिक लेना ग्राह्य बताया है।

इन कूटोंके विवेचनसे स्पष्ट है कि विवाहोपयोगी गुणों की पूर्ण परीक्षा हो सकती है। परन्तु आजकल तो इसे रूढ़ि, ढकोसला, ब्राह्मणोंकी वृत्ति हेतु आडम्बर कह कर अवलेहना की जाती है। माता पिता घर बार, बाह्य सौंदर्य व सबसे अधिक धन, दान दहेज आदि देखने व तय करने में तो अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं, परन्तु ऋषीश्वरों ने लोक कल्याणके निमित्त निरन्तर परिश्रम कर अपने अनुभवों, अन्तर्दृष्टि तथा विशाल बुद्धिके आधार पर उक्त सिद्धान्त निश्चित किये हैं उनकी अवहेलना कर देते हैं जिससे विवाहका वह महान् उद्देश्य ही सफल नहीं हो पाता है। आजकी पीढ़ी इसी कारण स्वास्थ्यकी दृष्टिसे इतनी निर्बल व सन्तप्त है। परिणाम भी प्रत्यक्ष है। उनका लक्ष्य भविष्यकी ओर न होकर वर्तमान पर ही केन्द्रित रहता है। पंडितगण भी उनकी इच्छानुसार गली निकाल देते हैं। तभी हम देखते हैं कि धनी वर्गमें ही सन्तति-नाश, रोग, कलह, चरित्र हीनता आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। यदि भावी दंपतिकी सभी विवाहोपयोगी बातोंका मिलान पूर्वही कर लिया जावे तो इतने कष्ट न होंगे। राष्ट्रकी उन्नतिके लिये यह परम आवश्यक है। जन्म लग्नोंकी ग्रह स्थिति परसे इस विषयक निर्णय शीघ्र ही पाठकोंके सम्मुख रखनेका प्रयत्न करूंगा।

★★

ज्यौतिष-विमर्श

[लेखक — श्री पं० जगन्नाथजी शास्त्री, राज पंडित]

[विद्वान् लेखकने इस लेखमें फलित ज्यौतिषके प्रधान अङ्ग मुहूर्त्तोंके विषयमें कुछ अपने मौलिक विचार उपस्थित किये हैं। आशा है विद्वान् पाठक इस विषय पर मनन करेंगे।' सं०]

समय यद्यपि ऐसा पदार्थ है कि विश्वमें कार्य करता हुआ मनुष्य, पक्षी आदिके समान किसीके दृष्टिगोचर नहीं हुआ। फिरभी अन्वेषण परायण मनुष्य-बुद्धिने दीर्घ समयसे इसका पता लगा लिया है और प्रत्येक कार्यमें इसे कारण रूपसे स्वीकार कर लिया है। लौकिक कार्योंमें तो इसका उपयोग व्यवहारसे ज्ञातहो जाता है, परन्तु शास्त्रीय कार्योंमें इसके उपयोगका प्रकाश ज्यौतिष शास्त्रसे ज्ञात होता है। वैदिक यज्ञोंके समय निर्णयमें इसका उपयोग होनेसे ज्यौतिष वेदके छः अङ्गोंमें गिना जाता है। इसके द्वार निर्दिष्ट किये गये समयमें ही किया गया यज्ञ पूर्ण फल देता है। जैसे द्रव्य, देवता, मन्त्र आदि यज्ञके अङ्ग हैं, इसी प्रकार शास्त्र-निर्दिष्ट समयभी यज्ञका अङ्ग है। 'वेदाहि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता' इस वेदाङ्ग 'ज्यौतिषके' वचनमें यही बताया गया है। इस शास्त्र-निर्दिष्ट समय का अदृष्ट फल है।

मुहूर्त्त चिंतामणिकी टीका पीयूषधाराके रचयिता गोविंददैवज्ञने 'जहां तक दृष्ट फल संभवहो, अदृष्ट फल मानना उचित नहीं' यह कह कर मुहूर्त्तोंकेभी दृष्ट फल स्वीकार किये हैं, परन्तु शास्त्रीय सिद्धान्तके अनुसार दृष्ट या अदृष्ट सभी फल कर्मोंके होते हैं। समय उनका सहायक और अङ्ग है। मीमांसक प्रक्रियाके अनुसार अङ्गका कोई स्वतन्त्र फल तो माना नहींजा सकता, जिन कर्मोंका दृष्ट फलहो, उनके अङ्गभूत मुहूर्तोंकाभी यदि दृष्ट फल माना जाय, तो कोई हानि नहीं। जो फल अङ्गीका है, वही अङ्गका है। यदि किसी वचनमें अङ्गका स्वतन्त्र फल बतायाभी हो,तो 'अङ्गे फलश्रुतिरर्थवादः' इस मीमांसक नयके अनुसार उसे अर्थवाद(प्रशंसात्मक प्ररोचना) मानना चाहिये।

कई अर्थवादोंके देखने और सुननेसे अल्पपठित ज्यौतिषियोंकी और जनताकी ऐसी धारणाहो गई है कि ज्यौतिषिके द्वारा निर्दिष्ट किये गये समयमें जोभी कार्य किये जाते हैं, उनका परिणाम लौकिक फलकी दृष्टसे उत्तमही होताहै। परन्तु यह धारणा भ्रान्त है। प्रारब्ध कर्म अनुकूलता उदासीनहो, तब किया जाने वाला कर्म फलवान्हो सकता है, प्रारब्ध-विरुद्ध होने पर फलवान् नहींहो सकता, चाहे कैसेही विशुद्ध मुहूर्तमें किया जावे। अतएव जो मुहूर्तोंके दृष्ट फलोंकी इच्छा रखते हैं, उनकों जातक, ताजिक, प्रश्न, शकुन इनका यथासंभव उपयोग करना चाहिये। जिससे निर्दिष्ट समयमें कार्य पूर्णहो जावे। जो ज्यौतिषी उपर्युक्त प्रमाणोंसे निर्णीत विशुद्ध मुहूर्त बतावेंगे, उनको प्रायः यश अवश्य मिलेगा।

मुहूर्तोपयोगी ग्रहबलमें भी यह विचार आवश्यक है कि विचारणीय ग्रह नीच अस्त और पापाक्रांत न हों। शुभ स्थानोंमें बैठे हुएभी नीच अस्त पापाक्रांत ग्रह अशुभ फल अवश्य देते हैं, जिससे मुहूर्तका भंग हो जाता है।

गुरु और शुक्र ये दो ग्रह संपूर्ण विश्वको ज्ञान सुख देने वाले हैं और विश्वके समग्र कर्तव्य ज्ञान और सुख पर अवलम्बित हैं। अतएव ये जब नीच और अस्तहों, तब तक समग्र शुभ कार्योंके करनेका शास्त्रोंमें निषेध है, परन्तु यह इनकी निर्बलताका उपलक्षक है। अतएव पापाक्रांत क्रूराक्रांत पराजित या और किसी प्रकार जब जब निर्बलहों, शुभ कार्य बन्द रखना चाहिये।

जन्मकालिक ग्रहचक्रमें जो राशियां स्वामियोंकी या शुभ ग्रहोंकी स्थिति या दृष्टिसे या दोनोंसे बलिष्ठहों जिनमें अष्टकवर्गकी रेखाएं अधिक हों;जो बलप्रद स्थानोंमें वर्तमान हों उनमें चारवश जब ग्रह आते हैं तब शुभ

फल देते हैं, चाहे वे राशियां चन्द्रराशिसे अनिष्ट स्थानोंमेंही क्यों न हो जो राशियां जन्मकालिक ग्रह चक्रमें निर्बल होती हैं, चाहे वे चन्द्रराशिसे शुभ ही क्यों न हों दोनों प्रकारसे शुभ होने पर विशेष शुभ फल देते हैं। जन्मकालिक ग्रहचक्रमें कार्याधिप जिन राशियोंसे सम्बन्ध करते हैं, उन राशियोंमें मुन्था, गुरु, सूर्य चन्द्र चारवश जब आते हैं तब कार्य होता है । किसीभी कार्यके मुहूर्त देखने वालोंको इन सब विषयोंका विचार करना चाहिये ।

विवाह संस्कारमें वर कन्याओंकी जन्मराशियोंसे या नामराशियोंसे मेलापक देखा जाता है । जो भारतवर्षके भिन्न२ प्रदेशोंमें भिन्न२ प्रकारोंसे देखा जाता है । कहीं ८ प्रकारका, कहीं१० प्रकार का और कहीं १८ प्रकारका देखा जाता है। इसको भारतीय ज्यौतिषियोंने और विशेष कर राजपूतानाके ज्यौतिषियोंने इतना महत्त्व दिया है कि जिसके सामने ग्रहविचार मन्द हो गया है । यदि वर कन्याओंके ग्रहोंका मिलान सुन्दरभी हो परन्तु इस मेलापकमें गुण कैम मिले, तो सम्बन्ध करनेके उसे तैयार नहीं होते । यदि कन्या मंगली हो और वर मंगली न होकर केवल राक्षस गण वाला हो तो मिलान हो गया समझते हैं । वस्तुतः सूक्ष्म विचारसे देखा जायतो, यह अनुचित है। ग्रहों की समानता मेलापक नहीं करा सकती और विशेषतः दृष्टफलमें तो यह कभी संभव नहीं ।

प्रत्युत यों समझना चाहिये कि मेलापककी कमीको ग्रहबल पूर्ण कर सकता है, परन्तु ग्रहबलकी कमी को मेलापक पूर्ण नहीं कर सकता । मेलापककी कमी ग्रहोंसे किस प्रकार पूर्ण हो सकती है, यह एक उदाहरण द्वारा बताया है। जैसे वरकी राशि मिथुन और कन्या की मीन है। यहां वरकी राशि शूद्र वर्ण और कन्याकी ब्राह्मण वर्ण है। मेलापक दूषित है परन्तु वरकी राशिका स्वामी बुध या वरकी राशी ब्राह्मण वर्णके कारक गुरु शुक्रोंसे युक्त हो और बलवान् हो तो दोषका परिहार मानना चाहिए। इसी प्रकार दुष्ट भकूट हो तो राशि स्वामियोंकी और नवांशक के स्वामियोंकी पारस्परिक मित्रतासे परिहार चिंतामणिकारने माना है। परन्तु इसमें ज्यौतिषियोंको अपनी बुद्धिसे इतना अधिक सोचना चाहिएकि यदि राशियोंके स्वामी परस्पर मित्र न हों परन्तु परस्परकी राशियोंमें परस्परके राशि-स्वामियोंके मित्र ग्रह बलवान् होकर बैठे हों अथवा राशि-स्वामियोंके निकट अंशोंमें इनकी युति हो तो दुष्ट भकूटका परिहार हो सकता है और राशि-स्वामियोंकी परस्पर मित्रता होने पर भी इनके साथ परस्पर-स्वामियोंके शत्रु ग्रहोंकी युति उपर्युक्तानुसार हो, तो दुष्ट भकूटका परिहार नहीं हो सकता। चन्द्र-राशियां यदि निर्बल हों तो परस्परके लग्न-स्वामियोंकी मित्रता देखनी चाहिए।

मेलापकके फलस्वरूप प्रेमका सम्बन्ध मनसे है और मनका विचार चन्द्रसे होता है। इसलिए मेलापकमें सर्वत्र चन्द्र-राशिसे विचार किया जाता है, परन्तु चन्द्र-राशिसे अधिक बलिष्ठ लग्नोंकी राशियां हों तो उनसे विचार करना भी अनुचित नहीं है। शरीर और मन दोनोंका परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। एकमें परिवर्तन होने पर उसका प्रभाव दूसरे पर भी पड़ता है। अतएव लग्नसे शरीरके साथ २ मनका विचार भी होना है। केवल लग्न लग्नेशोंके साथ शुभ ग्रहोंका सम्बन्ध होने पर भी क्षमा, सरलता, विद्या आदि मानसिक गुणोंका विकास मनुष्यमें देखा जाता है।

केवल दिग्दर्शनके लियेये कुछ विचार यहां लिखे हैं; ऐसे विचारणीय विषय ज्योतिषमें अनेक हैं, जो छात्रोंके बड़े उपयोगी हैं, परन्तु ज्योतिषके गणितांशमें जैसे परिष्कृत विचारोंसे परिपूर्ण ग्रन्थ हैं, ऐसे फलितांशमें और महूर्त्तांशमें नहीं हैं। क्योंकि ज्योतिष अर्थकरी गोप्य विद्या है। अनुभवी ज्योतिषी अनुभव न तो किसी ग्रन्थमें लिखना चाहते हैं, न शिष्योंको ही बताते हैं। यदि कोई सरल-हृदय हैं, तो उनके लिये 'यावद्वाचनिकं प्रमाणम्'का बंधन बुद्धि-बाधक होजाता है, वे कुछ सोच ही नहीं सकते। प्रमाण और पदार्थ-विचारमें जहां कुश्ती हो जाती है, वहां वे प्रमाणोंके ही पक्षमें रहते हैं। इसका एक उदाहरण महूर्त चिन्तामणिकी टीका पीयूष धाराके आधार पर यहां दिखाया जाता है:— रविसे शनि पर्यन्तके सात वारोंमें क्रमशः नन्दा, भद्रा, नन्दा, जया, रिक्ता, भद्रा, पूर्णा तिथियां आने पर मृत्युयोग बनता है, यह मूल चिन्तामणि में 'नन्दाभद्रा नन्दिका' इस श्लोकार्धसे दिखाया है।

गोविंदने इसकी व्याख्या करते हुए दो पक्ष दिखाये। एक बार मृत्युयोग और दूसरी बार अमृता पदच्छेद बना कर अमृत योग। पहले पक्षमें 'आदित्य भौमयोर्नन्दा' इस नारद वचनको और शिष्टाचारको प्रमाणके रूपमें उपस्थित किया। दूसरे पक्षमें 'नन्दा भौमार्कयोः' यह वशिष्ठ वचन और 'आदित्यभौमयोर्नन्दा' यह कश्यपवचन समर्थनके लिये दिखाया। 'वस्तुतस्तु'कह कर दूसरे पक्षका उपन्यास किया। इस लिये गोविंदको दूसरा पक्ष अभिमत है, ऐसा प्रतीत होना है। अब यहां पदार्थ दृष्टिसे विचार कीजिये। प्रस्तुत योगसे पूर्व ग्रन्थकारने शुक्र, बुध, भौम शनि और गुरु, इन बारोंमें क्रमशः नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता पूर्णा, तिथियां आने पर सिद्धियोग बताया है। यहां तिथियोंके नाम गुणोंके अनुसार हैं। नन्दाका अर्थ समृद्धि देने वाली, भद्राका अर्थ मंगल देने वाली, जयाका जय देने वाली, रिक्ताकादारिद्रय देने वाली और पूर्णाका धन विद्याओंसे पूर्ण करने वाली है। इनमें जिन वारोंका सम्बन्ध होनेसे सिद्धियोग बनता है, ये वार भी इन तिथियोंके समान गुण वाले ग्रहोंके हैं। जैसे नन्दा तिथिमें शुक्रवार, नन्दा तिथिके समान शुक्र भी समृद्धि देने वाला है। इसी प्रकार भद्रा बुधवार, जया भौमवार, रिक्ता शनिवार और पूर्णा गुरुवार समान गुण वाले हैं। अतएव इनके सम्बन्धसे जो योग बना, इसका शुभ होना योग्य है। यह समान गुण वाले तिथि, वारोंका योग अमृत योग में नहीं है। इसमें ऋण कारक मंगलके साथ भद्रा तिथिका, नपुंसक ग्रह बुधके साथ जया तिथिका योग बताया है। यह परस्पर विरोधी गुण वाले तिथि वारोंके योग है। यह शुभ नहीं हो सकता। मूल वचनमें अकारका प्रश्लेष न कर 'मृताऽर्कात्' पाठ रखना ही उचित है। वसिष्ठ और कश्यपके समर्थक वचनोंका स्थल देखकर उनके शुद्ध पाठका निर्णय करना चाहिये।

वर्तमान समयके ज्यौतिषी यदि मुहूर्त और फलितके ग्रन्थों पर उत्सर्गापवाद शैलीसे निर्णीत युक्तिपूर्ण विचार करने वाली सरल व्याख्याएं लिखें तो इस शास्त्रके भक्तोंका बड़ा उपकार हो। मुहूर्त और फलितोंके जो ग्रन्थ परीक्षाओं में नियत हो गये हैं, उनके अक्षरार्थको समझाने वाली व्याख्याएं भी आज उपलब्ध नहीं हैं। सारावली, नरपतिजयचर्या बृहत्पाराशरी आदि ग्रन्थोंको समझनेके लिये छात्रोंको अत्यन्त कष्टका अनुभव हो रहा है। साधारण ग्रन्थों पर तो भारतीय पण्डित दर्जनों टीकाएं लिख डालतेहैं, परन्तु ऐसे उपयोगी ग्रन्थों पर अच्छी व्याख्या लिखनेकी तो अभी तक किसीको फुर्सत ही नहीं मिली।

अनुनय

श्री शंभालाल शास्त्री

माधव नेकु दरस तौ दीजे।
ये अंखियां बहु दिन की प्यासी कछु तो कृपा करिजैं॥
बीतत दिवस रैनि त्यों बीतत नेकु न दरस लहीजै।
हिय को दुःख जानत इक हिय ही कासौ हाय कहीजै॥
मैं अवगुण आगार दयानिधि! इन पै चित्त न दीजै।
'चन्द्रकला' करुणा सागर हौ कछु तो करुणा कीजै॥

सन्तति-निर्णय

— श्री रा० ज्यो० पण्डित जगदीशप्रसादजी शास्त्री मिश्र —

गृहस्थीकेलिए सन्तानका होना अत्यावश्यक है, बिना सन्ततिके जीवन वस्तुतः इस लोक व परलोकार्थ सफल नहीं कहा जाता। शास्त्रोंमें आज्ञा है कि "पुत्रार्थे क्रियते भार्या पुत्रः पिण्ड प्रयोजनः" पुत्र-प्राप्तिके हेतु ही ही भार्याकी आवश्यकता है न कि कामवासनाको तृप्त करनेके लिए, और पुत्रके द्वारा ही उत्तर क्रिया सम्पन्न होती है। "अपुत्रस्यगृहं शून्यम्" व्यवहार दृष्टिसे भी बिना पुत्रके घर मानो शून्य है। देवी भागवतमें तो यहां तक लिख दिया है कि "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गे वेदविदो-विदुः" अर्थात् स्वर्ग में वेदवेत्ता देवताओंने यह निश्चय किया कि बिना सन्तान के प्राणीकी सद्गति नहीं होती है, सन्तति का विषय बड़े महत्व का है अतः सबके कल्याणार्थ 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके समक्ष इस विषयमें गवेषणात्मक स्वानुभवपूर्वक जो जानकारी प्राप्त हुई है उसका प्रकाशन यथामति किया जाता है।

जन्मकुण्डलीमें पांचवां स्थान सन्तानका माना गया है यह प्रायः ज्योतिषसे अभिरुचि रखनेवाले सब ही जानते हैं, किन्तु इसके अतिरिक्त विशेषता यह है कि लग्न १, तृतीय ३, चतुर्थ ४, नवम ९, एकादश ११, ये स्थान भी सन्ततिके विषयमें सूक्ष्म दृष्टिसे विचारणीय हैं।

सन्तानयोग

सुतेशे गुरु संयुक्ते लग्ननाथे च तुङ्गगे।
गुण कीर्त्यन्वितं पुत्रं मनुष्यो लभते तदा॥

पंचम का स्वामी गुरु से युक्त हो व लग्न का स्वामी उच्च राशिमें स्थित हो तो गुणी एवं यशस्वी पुत्र प्राप्त होता है।

सुरेणेक्षितः केन्द्रकोणे प्रयातः,
सुतागार नाथस्तदासन्ततिःस्यात्।
सुतेशः सुतस्थो यदातुङ्गराशौ,
भवेज्जीवदृष्टश्च सन्तानयोगः।

अर्थात् पञ्चमेश गुरुसे आलोकित होकर केन्द्र १,४,७,१० अथवा कोण, ५,९ में होनेसे सन्तान होती है। तथाच पंचमेश पंचममें उच्चके बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो सन्तान उत्तम हो जाती है।

अत्युच्चे पंचमाधीशे केन्द्रकोणगृहस्थिते।
लग्नाधीशेन संयुक्ते ज्ञानपूर्णः सुतोभवेत्॥

पञ्चम स्थानका पति अपनी परमोच्च राशिमें होकर लग्नके स्वामीसे युक्त होता हुआ केन्द्र वा त्रिकोणमें हो तो ज्ञानी पुत्र होता है।

"हृद्रोगयातः सुतमन्दिरस्थो" ददाति सौरःखलु पंचपुत्रान्
स्वराशितः पुत्र निकेतनस्थ एकोः सुतः स्याद्रविनन्दनश्चेत्॥

पंचम स्थानमें कुम्भ राशिका शनि स्वतन्त्र होनेसे पांच पुत्र प्राप्त होते हैं तथा च सूर्यनन्दन अर्थात् शनि अपनी राशि १०, ११ मकर कुंभसे पांचवें स्थान पर किसी भी राशि में हो तो एक पुत्र अवश्य ही जीवित रहता है, शेष नष्ट हो जाते हैं।

ददातिपुत्रत्रयमात्माजस्थः तुङ्गानुयायी वसुधासुतश्च।
गुरुर्यदा पंचमगेहवर्ती स्वराशिगः पंचसुतान् सदत्ते॥

अर्थात् मंगल उच्चराशिका होकर पंचम में हो तो तीन पुत्र देता है। बृहस्पति यदि अपने घरका स्वामी होकर पंचम स्थानमें हो तो पांच पुत्र का दायक हो जाता है।

[पञ्चमभावमें गुरु वा गुरुकी राशि धनु वा मीन हो तो प्रथम सन्तान नहीं बचती। धनु राशिमें गुरुशनिका योग पञ्चमभाव में सन्तान बाधक होता है। —सम्पादक]

बृहस्पतिसे पंचम स्थानमें शुभ ग्रह बलवान् होकर स्थित होनेसे पुत्र प्राप्ति अवश्य होती है। पंचम स्थानमें मेष, मिथुन, सिंह, तुला, कुम्भ इन राशियोंमें से किसी एक के भी होनेसे पुत्र प्राप्ति निश्चय रूपेण हो जाती है। पंचम स्थानमें शुभग्रह हो अथवा शुभ ग्रह देखे तो सन्तान अवश्य होती है।

कन्यायोग

नक्रंगतो रविसुतो यदि पंचमस्थः
तिस्रोददाति दुहितृर्मनुजाय नित्यम् ।
शुक्रः चपापतिविदांयदि कश्चिदेकः
कन्या प्रजोद्भवकरः सुतगेहवर्ती ॥

रविसुत अर्थात् शनि मकर राशि का होकर पांचवें स्थान में हो तो तीन कन्या होती हैं। शुक्र, चन्द्रमा, बुध इन तीनोंमें से कोई एकके पंचम स्थानमें होने से कन्या सन्तति अधिक होती है। पांचवें स्थानमें वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर केवल इन राशियोंमें से किसी एक के होने से कन्या सन्तति प्रायः होती रहती हैं। यहां तक हो जाता है कि ८-९ तक संख्या बन जाती है। पंचम स्थानमें स्त्री ग्रहका किसी भी प्रकारका सम्बन्ध होनेसे या बैठनेसे कन्याएं होती रहती हैं।

सन्तानका अभाव

वागीशात्त्रिकभवनेषु पंचमेशोरन्ध्रस्थः
सुतगृहपोऽगपोव्ययस्थः ।
धर्मेशोरिपुसदनं यदा च यातः
संतानं न हि लभते तदा मनुष्यः ॥

अर्थात् बृहस्पति से पंचमेश ६, ८, १२ इनमेंसे किसी स्थानमें हो और पंचमका स्वामी ८ में हो व लग्नका पति १२ वें में हों तथा नवमेश ६ में हो तो सन्तान नहीं होती है। लग्नमें शनि चन्द्र होने से किंवा मंगल होनेसे अथवा पंचममें वृश्चिक या धनुःका केतु होनेसे सन्तान नहीं होती है।

"मन्दार्कौयदि नवगृहगौ तथा नभस्थः,
शीतांशुःसुरगुरुणा यदा न दृष्टः ।
वारिस्थारविरविजौचषष्ठनाथश्चन्द्रे ऽस्ते ।
बुधदृष्टिते न सन्ततिः स्यात्" ॥

सूर्य शनि नवमस्थानमें तथा दशममें चन्द्र गुरुसे दृष्ट नहीं हो तो सन्तान नहीं होती है, सूर्य, शनि तथा षष्ठेश ६ में ही हो और चन्द्रमा सप्तम स्थान में बुधसे दृष्ट होने से सन्तान नहीं होती है। शनि पंचमेश षष्ठेश होकर लग्न में हो तो सन्तान का सुख नहीं होता है। पंचम स्थानमें धनुः अथवा मीन राशि होने से सन्तान सुख कभी दृष्टि-गोचर नहीं होता है, धनुः राशिके अतिरिक्त पंचम में मीन राशि हो तो कदाचित् सन्तान हो जाती है, इसके अतिरिक्त

'सहजभावपतिः सहजे यदा तनुगतो धनगोव्ययगोऽपिवा-
सुतगतः सुतहानिकरो नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः।

तीसरे स्थान का स्वामी तीसरे ही हो या लग्न १ धन २ व्यय १२, पंचम ५ इनमें से कहीं भी हो तो संतान नहीं होती है। यदि होती है तो जीवित नहीं रहती है। इसके अतिरिक्त एक योग यह है कि

अग्रे जातंरविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः ।
जातं जातं कुजोहन्ति सहज स्थानमास्थितः ।

तीसरे स्थान में सूर्य होने से पहिली सन्तान नहीं रहती, शनि से पिछली नहीं रहती तथा व मंगल से जो होती है वही नष्ट हो जाती है।

सन्तान प्राप्ति में विलम्ब का समय

राहु यदि ११ वें स्थान में हो तो ४२ वें वर्ष के बाद सन्तान होती है। पंचम का स्वामी केन्द्र में कारकग्रह से युक्त हो व न हो तो ३० वें अथवा ३६वें वर्ष में, पंचम स्थान में गुरू स्वगृही अथवा पंचमेश शुभ ग्रह के साथ स्वतन्त्रता किसीसे सम्बन्धित न हो तो ३२वें वर्ष के बाद सन्तान होती है। बृहस्पति और शुक्र दोनों पंचम में होवें तो २, ३ सन्तान नष्ट होकर पुत्र २, कन्या २ जीवित रहती हैं। लग्नेश, नवमेश, पंचमेष शुभग्रह से युक्त होकर केन्द्र, कोण में हो या ११वें में शुभ ग्रह से युक्त भी न हों तो भी विवाह के ५,६ वर्ष बाद सन्तान होती है। गुरु व पापीग्रह चतुर्थ स्थान में अथवा पंचम, अष्टम में चन्द्र हो तो ३० वर्ष की आयु के बाद सन्तान होती है। यदि पहिले हो तो जीवित नहीं रहती। —सं०]

किसी के सूर्य बिगड़ने से २२वें वर्ष के बाद हरिवंश पुराण का नियमपूर्वक श्रवण करने से, चन्द्र से १४वें वर्ष के बाद महादेवजीकी आराधना से, मंगल से २८वें वर्ष के बाद रुद्राभिषेक कराने से, बुधसे ३२ वें वर्षके अन्तर कांस्यपात्र घृत पूर्ण प्रति वर्षमे देनेसे, गुरूसे २६वें वर्षके पश्चात् पितर तथा अतिथिको संतृप्त करनेसे, शुक्रसे २५ वें वर्ष के बाद गायकी सेवा करनेसे, शनि की बिकारिता से २६ वें वर्षके बाद महामृत्युंजय जप कराने से (राहुका

ऊपर बतला दिया है) और केतु से ४८ वें वर्षके पश्चात् कन्यादान कराने से सन्तान हो जाती है।

स्त्री पुरुष के विषय में विशेष विचार

स्त्रीकी कुण्डली यदि हो तो उसमें मंगल और चन्द्र का विचार करना चाहिए, क्योंकि स्त्रीके मासिक धर्मके प्रवर्तक चन्द्र मंगल ही हैं "कुजेन्दुहेतुःप्रतिमासमार्तवम्" ऐसा निर्देश है, चन्द्र मंगलके निर्बल होने से ऋतु बिगड़ जाता है। चन्द्र मङ्गल को सुधारनेके लिए चन्द्र मंगलका दान जप व्रत करना चाहिए। इसी प्रकार मनुष्यकी कुण्डली में शुक्र बलवान् होना चाहिये। शुक्रका सूर्य तथा राहु केतुसे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए। शुक्र का नाम वीर्य है अर्थात् बीज है। शुक्रके बलवान् होनेसे वीर्य स्वतः ही पुष्ट हो जाता है। शुक्र पापीग्रहसे सम्बन्धित अथवा अस्त होने से वीर्यकी शक्ति न्यून किंवा विकृत हो जाती है। जिससे बीज कमजोर हो जाता है, तब उसमें बीजशक्ति का ह्रास अथवा अभाव हो जाता है। उसको बलवान् बनाने के लिए शुक्रदानका व्रत जपादि तथा वृष्य पदार्थ अश्वगन्धादि चूर्ण पौष्टिक वस्तुओंका सेवन करना चाहिए। स्त्री पुरुष दोनों का जब रक्तवीर्य शुद्ध हो जावेगा तब "शुक्रशोणितसंभवोगर्भः" रजोवीर्यके सम्मेलन से गर्भ का संभव हो जाता है।

सन्तान प्राप्ति के साधन

सन्तान योगका जिनकी कुंडलीमें अभाव है उनको गाय की सेवा करनेके विषयमें राजा दिलीपका आख्यान ज्वलन्त उदाहरण भूत है। उनको सन्तान नहीं थी उसके कारण राजा रानी बड़े दुःखी थे, उनके गुरु वसिष्ठने उपदेश दिया कि गायकी सेवा से सन्तान प्राप्त हो सकेगी। उन्होंने गुरुजीकी आज्ञाका पालन किया उससे उनको रघुनामक दिग्विजयी पुत्र प्राप्त हुआ। हरिवंश पुराणका नियमपूर्वक श्रवण करना, स्त्री पुरुषों दोनों को मंगल का व्रत तथा च मंगल यन्त्रका अर्चन, लालवस्त्र पहिन कर लाल वस्तु से पूजन, लवण रहित एक बार प्रति मंगलको भोजन, पितृतृप्ति, गया श्राद्ध तथा अतिथि सेवा करते रहना चाहिए।

सन्तानगोपाल का जप कराना श्रेयस्कर है

सन्तान प्राप्ति के लिए सपादलक्ष सन्तान गोपाल-पुरश्चरण और सन्तानगोपाल स्त्रोत्र पाठ दम्पतिके लिए विशेष उपयोगी है। ४८ वर्ष की अवस्था जब मनुष्यकी हो जाय तब तक सन्तान की प्रतीक्षा व साधन तत्प्राप्तिके लिए करते रहना चाहिए, क्रूर ग्रहोंके प्रभावसे या धनुर्धर योगादिसे यदि उक्त आयु में भी सन्तान प्राप्त नहीं हो सके तब दत्तक पुत्र ग्रहण कर लेना चाहिए।

बुध और लग्न का स्वामी यह दोनों लग्नको छोड़कर ४, ७, १० में होवें, चतुर्थेश लग्नपति के साथ लग्नमें ही अथवा चतुर्थमें हो या पंचममें हो, सप्तमेष, वृषभ, तुला कर्क, मकर इन राशि को छोड़ अन्य राशिका केतु हो अथवा धनुर्धर व मीन राशि पंचम में हो, सप्तमेश अष्टम में गया हो, भाग्येश विकृत हो या मङ्गल चन्द्र स्त्रीको और शुक्र मनुष्यको बिगड़ा हुआ हो, गुरुसे पंचम स्थान में पापीग्रह हो, या वह अस्त हो आदि परिस्थितिमें ४८ वें वर्षके पश्चात् दत्तक पुत्र लेना चाहिए।

यह संक्षेपसे सन्तान विषयक निर्णय लिखा गया है। इससे विशेष किसीको जाननेकी इच्छा हो तो पत्र व्यवहार करें।

❀ इति ❀

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय पञ्चाग' से]

पौष शुक्ला	११ गुरुवार	ता० १८ जनवरी	पुत्रदा एकादशी व्रत
	१३ शनिवार	ता० २० ,,	प्रदोष व्रत
	१४ सोमवार	ता० २२ ,,	सत्यव्रत
	१५ मंगलवार	ता० २३ ,,	श्री नेताजी सुभाषचन्द्र वसु जन्मोत्सव माघस्नानारम्भ
माघ कृष्णा	३ शुक्रवार	ता० २६ जनवरी	श्रीगणेश ४ संकष्ट चौथ व्रत, चन्द्रोदय स्टेण्डर्डटाइम रात्रि ९।० भारतीय गणराज्य स्थापना दिवसोत्सव।
	११ शुक्रवार	ता० २ फरवरी	षट्तिला एकादशी व्रत
	१३ रविवार	ता० ४ ,,	प्रदोष व्रत
	३० मंगलवार	ता० ६ ,,	मौनी अमावस महोदयपर्व मेला प्रयाग
माघ शुक्ला	१ बुधवार	ता० ७ ,,	चन्द्रदर्शन, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
	५ रविवार	ता० ११ ,,	वसन्त पंचमी श्री ५
	६ सोमवार	ता० १२ ,,	कुम्भ संक्रांति मु० १५ पुण्यकाल सायंकाल ३ बजे उपरान्त
	७ मंगलवार	ता० १३ ,,	रथ सप्तमी अचला ८
	८ बुधवार	ता० १४ ,,	भीष्माष्टमी बुधाष्टमी
	९ गुरुवार	ता० १५ ,,	श्री मध्वाचार्य जयन्ती
	११ शनिवार	ता० १७ ,,	जया एकादशी व्रत
	१३ सोमवार	ता० १९ ,,	सोमप्रदोष व्रत
	१५ बुधवार	ता० २१ ,,	सत्यव्रत माघस्नान समाप्ति
फाल्गुन कृष्णा	४ रविवार	ता० २५ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ९।५१
	७ बुधवार	ता० २८ ,,	श्रीसीता जन्माष्टमी (निशीथव्यापिनी)
	९ शुक्रवार	ता० २ मार्च	श्रीसमर्थ रामदास ९
	११ रविवार	ता० ४ ,,	विजया एकादशीव्रत
	१२ सोमवार	ता० ५ ,,	सोमप्रदोषव्रत
	१४ मंगलवार	ता० ६ ,,	श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत
	३० बुधवार	ता० ७ ,,	अमावस्याव्रत
फाल्गुन शुक्ला	२ शुक्रवार	ता० ९ ,,	चन्द्र दर्शन
	६ बुधवार	ता० १४ ,,	मीन संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल दूसरे दिन
	७ गुरुवार	ता० १५ ,,	होलाष्टकारम्भ
	१० रविवार	ता० १८ ,,	रविपुष्यसर्वार्थसिद्धियोग अपराह्न स्टे. टा. ३-२२ उपरान्त
	११ सोमवार	ता० १९ ,,	आमला एकादशीव्रत
	१२ मंगलवार	ता. २० ,,	भौम प्रदोष व्रत
	१४ गुरुवार	ता० २२ ,,	सत्यव्रत होलिका दहन अर्धरात्र स्टे. टा. ४।४६ उप.

	१५ शुक्रवार ता० २३ ,,	फाल्गुनी पूर्णिमा
चैत्र कृष्णा	१ शनिवार ता० २४ मार्च	धूलीवन्दन श्वपचस्पर्श आम्रकुसुम प्राशन वसन्तोत्सवारम्भ होला १ मेला आनन्दपुर साहब
	३ सोमवार ता० २६ मार्च	श्रीगणेश चौथव्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ६।५३ श्री शिवाजी जयन्ती
	४ मंगलवार ता. २७ ,,	रङ्ग पंचमी
	७ गुरुवार ता० २६ ,,	शीतला सप्तमी
	८ शुक्रवार ता० ३० ,,	शीतलाष्टमी
	११ सोमवार ता० २ अप्रैल	पापमोचनी एकादशीव्रत
	१२ मंगलवार ता० ३ ,,	भौम प्रदोषव्रत
	१४ गुरुवार ता० ५ ,,	मेला पृथूदक (पिहोवा) चैत्र १४
	३० शुक्रवार ता० ६ ,,	अमावस्या
चैत्र शुक्ला	१ शनिवार ता० ७ ,,	चन्द्रदर्शन, नवरात्रारम्भ, निम्बपत्र भक्षण, श्री गौतम जयन्ती
	३ सोमवार ता० ९ ,,	गणगौरी ३ श्रीमत्स्यजयन्ती
	७ शुक्रवार ता० १३ ,,	मेष संक्रान्ति मु. ४५ पुण्यकाल दूसरे दिन
	८ शनिवार ता० १४ ,,	संक्रांति पुण्यकाल प्रातः ६॥ तक श्री दुर्गाष्टमी मेला श्रीमनसादेवी
	८ रविवार ता० १५ ,,	श्रीराम ९ व्रत रविपुष्ययोग

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[लेखक — राजवैद्य डाक्टर श्री अमरदत्तजी मिश्र एल० एम० ए० एच० एस० बी० एस० एस्ट्रोलोजर]

यह वर्ष सन् १९५१ जन-धन में महान् परिवर्तनकारी है, किन्तु इसका प्रभाव सहिष्णुताके सूर्यमें होगा। ज्योतिष शास्त्र मनुष्य के लिए प्रकाश है, जिस प्रकार घन-घोर अंधेरी रात्रिमें लेम्पके प्रकाशसेमनुष्य निर्भयता पूर्वक अपना मार्ग ढूंढ निकालता है, उसी प्रकारसे ज्योतिष एक वैज्ञानिक दीपक है, जिसका उपयोग बुद्धि द्वारा किया जाता है। पाठकोंके लाभार्थ इस लेखमें जनवरी, फरवरी एवं मार्च १९५१ में चांदी, सोने, कपास आदिमें जो विशेष परिवर्तन होगा उनका संक्षेप रूपमें ज्योतिष शास्त्र के सैद्धांतिक आधारोंके द्वारा प्रकाश डाला है।

जनवरी १९५१

ग्रहयोग और फल — हर्शल बक्री ता० २१ जनवरी को सूर्यका सायन कुम्भ में प्रवेश १३ जनवरी को शनि का वक्री होना, मंगल, गुरु का मीन में जाना शुक्रका कुम्भ में प्रवेश तथा बुध का वक्री मार्गी एवं उदय होगा, यह बुधकी तीन अवस्थाएं एक मासमें ही हो जाती हैं। बुध हर्शल की सप्तम स्थान में दृष्टि (Opposition aspect)सूर्य, बुध की युति मंगल और प्लूटोकी युति शनि चन्द्रकी सप्तम, मंगल चन्द्रकी सप्तम, इनके अतिरिक्त कई चतुर्थ, सप्तम, पंचम समानांशक्रांति (Parallel) आदि भी है। अतः इस मासमें बाजारकी स्थिति सामान्य रहेगी। प्रारम्भ में चादी, सोने, रुईके बाजार में तेजी आवेगी गुरु और मंगलके प्रभावसे सारे मास तेजीका वतावरण बनाये रखेगा। शनि वक्री होता है, इसका प्रभाव चांदी, सोने, रुईमें विशेष होगा, अतः तेजी टलती जावेगी। इस योग वेलामें भी चांदी, सोने में भी मंदी का प्रभाव होगा। शेयर बाजार में अवश्य ही तेजी आवेगी। १३ जनवरी ५१ के बाद अलसी, काकड़ा, सरसों, तम्बाकूमें तेजी चलेगी, एवं घटाबढी भी

होगी। इस माससे पूर्वाद्ध के तेजी रहकर पूर्वाद्धके २-३ दिन शेष रहने पर ही बाजार बदल जावेगा। इस मासके प्रारम्भमें चांदी, सोनेमें अच्छा प्रभाव चलेगा।

फरवरी १९५१

यह मास व्यपारी क्षेत्रमें विशेष परिवर्तन करने वाला है, क्योंकि इस मासमें सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र एक साथ चार ग्रह सायन मीनासीन हैं; यह मीन राशी तेजी कारक राशी है, अतः इस मासमें चांदी, सोनेमें अच्छो तेजी आवेगी (Sayen Pisees is a special Bullish sign) पुनः गुरु भी २५ फरवरी को अस्त हो रहा है, इस प्रकार इन योगोंके प्रभावसे बाजारमें अच्छी तेजी आवेगी, केवल मंदीकारक योग गुरु मंगल की (Parallel) पैरेलल (समानांश क्रांति है) जो मासके आदि में एक-दो दिन मंदीका असर लाकर पुनः बाजार तेजी कारक योगों के बल पर [तमतमाने लगेगा। इस मासमें घटाबढ़ी उत्तराद्ध में चलेगी, किन्तु बाजारका विशेष रुख तेजीका ही रहेगा।

मार्च १९५१ ई०

ग्रहयोग और फल — इस मासमें गुरु उदय होता है, सूर्य सायन मेषमें प्रवेश करता है, हर्शल मार्गी होता है, मंगल मेष में प्रवेश करता है, शुक्र सायन वृषमें प्रवेश करता है, बुध प्रथम मीन प्रवेश पुन मेष प्रवेश करता है, एवं कई प्रधान युतियां भी हो रही हैं। इस मास की ग्रह योग स्थितिका संकेत है कि इस मासकी चांदी, सोनेमें अवश्य ही मंदी आवेगी, किन्तु ऐसे परिवर्तन प्रारम्भमें ही होंगे, जिनका प्रभाव लगातार घटाबढ़ीके चांस हैं, पुनः बाजार साधारण स्थिति में चलेगा। इस मासमें रुईमें उत्तम परिवर्तन होंगे, तेजीमें उत्तराद्ध में तेजीकारक योग है, जिनके प्रभावसे ४-५ दिनमें चांदी, सोना, रूईमें अच्छी तेजी आवेगी।

★★

❋ त्रैमासिक व्यापारिक तेजी-मन्दी ❋

[लेखक — श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद]

माघ मास

माघवदी १ बुध ता० २४ जनवरी— चांदी १॥) २) तेज हो, किसी समय मंदीकाभी झटका हो। गेहूं, जौ; चावल, रसकस, सरसों आदि तेज हों। रूई तेज।

माघवदी २ वृह० ता० २५ जन०— चांदी तेज।

माघवदी ३ शु० ता० २६ जन०— चांदी, रूई मंदी यहां सेप्रत्येक वस्तुमें कोई इकतरफा लाइन चलेगी।

माघवदी ४ शनि ता० २७ जन०— चांदी, रूई तेज।

माघवदी ६-७ सोम० ता० २९ जन०— प्रत्येक वस्तु तेज।

माघवदी ८ मं० ता० ३० जन०— चांदी तेज होके मंदी, सरसों, अन्न तेज।

माघवदी ९ बु० ता० ३१ जन०— चांदी, गुड़, अलसी तेज।

माघवदी १० वृह० ता० १ फरवरी— रूई, गेहूं, चावल, गुड़, चांदी आदि मन्दी हों।

माघवदी ११ शु० ता० २ फरवरी— गुड़ मंदा होके तेज, चांदी तेज।

माघवदी १२ शनि० ता० ३ फरवरी— चांदी तेज।

माघवदी १४ सोम० ता० ५ फरवरी— चांदी तेज होके मन्दी।

माघवदी ३० मं० ता० ६ फरवरी— प्रत्येक वस्तुमें घटा-बढ़ी अच्छी रहे। चांदी १॥) २) तेज।

माघसुदी १ बुध ता० ७ फरवरी— चांदी मन्दी होके रातको तेज। गुड़, खांड, आदि रसरस तेज।

माघसुदी ४ शनिवार ता० १० फरवरी— रूई, अन्न तेज।

माघसुदी ६ सोम० ता० १२ फरवरी—अन्न, गुड़, अलसी शेयर। चांदी तेज।

माघसुदी ७ मं० ता० १३ फरवरी— चांदी मंदी।
माघसुदी ८ बुध ता० १४ फरवरी— चांदी मन्दीसे तेज।
माघसुदी १३ सोम० ता० १९ फरवरी— चांदीमें कोई लाइन निकलेगी। रूई, गुड़ मन्दे होंगे।
माघसुदी १४ मं० ता० २० फरवरी— चांदीमें भारी घटबढ़ निकलेगी। रूई तेज।
माघसुदी १५ बुध ता० २१ फरवरी— रूई, चांदी, गुड़, तेल तेज।

सारांश माघ मास

इस मास चांदीमें १०) १५) या २०) की तथा गुड़, सरसों, अन्न आदि पदार्थोंमें १॥) २)की घटबढ़ निकलेगी।

फाल्गुन मास

फाल्गुनवदी १ गुरु ता० २२ फरवरी— चांदी मन्दी होके तेज।
फाल्गुनवदी २ शु० ता० २३ फरवरी— घी, तेल, रसकस तेज। चांदी मन्दी होके तेज।
फाल्गुनवदी ३ शनि० ता० २४ फरवरी— चांदी मन्दी होके तेज।
फाल्गुनवदी ५ सोम० ता० २६ फरवरी— बाजार रुख देख कर व्यापार करें।
फाल्गुनवदी ६ मं० ता० २७ फरवरी— चांदी तेज।
फाल्गुनवदी ७ बुध ता० २८ फरवरी— यहांसे चांदी, गुड़, सरसों तथा प्रत्येक वस्तुमें अलग-अलग नई इकतरफा लाइन चलेंगी।
फाल्गुनवदी ८ बृह० १ मार्च— चांदी मन्दी होके तेज।
फाल्गुनवदी १० शनि ता० ३ मार्च— रूई, चांदी तेज।
फाल्गुनवदी १३ सोम० ता० ४ मार्च— चांदी, अन्न, गुड़ तेज होके मंदे।
फाल्गुनवदी १४ मं० ता० ६ मार्च— चांदी मन्दी।
फाल्गुनवदी ३० बुध ता० ७ मार्च— रूई, अन्न चांदी मन्दी।
फाल्गुनसुदी १ बृह० ता० ८ मार्च— चांदी मन्दी रुई तेज।
फाल्गुनसुदी २ शु० ता० ९ मार्च— रूई, चना आदि अन्न तेज। चांदी मन्दी होके तेज।
फाल्गुनसुदी ३ शनि ता० १० मार्च - चांदी तेज होके मन्दी।
फाल्गुनसुदी ५ सोम० ता० १२ मार्च-- चांदीमें कोई लाइन चलेगी।
फाल्गुनसुदी ५ मं० ता० १३ मार्च— गुड़, अलसी, सरसों, गेहूं, तेजी से मंदी हो।
फागुण सुदी ६ बुध तारीख १४ मार्च चांदी, रुई मंदी हो के तेज।
फागुण सुदी सप्तमी बृहस्पति ता० १५ मार्च तेल, चांदी तेज, गुड़, सरसोंमें मंदी हो।
फागुण सुदी ८ ता० १६ मार्च, चांदी मंदी।
फगुण सुदी ९ शनि ता० मार्च, चांदी मंदी होके तेज। गुड़, सरसों तेज।
फागुण सुदी ११ सोम, ता० १८ मार्च चांदी तेज, यहां पर प्रत्येक वस्तुओंमें भारी उथल-पुथल हो।
फाल्गुण सुदी १२ मंगल ता० २० मार्च, चांदी कुछ मंदी होके तेज। वायदा के व्यापार की वस्तु तेज होंगी।
फागुण सुदी १३ बुध, ता० २१ मार्च, मंदीकारक।
फागुण सुदी १५ शुक्र, ता० २३ मार्च, रुई, मंदी, चांदी, अन्न शेअर तेज।

फाल्गुण मासका सारांश

इस मास चांदीमें कई बार कई इकतरफा लाइनें चलेंगी। विशेष कर रुख तेजीका जंचता है। गुड़में भी इस मास अच्छी तेजी रहना सम्भव जंचता है। अन्न ता० १४ से मंदीकी ओर चलेंगे।

चैत्र मास

चैत्रवदी १ शनि, ता० २४ मार्च, चांदी तेज।
चैत्रवदी ३ सोम ता० २६ मार्च शामको चांदी, सरसों, मूंग, उड़द, गुड़, अन्न मंदे, रुई तेज।
चैत्रवदी ४ मंगल ता० २७ मार्च गुड़ तेज।
चैत्रवदी ५ बुध ता० २८ मार्च, गेहूं, चांदी, रुई तेज।
चैत्रवदी ७ बृहस्पति, ता० २९ मार्च शाम को सोना, तेज। रूई, सरसों, गुड़, अन्न, चांदी मंदी।
चैत्रवदी ८ शुक्र ता० ३० मार्च, हर वस्तु मंदी हो।

चैत्रवदी ६ शनि ता० ३१ मार्च, तिलहन पदार्थ, गुड़, अन्न, रुई अरहर आदि दालकी वस्तु तेज हों, चांदी तेज होके मंदी हो। कुछ शान्ति का वातावरण बनेगा।

चैत्रवदी ११ सोम ता० १ अप्रैल, गेहूं तेज हो, मूग, मोठ तेज। चावल, चांदी, गुड़, सरसों आदि मंदी हो।

चैत्रवदी १२ मंगल ता० २ अप्रैल, चांदी तेज।

चैत्रवदी १३ बुध ता० ३ अप्रैल, चांदी मंदी।

चैत्रवदी ३० शुक्र ता० ५ अप्रैल, चांदी तेज होके रात को मंदी।

चैत्र शुक्ल सम्वत् २००८ वि०

चैत्रसुदी १ शनि ता० ८ अप्रैल रुई, अन्न, अलसी, सरसों, चांदी तेज।

चैत्रसुदी ३ सोम ता० ६ अप्रैल रुई मंदी हो। चांदी में १०)-१५) की इकतरफा लाइन निकलेगी। अन्न तेज। यहांसे ८-१० दिनके अन्दर मोटर या रेलोंमें एक्सीडेन्ट दुर्घना अधिक होंगी।

चैत्रसुदी ४ मंगल ता० १० अप्रैल रुई तेज अन्न, तिलहनादि पदार्थ तथा दाल वाली वस्तु, गुड़ तेज हों।

चैत्रसुदी ६ वृ० ता० १२ अप्रैल, चांदी मंदी होके तेज।

चैत्रसुदी ७ शु० ता० १३ अप्रैल चांदी तेज।

चैत्रसुदी ८ शनि ता० १४ अप्रैल गुड़, तेल, रुई, चांदी तेज।

चैत्रसुदी १० सोम ता० १३ अप्रैल चांदी मंदी।

चैत्रसुदी ११ मंगल ता० १७ अप्रैल यहां से गुड़, सरसों, में इकतरफा लाइन निकलेगी, चांदी मंदी होके तेज।

चैत्रशुक्ल ११ बुध ता० १८ अप्रैल सब वस्तु मंदी होके शामको तेज हों।

चैत्रसुदी १२ वृह० ता० १४ अप्रैल, प्रत्येक वस्तु तेज हो।

चैत्रसुददी १५ शनि ता० २१ अप्रैल, रुई मंदी, सब वस्तु तेज हों।

सारांश चैत्र मास

इस मास ता० २६ मार्चसे सरसों आदि तिलहन में मंदी की लाइन चलेगी। दक्षिणके देशोंमें उत्पात होने की सम्भावना है। ता० १७ अप्रैलसे सरसों गुड़ आदि कई वस्तुओंमें इकतरफा लाइन बनेगी। चांदीमें कई कई बार तरफा लाइनें बनेंगी।

होली

[श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र]

[१]

चिर जीओ फागुन को रसिया।
जब लों सूरज चन्द उजैरी,
तब लों ब्रजमें फिर बसिया।
नित-नित आओ होरी खेलन,
नित गारी नित ही हंसिया।
'हरिश्चन्द्र' इन नैन सदा रहौ,
पीत पिछौरी कटि कसिया।

[२]

नित-नित होरी ब्रज में रहौ।
विहसत हरि-संग ब्रज-जुवतिन गन,
सदा आनन्द लहौ।
प्रफुलित फलित रहौ बृन्दाबन,
मधुप कृष्ण गुण कहौ।
'हरिश्चन्द्र' नित सरस सुधामय,
प्रेम प्रवाह बहौ।

व्यापार-रुख का साप्ताहिक विवरण

ता० १८ जनवरी से १६ अप्रेल १९५१ तक

[ले० — ज्यौतिषाचार्य, रमलाचार्य, प्रो० श्री गणेश विद्यासागर दैवज्ञ]

तारीख १८ जनवरी से २४ जनवरी

कुम्भ पर शनि, मंगल, गुरु की युति चालू है, यहां मंगल द्वारा चन्द्रमा देखा गया है, शुक्ल पक्षमें तिथि वृद्धि होना तथा पूर्णिमा मंगलवारको आना सिवाय तेजीके मंदी का ग्रह फीका पड़ गया है। आप जिस वस्तुके व्यापारी हैं, उसका ही व्यापार माल पौतेका कर डालिये, बीच-बीचमें मंदीके झटके हर वस्तुमें आयेंगे, लेकिन मंदी ठहरेगी नहीं और भाव बढ़ेंगे। खास बात यह है कि जो भाव ता० १८ को होंगे उससे तेज ता० २४ को मिलेंगे, शेयर १५)-२०) रुई ७)-८) काली मिर्च ८)-१० चांदी ३)-३॥) सुवर्ण ॥।) १) अलसी, मूंगफलीमें १)-१॥) के अनुमान तेजी दिखाई देगी।

तारीख २५ से ३१ जनवरी तक

ता० २६ को कुम्भ राशि पर चार ग्रहों का संगठन होगा, यहां दो ग्रह मंदीके तथा दो तेजीके हैं, यहां दोनों तरफ बाजार चलेगा, इस दुतर्फा मार्केटमें कभी तेजी कभी मंदी कारक ग्रहोंमें बल अधिक रहेगा, आये उछाले मालका बेचाण कर हाथों-हाथ नफा खाते रहो तो २५-२६, को मंदीके झटके आयेंगे और २७ से २९ तक तेजी का उछाला है, तो ३०-३१ को दोनों तरफ बाजार चलेगा।

तारीख १ से ७ फरवरी तक

अष्टमी मंगलवारी, गुरु हर्शलका त्रिकोण तथा अन्य योग तेजीके चालू हैं, केवल ता० ५ को चन्द्र, बुध युति होगी, यह आये हुए उछालोंमें मंदीका वातावरण दिखा दें परन्तु ता० ६ को अमावस्या मंगलवारको व्यतिपात तथा पांच ग्रहोंकी पंचायत सिवाय तेजीके दूसरी बात नहीं बोलते। नेक सलाह यह है कि आप घटे भावोंमें माल पौते रखें तो निश्चय जानना, विशेष खुलासा व्यापार रुख त्रैमासिक पत्रमें देखना मूल्य तीन माहका ५॥)रु० सिर्फ।

८ फरवरी से १४ तक

ता० ७।८की रात्रीको मंगल गुरुकी युति अंशात्मक होगी शनि नैपचूनसे चन्द्रको बाण बेध होगा ता० ७से ११ तक बाजारमें अच्छी घटा बढ़ी चलेगी। नजराने द्वारा व्यापार करना। ता० १२ १३ चन्द्रवारको रात्रिमें कुम्भ पर सूर्य आवेगा यह भी मंदी कारक होजायेगा। और अच्छा झटका लगेगा, तथा गुरु और शुक्रकी युति ता० १२को होगी यह भी मंदी लाये बगैर नहीं रहेगा। आई हुई मंदीका नफा खाकर ता० १४को प्रातः माल पौते करलो मालदार बन जाओगे।

१५ फरवरी से २१ तक

आपने जो ता० १४ को माल खरीद किया है उसका मुनाफा ता०१६को बंद बाजार तक खालेना अच्छा है। ता०१७ को मंगल राहुकी युति होगी यह ऊंचे भावोंको नीचा करदें इसका असर वैसे तो अधिक मंदी इस खतरे के समयमें आनेकी नहीं फिर भी ऊंचे में बेच घटपर माल पौते करो और नफा बढ़ाओ।

२२फरवरी से २८ तक

योग संयोग तो गत कलमके मुवाफिक ही चलरहे हैं, आप अधिक मंदीके भरोसे न रह कर ता०२४ के३ बजे

से ता० २६के बंद बाजार तक तेजी खालेना अच्छा उछाला आयेगा। फिर ता० २७, २८ को समान भाव पड़े रह जायेंगे हर वस्तु मात्र में।

१ मार्च से ७ तक

ता० १ को चन्द्र की करतूत मंदी लायेगी लेकिन ता २की शनि मंगलकी प्रतियुति होगी यह एकवार मामूली उछाला दिखाकर बाजारको मंदीकी तरफ कर देगी। ता. ६को चन्द्र बुध युति होगी यह भी मंदीका ही कारण है। तिथि क्षय मंदी करदेगा। बुध वारी अमावास्या भी बाजारको मंदा करनेमें है। यहां देखा गया तेजीके योग कम तथा मंदीके योग अधिक दिखाई देते हैं ऐसे समयमें किस प्रकारसे व्यापार करोगे स्वयम् विचारलो चतुर व्यापारिकोंको इशारा काफी होता है।

८ मार्च से १८ तक

गुरु नेपच्यूनका षडष्टक ता० ७को होगा, अच्छी मंदी शेयर सुवर्णमें लाने वाला योग है। ता. ८को गुरु राहुकी अंशात्मक युति होगी यह भारी घटा बढ़ीका चोल है। ता. ११को सूर्य राहुकी अंशात्मक युति होगी यह भी मंदीका कारण बनता है। जिसका असर ता.१४ तक रहेगा। इस पक्षमें मंदी के योग अधिक तथा तेजी के कम दिखाई देते हैं, फिर समय आप भी बाजार रुख तथा तार, फोन, रूटर की खबर लेकर व्यापार करें ता.१४को कुछ तेजीका योग भी आया है। ता. १६ से १८ तक बाजार समान पड़े रहेंगे।

१६ मार्च से २५ तक

आपको साफ बतला देते हैं आई हुई मंदी अब धीरे २ अटकना चाहती है। आप घटे भावोंमें ता.२१-२२को माल पौते रखना फिर तेजी ता. २३ से २५ तक एकालाईन चलेगी कारण यहां तेजी वाले ग्रह फिर जोर लगा रहे हैं, लेकिन बलवान नहीं है मंदी वालोंमें भी कोई दम नहीं ऐसे समय बाजार की टोन भी देखलें और चार व्यापारी मस्वरा करके व्यापार करें करावें।

२६ मार्च से १अप्रेल तक

ता. २६को गुरु का उदय होना बुध शुक्रका ता २८ को राशि युति होना मंदी कारक है तथा मंगल षष्ठि का क्षय होना यहां -दो योग मंदीके तथा एक योग तेजी का हैं। ग्रह गणना मंदीका असर अधिक तथा तेजी कम बोलती है। हमने पूरे महिने मार्चका हिसाब देखा तो इस मासमें मंदीके ग्रह अधिक तथा तेजी के कम दिखाई देंगे इस कारण आये उछाले बेच नफेमें सुलटते रहो यह सूर्य-मुखी चाल है लेकिन मंदी अधिक है याद रखना।

२ अप्रेल से ८ तक

बाजार बहुत समयसे मंदीकी तरफ चला जा रहा है और आपभी मंदी २ लिखनेमें घवरा उठे हो लेकिन देखो शेयर, रुई सुवर्ण, कालीमिर्चमें मामूली उछाले आते रहेंगे। लेकिन तेजीके स्टेन्ड पर बाजार टहरेगा नहीं आये उछाले बेचो और घटे भाव पौते कर नफा बढ़ाओ।

६ अप्रेल से १५ तक

अब हम आपके खुले शब्दोंमें चांप बताये देते हैं देखो ता. ६को शुक्र वृष राशिमें जायेगा और शनिसे त्रिकोण योग बनायेगा जो भाव ता. ६को चांदी सुवर्ण गुवार, गुड़, खांड़, अलसी, सरसों, शेयर रूईके होंगे उससे अधिक अच्छी तेजोमेंता.१६को बाजार देखोगे जो व्यापारी ता६ को खरीदेगा और ता १६ को बेचेगा वह अवश्य लाभ में रहेगा। खास कर तेजी ता.६ १०, १३, १४, १५ को आकर रहेगी।

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

चांदी सोना गुड़ रुई शेयर आदि की तेजी-मंदी

[लेखक — ज्यो० भू० श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा दैवज्ञ]

[१] प्रथम सप्ताह—

सं० २००७ पोष शुक्ला १० बुधवार ता० १७ जनवरीसे २३ जनवरी तक घटबढ रहेगी। तेजीसे मन्दी होगी। ता: १७ को रुईके सिवाय हरेक वस्तुओंमें तेजी। ता० १८को दो बजेसे तेजी। ता० १९को घटबढ़ रहेगी। ता २०-२१ को शेयर में तेजी और वस्तु साधारण रहेगी। ता० २२ को मन्दी, २३ को तेजी। यहां शनिका वक्र उत्पात करता रहेगा राजा प्रजामें विरोध।

[२] द्वितीय सप्ताह—

ता० २४ से ३१ जनवरी तक पहले ३-४ दिन तेजी पीछे मन्दी। २४-२५को तेजी। ता० २६-२७को अच्छी घटबढ़ होगी। एक दिन तेजी एक दिन मन्दी होगी। ता० २९ को बहुत अच्छी घटबढ़ होगी दौतरफा लगावें। ता० ३०-३१में एक अचूक तेजी। ३१को ३ बजेसे अचूक तेजी।

[३] तृतीय सप्ताह—

ता० १ से ६ फरवरी तक वर्षा बिजली का उत्पात रहेगा और हरेक वस्तुमें तेजीका रूप रहेगा। ता० १को तेजी, २को मन्दी हो वहां खरीदो,मन्दी होके तेजी होगी। ता०३-४को साधारण। ता०५को तेजी हो कर मन्दी होगी। ता० ६को चांदीमें एक तेजीका पूरा उछाला आवेगा। गुड़, खांड तेज, रुई शेयरमें घटबढ़ रहेगी। मादक पदार्थ बहुत तेज।

[४] चतुर्थ सप्ताह—

ता० ७ से १५ फरवरी तक अच्छी घटबढ़से तेजी। सोना चांदी अवश्य तेज। ता०७ को तेजीसे मन्दी। ८को दौतरफा लगावें या मन्दीमें खरीदो। ता० ९को घटबढ़। १०को तेज। ता०१२ को २ बजेसे हरेक वस्तुमें अच्छी घटबढ़से तेजी। ता० १३को २बजे तक मन्दी ता० १४-१५को शेयर जरूर तेज। ता० १४-१५में रुई जरूर मन्दी। ता० १५ को फीचर अवश्य मन्दा हो सकता है ८-९।

[५] पांचवां सप्ताह—

ता० १६से २१ फरवरी तक चांदीमें अघटित घटना होगी। ता० १८-१९-२०-२१को अच्छी घटबढ़ होगी, पहले मन्देसे तेजी होगी। १९-२१को अच्छी तेजी।

[६] छठा सप्ताह—

ता० २२से २८ फरवरी तक मन्दी रहेगी। बढ़े वहां बेचो। गुड़, खांडमें मन्दी नहीं होगी। ता० २७ तक ही मन्दी समझो। ता० २२-२३को अच्छी घटबढ़ होगी। ता० २४-२५-२६ मन्दी होगी। ता० २७को घटबढ़से मन्दी। ता० २८को चांदीमें अचूक तेजी। इन दिन दौतरफा लगावें, अच्छी घटबढ़ होगी।

[७] सातवां सप्ताह—

ता० १से ७ मार्च तक सोना, चांदी तेज और वस्तु मन्दी या साधारण रहेगी। ता० १को अच्छी तेजी। २ या ३को अच्छी मन्दी। ता० ५तो तेजी। ६को घटबढ़से मन्दी। ७को सिवाय रुईके हरेक वस्तु तेज। ता० ३को फीचर अच्छा ज्यादा आवेगा। मन्दी तेजीमें हमारा ध्यान तेजी पर है। ता० ६को सायंकाल ३ बजेसे मन्दी।

(८) आठवाँ सप्ताह—

ता० ८ से १६ मार्च तक अच्छी घटबढ़ होगी, पहले मन्दी होगी। ता० ८को मन्दी। ९ को अच्छी

घटबढ़ होगी। ता० १०-११को तेजी। ता० १२-१३को शेयरोंके सिवाय अचूक मन्दी। १४-१५में चांदीमें जरूर मन्दी होगी।

(९) नौवां सप्ताह--

ता० १७से २३ मार्च तक हरेक वस्तुमें घटबढ़ ज्यादा होगी। ता० १७को हरेक वस्तु तेज। १९-२०में घटबढ़ बहुत होगी। ता० २१को तेजी। २१या२२को ६ का वा पूर्णका अंक आवेगा। ता० २२को मन्दी। २३को अच्छी घटबढ़से तेजी। यहां पर उत्पात अधिक होगा। मंगलका अस्त बीयाबानेमें अच्छी तेजी करेगा।

(१०) दसवां सप्ताह---

ता० २४से ३१ मार्च तक हरेक वस्तुमें या रुई चांदीमें मन्दी। ता० २४-२५में मन्दी। ता० २६को तेजी होके मन्दी। २७को रुई और चांदीके भाव अनिश्चित रहेंगे। २८-२९को मन्दी लगावें या दौतरफा लगावें अच्छी घटबढ़से ता० ३१को तेजी होगी। ता० २९-३०को अच्छी मन्दी।

[११] ग्यारहवां सप्ताह—

ता० १से ६ अप्रैल तक अच्छी तेजीकी संभावना है। यदि अधिक तेजी नहीं होगी तो भी साधारण तेजी जरूर होगी। बियाबाना अवश्य तेज। ता० १-२ तेजी। ता० ३को मन्दी। ४को तेजी होगी, ४बजेसे मन्दी होगी। ता० ५-६को शेयर तेज। और वस्तु को दोतरफा लगावें लाल वस्तु मूंगामें तेजी रहेगी। ता० ६को अच्छी घटबढ़ चांदी सुवर्ण तज। शेयरोंमें अचूक तेजी।

[१२] बारहवां सप्ताह—

ता० ७से १५ अप्रैल तक घटबढ़से तेजी। ता० ७को विक्रम नव वर्षारंभ होता है यह शनिवारसे प्रारंभ होना ६ महीने तक पूर्ण अनिष्ट प्रद रहेगा। ता० ७-९ तेजी। ता० १०-११को अच्छी घटबढ़ रहेगी। ता० १२को जो वस्तु तेज हो वह तेज रहेगी। मन्दी वाली मन्दी रहेगी। १३को घटबढ़, १४को अनिवार्य तेजी।

तीन मासका सारांश

सं० २००७ पोष शुक्ला ११ ता० १७ जनवरीसे १५ अप्रैल तक अखिल भूमंडलमें अशांतिका समावेश रहेगा। वर्तमानमें जो कोरियाका युद्ध हो रहा है इसका अन्त फाल्गुनमें जाके ही जायेगा। अभी विश्वव्यापी युद्ध छिड़नेमें १ वर्षकी और देरी है। सं० २००७में यूरोप देशका सर्वनाश अनिवार्य है

व्यापारी वर्गको

इन तीन महीनोंमें मन्दीका व्यापार नहीं करना चाहिये। कोई ऐसी बात नहीं है कि इन तीन महीनोंमें मन्दी आयेगी ही नहीं, परन्तु मन्दीका स्थायी रूप नहीं होगा। इसलिये मन्दीमें कार्य करनेसे फंसना पड़ेगा। इन ३ महीनोंमें अन्न वस्त्रकी भयंकर कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। हरेक वस्तु मन्दी हो वहां खरीदना अच्छा है। ता० १९-२० फरवरीसे २५ फरवरी तक एक मन्दीका पूरा झटका लगेगा। एक मन्दी ८ मार्च से है, बस ये दो मन्दी के स्थान हैं। आगे ईश्वराधीन है।

★

नक्षत्रों पर होने वाले ग्रहवेधका फल

[ले०—श्री चाननरामजी शर्मा वैद्य]

गतवर्ष भी वक्री शनिके वेधसे सरसों सोनामें तेजी चली थी। मंगलके वेधसे गुड़में आश्चर्यजनक उछाला आया था और वेधके हटते ही डबल मंदा बोल गया था। उसी प्रकार इस वर्षमें भी योग बन रहा है। २२ अक्तूबर १९५०से राहुका पुनर्वसुको वेध हो चुका है। तभीसे रुई सोनेका बाजार मजबूती पकड़े हुए हैं और १३ जनवरीको शनि वक्री होकर पुनर्वसुको वेध करने लगेगा, तभीसे रुई सोनेमें तेजी चलनी प्रारम्भ होगी, यह २८ मई ५१ तक प्रत्येक दशामें सोने रुई कपासमें तेजी बनाये रखेगा। बीच बीचमें ग्रह योगसे मंदीके झटके अवश्य लगते रहेंगे पन्तु बाजार गिरकर फिर ऊंचाईकी ओर ही रुख बनाता रहेगा। मंगलका वेध शनि वक्री और गुरु राहु युति यह सरसों गुवारा में भी भयंकर उथल पुथल करेंगे।

★

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

तीन मासके ग्रहयोगोंका संसार पर प्रभाव

भारतीय गणराज्यका दूसरा वर्षलग्न

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

गताङ्कके इसी स्तम्भमें आश्विन शुक्लमें राक्षसगणमें शुक्रास्तके फलका उल्लेख करते हुए लिखा था कि–"हिन्दु देशमें विग्रह, संसारमें युद्ध और दुर्भिक्षका भय बढ़ेगा।" तदनुसार कार्तिक कृष्णमें संसारके एकमात्र हिन्दू-राष्ट्र नेपालमें विग्रह आरम्भ हो गया, संसारमें युद्धका भय बढ़ने लगा और अन्नसमस्या कठिन होती जा रही है। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षमें शुक्रोदय और तिथिक्षयका फल बतलाते हुए लिखा गया था कि—"किसी श्रेष्ठ महापुरुष की मृत्यु, छत्रभंग और दुर्भिक्ष होगा।" तदनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षमें ही ता० १५ दिसम्बरको स्वतन्त्र भारतके निर्माता सरदार श्री वल्लभभाई पटेलका देहावसान हो जानेसे गणराज्य पर वज्राघात हुआ। इसी अनिष्ट भविष्य की सूचना हमने आजसे एक वर्ष पूर्व अपने 'श्रीविश्वविजय-पंचाग'में स्पष्ट रूपसे दी थी। गणराज्यकी जन्मकुण्डली का भविष्य विवेचन करते हुए वर्तमान सं० २००७के 'श्रीविश्वविजय-पंचाग' पृष्ठ ३५ पर स्पष्ट लिखा हैकि— "इसी अवधिमें गणराज्यके किसी महान् शासकका निधन योग भी बन रहा है।"

इसी पंचागमें आगे पृष्ठ ५६ पर मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष के फलमें स्पष्ट रूपमें संकेत किया गया है कि—"केन्द्रीय सरकारके गृह विभागमें परिवर्तनकी सम्भावना है। "'किसी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महापुरुषके लिए अनिष्ट सूचक है।" इसीको लक्ष्य रख कर हमने गताङ्क में महामान्य श्रीराष्ट्रपति और महामात्यकी वर्षकुण्डलीके भविष्य-विवेचनमें "प्रियजन-वियोगकी" सूचना दी थी, अस्तु।

अब इन तीन मासकी ग्रहस्थिति और २६ जनवरी १९५१को प्रवेश होने वाले गणराज्यके दूसरे वर्ष लग्न की कुण्डली भी हमें संसार और भारतीय गणराज्यके लिए विशेष समाधानकारक दिखाई नहीं दे रही। इन्हींका कुछ शास्त्रीय विचार हम पाठकोंकी सेवामें यहां प्रस्तुत कर रहे हैं—

कन्या राशिके शनिका फल हम 'श्रीस्वाध्याय' वर्ष ६ अङ्क ४ (द्वि० आषाढ़ सं० २००७)में विस्तृत रूपमें बता चुके हैं। वहीं पर भाद्रपद और आश्विन मासकी चतुर्ग्रही षड्ग्रही योगके जो-जो अनिष्ट परिणाम ६ मास तक बताये थे, वे घटित होते जा रहे हैं। अब इसी पौष शुक्ल ५को शनि कन्या राशिमें वक्री हो रहा है, यह ज्येष्ठ कृ० ८ तक वक्री रहेगा, तब तक संसारमें विग्रह दुर्भिक्ष और अनेक उत्पात होंगे। काश्मीर और पंजाब पर इसका अनिष्ट प्रभाव अधिक होगा। इस अवधिमें काश्मीरमें जन-धनका विनाश और पंजाबकी राजनीतिमें गतिरोध उत्पन्न होगा। मंत्रिमण्डलमें उलट-फेर होगा। शासनतन्त्र संकटग्रस्त दिखाई देगा। वर्तमान मन्त्रिमण्डलको अपना अस्तित्व स्थिर रखना कठिनप्राय प्रतीत होगा। पौष शुक्ल ७ रविवारको मकरसंक्रांति अन्न धान्यादि पदार्थोंके मूल्यमें वृद्धि करने वाली है। यथा—

पौषमासे यदा सूर्यो मृगे संक्रमते हि वै।
तस्मिन्दिने रवेर्वारस्तदा धान्य महर्घता॥

अन्यच्च—

पौष मासेऽर्कसंक्रान्तौ रविवारो यदा भवेत्।
धान्यमूल्यं द्विगुणितं तदा भवति नान्यथा॥

माघकृष्ण और शुक्लपक्षकी दोनों प्रतिपदाओंको बुधवार है, यह तीन मास तक अन्नकी महर्घता और आगामी वर्षके लिए अनिष्ट सूचक है। यथा—

माघादि दिवसे वारो बुधो भवति चेत्तदा।
मासत्रयं महर्घं स्याद्धाविवर्षं विनश्यति॥

माघ कृष्ण और शुक्ल पक्षकी दोनों चतुर्थी तिथियोंको

शनिवार भी धान्य नाश और चौर अग्नि मृत्यु भयकारक है —

चतुर्थी माघमासस्य शनिवारेण संयुता ।
दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्निभयं धान्यविनाशनम् ॥

पौष शु० ७ से माघ शु० १५ तक (१४ जनवरीसे २१ फरवरी तक) कुम्भका मंगल भी सब धान्योंको महँगा करता है ।

"भूसुतः कुम्भराशिस्थः सर्वधान्य महर्घता ।"

माघ कृष्ण अमावस्याको मंगलवार राजा प्रजामें अशांति और भयका सूचक है । यथा—

माघस्य मासे रविजे कुजे वा
भवेदमा शीतकरःप्रिया वा
लोकः सशोकः क्षितिपाललोकः
परस्परं युद्ध्यति शस्त्रसंघैः ॥

माघ शुक्ल द्वितीयासे फा० कृष्ण ४ तक पू० भा०में (एक राशि नक्षत्र पर) मंगल राहुका योग संसारमें भय तथा अन्न और वर्षा नाशक है । यथा —

राहुरङ्गारकश्चैकराशिऋक्ष गतौ तथा ।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते ॥

यहां मंगल राहुके साथ ही गुरुदेव भी पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रमें ही विराज रहे हैं, ये दुर्भिक्ष और अशांतिको निवारण करनेमें कुछ सहायक होंगे ।

फाल्गुन कृष्ण ७ को कुम्भ राशिमें गुरु अस्त हो रहा है यह प्रजा पीड़ा और गर्भवती स्त्रियोंके लिए कष्ट प्रद रहेगा । यथा—

"कुम्भे गुरौ ह्यस्तमयात्मजाया: पीडा परं गर्भवती च जाया'

फाल्गुन कृष्ण ३० ता० ७ मार्च १९५१ को कुम्भराशि में सूर्य चन्द्र बुध गुरु राहु का पंचग्रह योग बन रहा है, यह भी संसारके लिए अनिष्ट सूचक है । दुर्भिक्ष विग्रह और अराजकताका भय व्यापेगा । आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात चोरी डाके हत्याकाण्ड भ्रष्टाचार अन्याय और आर्थिक संकट एवं रोगादि आतंकसे प्रजा त्रस्त रहेगी । कर्क और मीन राशि वाले पुरुषों तथा राष्ट्रोंके लिए यह पंचग्रह योग विशेष क्लेश कारक रहेगा । सिंह तुला और वृश्चिक राशि वालोंके लिए भी चिन्ताकारक है, अतः उक्त राशि वाले सज्जन इस अवधिमें सतर्क रहें ।

फाल्गुन शु० १५ को गुरु मीन राशिमें (स्वक्षेत्रमें) प्रवेश करेगा । गुरु संसारके ज्ञान-विवेकका अधिपति है, यह जब बलवान् होता है तो संसारके शासनसूत्र-सञ्चालक अपने हिताहितको समझकर विवेकसे कार्य करने लगते हैं, अतः आशा है कि यहांसे आगे विश्वशांतिके प्रयत्न अधिक होंगे और गुरु विश्वको विनाशकी ओर जानेसे बचा लेगा । किन्तु स्वक्षेत्रमें प्रवेश होते समय गुरुदेव निर्बल (अस्त) हैं अत: आरम्भमें अपनी शक्तिका पूर्ण परिचय न दे कर आगे उत्तरोत्तर सबल बनते जावेंगे ।

निष्कर्ष—सारांश यह है कि इन तीन मासोंके ग्रह योग संसारके लिए अच्छे नहीं है । भारतमें अन्नसंकट आर्थिक संकट रोग उत्पात दुर्भिक्षादिसे प्रजा त्रस्त रहेगी । भारतकी पूर्वी सीमा दक्षिण प्रदेश पंजाब काश्मीर और राजस्थानमें अशांति बढ़ेगी । कहीं अवर्षण कहीं अति-वर्षण तो कहीं शीत टिड्डी आदि के उपद्रवसे हानि होगी । फाल्गुनमें पंचग्रह योग होनेसे यह मास संसारके लिए अशांतिकारक रहेगा । हर्षोल्लास प्रधान होलीका त्यौहार इस वर्ष नीरस-सा दिखाई देगा ।

गणराज्यका दूसरा वर्षलग्न

गत वर्ष हमने सं० २००७के पंचांग और 'श्रीस्वाध्याय' के वसन्ताङ्क (चैत्र सं० २००७के अङ्क) में गणराज्य की जन्मकुण्डली देकर दो पृष्ठोंमें भारतीय गणराज्यका विस्तृत भविष्य लिखा था । वहां 'आरम्भिक पांच वर्ष कठिनाई के' शीर्षक देकर स्पष्ट लिखा गया है कि—

"इस गणराज्यके सामने अनेक विषम समस्याएं उत्पन्न करके कठिन अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित करेगा । ··· इसी अवधिमें गणराज्यके किसी महान् शासकका निधनयोग भी बन रहा है । ···" इत्यादि ।

अब इस वर्ष भारतीय गणराज्यका जन्मलग्न मीन आगामी सं० २००८ की वर्षलग्न कुण्डलीमें अष्टम गया है । लग्नेश राज्येश गुरु भी सूर्य चन्द्रमाके साथ अष्टम (मृत्यु) भावमें विराजमान हैं । एवं शत्रु भावस्थ सिंहराशि वर्षलग्नमें गई है । यह योग इस वर्षमें भारतीय प्रजा एवं

जनतन्त्री शासनको विषमस्थितिमें फंसाने वाला है। केन्द्रीय और प्रांतीय मंत्रिमण्डलोंमें उलट-फेर होगा। किसी प्रधान पुरुषके लिए इस वर्ष भी अपघातयोग बन रहा है। हमारी यह आशंका इस कारण भी प्रबल हो जाती है कि गणराज्यके प्रथम वर्षमें ही अभी गत मार्ग० शु० ७ ता० १५ दिसम्बरको लौहपुरुष सरदारका शरीरांत 'पञ्चक-नक्षत्र' में हुआ है। हमारे प्राचीनाचार्योंने 'पञ्चक' में मृत्यु होना उस परिवार और राष्ट्रके लिए अनिष्ट सूचक माना है—इसलिए दोषशान्त्यर्थ शवदाह संस्कारके साथ पुत्तल विधान क्रियाका उल्लेख है। परन्तु हमें विश्वास नहीं कि धर्मनिरपेक्ष-राज्याधिकारियोंने सरदारकी अन्त्येष्टिक्रियाके समय अनिष्टशान्त्यर्थ यह धार्मिक क्रिया भी सम्पन्न की हो, अस्तु।

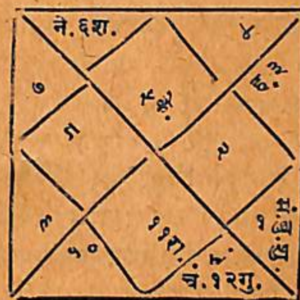
गणराज्यके दूसरे वर्षप्रवेश लग्नकी कुंडली और वि० सं० २००८ की वर्ष प्रवेश लग्न कुंडली निम्न है—

(१) माघ कृष्ण ३ शुक्रवार ता० २६ जनवरी १९५१ ई० को इष्टघट्यादि २३।८ पर मिथुन लग्नमें भारतीय गणराज्य (प्रजातन्त्र) को दूसरा वर्ष प्रारम्भ होगा। इस वर्षकी ग्रह स्थिति यह है—

गणराज्यकी वर्षलग्न कुण्डली



(२) चैत्र कृष्ण ३० शुक्रवार ता० ६ अप्रैल १९५१ ई० को इष्ट घट्यादि २५।४० पर सिंह लग्नमें नवीन चान्द्रवर्ष (सं० २००८ वि०) प्रारम्भ होगा। वर्षलग्न कुंडली यह है—



गणराज्यका जन्मलग्न
[२६ जनवरी १९५० ई०]



गणराज्यके द्वितीय वर्षलग्नमें पराक्रमेश सूर्य अष्टमस्थ, प्रजासत्तात्मक धनेश चन्द्रमा केतुसे पीड़ित और सप्तमेश राज्येश गुरु राहुके मुखमें षष्ठेश मंगलसे इत्थशाल योग कर रहा है। अतः इस वर्ष भारतीय प्रजाको भयंकर आर्थिक संकटका सामना करना पड़ेगा। मध्यम वर्गीय प्रजाका जीवन और प्रतिष्ठा संकटापन्न स्थितिमें होगी। राजसत्तात्मक सूर्यका चन्द्रमासे षडष्टक योग और राज्येश गुरुसे प्रतियोग है अतः इस वर्ष राजाप्रजाका वैमनस्य उग्ररूप धारण करेगा। बाह्यभयकी अपेक्षा इस वर्ष भारतको आन्तरिक भय अधिक है। पारस्परिक मतभेद एवं अधिकारारूढ़ होनेकी प्रतिस्पर्धासे अनेक अप्रिय प्रसंग उपस्थित होकर शक्तिका ह्रास होगा। राज्यकी ओर से अनेक प्रकारकी सुन्दर नवीन सुखकर योजनाएं बनाई जावेंगी, परन्तु कहीं अर्थाभावसे तो कहीं जनताका सहयोग न मिलनेसे वा राष्ट्रकी विषमस्थितिसे वे पूर्णरूपेण सफल न हो सकेंगी। नये-नये करों (टैक्सों) के बोझसे प्रजा त्रस्त रहेगी। भारतके पूर्व और पश्चिमोत्तरीय

विभागोंमें अनेक प्रकारके उपद्रवोंसे अराजकता जैसी स्थिति रहेगी। नेपाल, बंगाल, मद्रास, उड़ीसा, आसाम, बिहार और काश्मीरके लिए यह वर्ष विशेष अशांतिकारक रहेगा। सैनिक व्यय बहुत बढ़ेगा। सुरक्षा शस्त्रास्त्र निर्माण भूमि सम्बन्धी उत्पादन योजना एवं यांत्रिक सामग्रीमें भी पर्याप्त प्रगति होगी। सर्वसाधारण जनताके जीवन-निर्वाहमें राज्यकी ओरसे कोई विशेष समाधानकारक सुविधा प्राप्त न होनेसे प्रजामें क्षोभ बढ़ कर कई जगह एकाधिकबार अवांछनीय कांड होंगे। शासनमें सर्वत्र भ्रष्टाचार पदलोलुपता स्वार्थपरता एवं अधार्मिकताका बाहुल्य दिखाई देगा। धर्मभावमें मंगल राहुका योग इस वर्ष प्रजातन्त्री शासनको धर्मपरायण न होने देकर पारस्परिक कलह उद्वेग एवं पापबुद्धिमें प्रवृत्त रख शक्तिका ह्रास करायेंगे। यथा—

पापबुद्धिर्भवेद्राज्ञामुद्वेगो विभवक्षयः।
कलहो राजवर्गेश्च नवांशे धरणीसुते॥
विद्वेषश्च वपुः पीडा भयं राजादि पीडनम्।
धर्मकार्ये विलम्बश्च राहुर्धर्मगतो यदि॥

संक्षिप्त द्वादशभाव फल—

[१] लग्नमें हर्शल, शनि नेपच्यून और रोगेश मंगल से दृष्ट है, तथा चन्द्रमा केतुसे पीड़ित है, अतः इस वर्ष प्रजाका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संतोषप्रद न रहेगा। सांसर्गिक रोग उदरविकार महामारी और किसी नये घातक रोगसे भी बहुत हानि होगी। आरम्भिक चार मासोंमें (२६ मई तक) राष्ट्रमें अनेक प्रकार से आतङ्क बढ़ेगा।

[२] धनेश चन्द्रमा केतुसे पीड़ित है और धनभाव शनिसे दृष्ट है अतः राज्यके सामने आर्थिक संकट उग्ररूप में उपस्थित होगा। जनसाधारण दरिद्रताके पाशसे मुक्त न हो सकेगा। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पातों [दुर्भिक्ष रोग भूकम्प अग्निकांड जलप्लावनादि] से उध्वस्त प्रजाके कारण भी आर्थिक संकट बढ़ेगा। मुद्रास्फीति अपना कुप्रभाव दिखावेगी।

[३] पराक्रम स्थान व्यापारेश राज्येश गुरु और मंगल शुक्र राहु से दृष्ट है अतः भारतके उद्योग व्यवसाय यातायातके साधन एवं विदेशी व्यापारमें पर्याप्त प्रगति होगी। पराक्रमेश अष्टम होनेके कारण प्रजाका साहस शिथिलप्राय होगा, अधिकांश प्रजा निराशावादी दिखाई देगी।

[४] चतुर्थेश बुध केन्द्रमें है अतः खेती बाड़ी तथा भूमि सम्बन्धी कार्योंमें पर्याप्त प्रगति होगी। अधिक अन्नोत्पादनके लिए नयी-नयी योजनायें बनेंगी। परन्तु चतुर्थ भावमें शनि और चतुर्थेश पर शनिकी दृष्टि होनेसे इस वर्ष राज्यकी ओरसे पूर्ण प्रयत्न करने पर भी भारतका कृषि उद्योग पूर्णरूपेण विकसित एवं समाधान कारक न बन सकेगा। कहीं अवर्षण कहीं अतिवृष्टि तो कहीं प्रकृति प्रकोपसे फसलमें हानि होकर अन्नसंकट बना रहेगा। गृहविभागको भी संकटका सामना करना पड़ेगा। वर्षान्त गृहमन्त्रीके लिए अननुकूल रहेगा।

[५] पञ्चमेश दैत्यगुरु शुक्र भाग्यस्थानमें देवगुरु बृहस्पति और मंगल राहुके साथ विराजमान है, अतः बौद्धिक विकास तथा विज्ञानमें अच्छी उन्नति होगी। शिक्षाप्रणालीमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। गुरु शुक्रके कारण इस वर्ष प्राचीन आर्य सभ्यतानुयायियों और नवीन धर्मनिरपेक्षानुयायी प्रजामें पारस्परिक संघर्ष होना संभव है। अन्तमें गुरु अधिक बलवान् होनेके कारण भारतीय सनातन आर्य सभ्यताकी ही विजय होगी।

[६] षष्ठेश भौम नवम भावमें गुरु शुक्र राहुसे युक्त है अतः जल स्थल नभ सेनामें पर्याप्त प्रगति होगी। यहां राज्येशके साथ षष्ठेशका इत्थशाल होनेसे बाह्य एवं आन्तरिक शत्रु हानि पहुंचानेकी ताकमें रहेंगे। अतः प्रच्छन्न शत्रुओं और पड़ोसी मित्रोंसे विशेष सावधानी रखना आवश्यक है।

[७] सप्तमेश गुरु नवममें और सप्तममें बुध है अतः विदेशोंसे भारतका सम्बन्ध सहानुभूतिपूर्ण रहेगा। परन्तु गुरु, राहु और मंगलसे पीड़ित होनेसे भारतको विदेशी मित्रोंसे विशेष लाभ न हो सकेगा। सप्तमभावमें बालसुलभ सौम्यस्वभावका बुध महान् कुचक्री हर्शल नेपच्यूनसे दृष्ट है, यह भारतको व्यापारिक वा राजनैतिक भूलभुलैयामें डालकर प्रच्छन्नरूपेण अनार्य लोगोंके स्वार्थ-साधनका केन्द्र बनानेकी कुचेष्टा करेंगे, अतः भारतको इस षड्यन्त्र से सतर्क रहना होगा।

[८] अष्टमभावमें सूर्य इस वर्ष किसी प्रमुख राजपुरुषके लिये अनिष्टसूचक है । रोग दुर्भिक्ष उत्पातादि द्वारा प्रजा पीड़ित रहेगी । अकाल मृत्यु अधिक होगी ।

[९] भाग्य स्थानमें गु० शु० मं० राहु परस्पर एक दूसरेके विरोधी हैं अत: इस वर्ष भारतीय प्रजाका भाग्य पारस्परिक विरोध वा अनैक्यके कारण अधरमें लटकता दिखाई देगा । सर्वसाधारणजनताके कष्टोंमें कमी नहीं होगी । धार्मिक प्रवृत्तियोंमें भी बाधा उपस्थित होगी।

[१०] राज्येश गुरु भाग्यमें शुक्र, राहु और षष्ठेश-मंगलसे पीड़ित है तथा राज्यभावपर शनिकी वक्रदृष्टि है अतः गणराज्यको अनेक आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा । वर्षके उत्तरार्धमें स्थिति बड़ी गम्भीर होगी । एक छिद्रको बन्द करते ही दूसरी दरार फट पड़ेगी । केन्द्रीय एवं प्रांतीय मन्त्रिमण्डलोंमें अकल्पित उलटफेर होंगे । षष्ठेश मंगल और राहुका राज्येशसे इत्थशाल होने के कारण भूसम्पत्तिके स्वामी जमींदार सामन्तवर्ग और निम्न श्रेणिका निर्धन श्रमिकवर्ग राज्यका शत्रु बन कर आतङ्क खड़ा करेगा । प्रस्तावित भावी चुनाव परिस्थिति वशात् इस वर्ष स्थगित हो जाना सम्भव है ।

[११] लाभेश बुधेश मंगल राहुसे पीड़ित है अतः राष्ट्रकी आय वा उत्पादन शक्ति संतोषजनक न रहेगी । जनसाधारणवर्ग अपनी आयसे जीवनस्तरको उन्नत नहीं बना सकेगा ।

[१२] व्ययेश शुक्र, मं० गु० राहुके साथ नवममें है अतः औद्योगिक यांत्रिक एवं सुरक्षाके सम्बन्धमें व्यय विशेष होगा । पड़ौसी राष्ट्र (पाकिस्तान) से आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोषजनक नहीं रहेंगे । ११वां १२वां मास (दिसम्बर जनवरी) राजनैतिक गतिरोधके साथ ही प्रकृति-प्रकोपका सूचक भी है, वहां भयानक शीत पड़ेगी, तुषारपात और बर्फानी तूफान आयेंगे ।

सं० २००८ में भारत तथा संसारका राजनैतिक सामाजिक व्यापारिक भविष्य विचार विस्तृत रूपमें आगामी 'वसन्ताङ्क' में प्रकाशित किया जावेगा ।

★★

व्यापारिक तेजी मंदी और ज्योतिष

[लेखक— श्री प्रोफेसर बी० सी० मेहता एम० आर० ए० एस०]

सन् १९५१के प्रथम मासमें यह लेख आपकी सेवामें प्रस्तुत हो रहा है। यूं तो समय समय पर 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक वृन्दकी सेवा अपने लेख द्वारा करता आ रहा हूं। परन्तु यह वर्ष अर्थात् सन् १९५१ व्यापारिक घटाबढ़ीकी दृष्टिसे विशेष उल्लेखनीय है। इसीलिये मैं पाठकोंसे विशेषरूपसे अनुरोध करता हूं कि वे अपने व्यापारमें विशेष सावधान रहें। ग्रहयोग इस वर्षमें अनोखे ही बन रहे हैं और प्रतिमास व्यापारिक क्षेत्र में विशेष उथल पुथल होनेकी सम्भावना है। खास तौरसे इस वर्षमें चांदी, सोना, रुई कपास, शेयर एरण्डा, सींगदाना, ग्वार इत्यादिमें विशेष घटाबढ़ी दिखाई देगी।

जनवरी मासके ग्रहयोग देखते चांदी सोना मासके प्रारम्भसे साधारण घटाबढ़ीमें चलेगा। परन्तु ता० ५ से ११ तक अच्छी तेजीकी सम्भावना है। एरण्डा सींगदानेमें तो सारा ही मास तेजीका ही दिखाई देता है। हां, जिस दिन मंगल राहु व शुक्रका योग बनता है अर्थात् ता० १९ जनवरीके आसपास मन्दीके रिएक्शन आवेंगे। परन्तु, ट्रेण्ड तेजीका रहेगा और जनवरीका अन्तिम सप्ताह सब वस्तुओंमें तेजी सूचक ही रहेगा।

फरवरीमें ५ ग्रहोंका योग कुंभराशिमें बनता है। यह योग राजनैतिक परिवर्तनका सूचक है, जिसका प्रभाव व्यापारिक क्षेत्रमें भी अवश्य पड़ेगा और समय समय पर तेजीके बाजारोंमें मन्दीके झटके आते रहेंगे। अतः अत्यन्त सावधानीसे व्यापार करना चाहिये। फरवरीमें प्रथम चार दिनमें एक मन्दीका झटका आ सकता है अतः बहुत सावधानीसे अपना व्यापार करें। विशेष विवरणके लिये आप श्रीस्वाध्यायसदन सोलन द्वारा हमसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं। 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंकी सेवा हम फ्री कर सकेंगे।

मार्चके प्रारम्भमें आपको काफी अच्छा बाजार मिलेगा। किन्तु आपको ता०१ को ही मन्दीका व्यापार करना चाहिये और ता० ४ को फिर तेजी में आ जाना चाहिये। ता० १५ के लगभग सब वस्तुओंमें मन्दी आ सकती है और ता० २० से २५ तक पुनः तेजी। ता० २५ के बाद बाजारमें शिथिलता दिखाई देगी। किन्तु आपको अभी मन्दीका व्यापार नहीं करना चाहिये।

★★

सरदार पटेलके शरीरान्तका भविष्य निर्णय

[लेखक :— श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास ज्यौतिषाचार्य]

विगत सं० २००५ में हमें एक सज्जन द्वारा श्री सरदार पटेलकी जन्मकुण्डली मिली थी, उसे हमने सं० २००६ के पंचांगमें प्रकाशित की थी, परन्तु सरदारश्रीका कर्कलग्न हमें उस समय भी ठीक प्रतीत नहीं हुआ, अतः हमने वहीं अन्तमें लिख दिया था कि यह लग्न प्रामाणिक प्रतीत नहीं होता। हमें सरदारका सिंह लग्नमें जन्म होना जंचता है। तदनन्तर बंगलौरके एक अंग्रेजी पत्रमें मकर लग्नकी कुण्डली भी प्रकाशित हुई थी। परन्तु सरदार पटेलका शुद्ध जन्मेष्टकाल कहीं भी उपलब्ध नहीं था। पुत्रकी शुद्ध जन्म कुण्डली से पिताके निधन समयका निर्णय भी भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर कितना प्रामाणिक सिद्ध होता है यही बात विद्वान् लेखकने इस लेखमें स्पष्ट की है। —सम्पादक

देशका दुर्भाग्य ही समझिये कि भारतके स्वतंत्र होते ही राष्ट्रपिताका अवसान हो गया, और ठीक तीसरे वर्षमें सरदार वल्लभ भाई जैसे वीर सेनानी, और असाधारण शक्ति एवं साहससम्पन्न व्यक्तिका बिछोह हमें उठाना पड़ गया, यह देशकी बहुत बड़ी क्षति है। परन्तु जो लोग ग्रहोंकी गणना और उनके परिणाम पर विश्वास रखते हैं उन्हें सरदारके मारक योगोंके जान लेनेके कारण यह एक स्वाभाविक घटना ही विदित हो सकती है। सरदारकी स्वयंकी पत्रिका तो थी नहीं। सरदार एक साधारण ग्राममें और कृषक परिवारमें उत्पन्न हुए। कौन जानता था कि वह ग्रामीण कृषक-कुमार हमारे देशका अमरपुरुष बन जायगा! बम्बई प्रदेशके कुछ पंडितोंने अभी-अभी सरदारके भूतकालकी घटनाओंके आधारपर एक काल्पनिक कुण्डलीका निर्माण कर लिया था। उसपर से कुछ भविष्य भी भाषित करने लगे थे, परन्तु कल्पना-जन्य काल-कलनसे किसीका भूत और भावी निर्दिष्ट करना अंधकारमें प्रकाशकी रेखाको खोजने जैसा ही है। हां, अवश्य इस विषयमें एक आधार था, और मैंने उसीका आश्रय लेकर सरदारके सम्बन्धमें समय-समय पर सूचनाएं की थीं। वह आधार प्रामाणिक था। सरदारके सुपुत्र और मेरे स्नेही श्रीयुत डाह्याभाई पटेलकी पत्रिका प्रामाणिक रूपसे बनी हुई है, उसे देखनेका मुझे अवसर मिला। उस परसे श्री डाह्या भाईके पिताके विषयमें जो भी देखा या कहा गया वह ठीक प्रमाणित हुआ है। उनकी अस्वस्थताके विषयमें जो समय सूचित किये गए वे सही प्रमाणित हुए हैं। इसी प्रकार जिस समय सरदारश्री इन्दौरमें प्रवास कर रहे थे, मैंने यह निर्णय किया था, कि इस वर्ष सरदार दीर्घकाल तक हम पर छत्र छाया नहीं रख सकेंगे। उसका कारण स्पष्ट था, और उसके लिए यहां अब श्री डाह्या भाईकी कुण्डलीको प्रकट कर चर्चा करनेमें पंडितोंको जाननेमें सुविधा होगी।

श्री डाह्या भाई की कुण्डली



इस कुण्डलीमें गोचरभ्रमणसे जिस समय शनि कन्या राशिमें आया पिताके लग्नका स्वामी होकर आठवें मारक भावमें पहुंच गया था, और राहुकेतु लग्न सप्तम में थे ही और उधर पिताके धन (मारक)का स्वामी गुरु भी कुम्भमें (लग्नमें) जा रहा था। इसलिए राहु केतुके राशि-परिवर्तनके पूर्व ही बाधा विदित हो रही थी, यह गोचर ग्रह वश थी, परन्तु उधर श्री डाह्या भाईको भौम महादशा चालू है। यह पितासे १२वें स्थानमें उच्च राशि पर है। उसमें कुछ समय पूर्व ही सूर्यान्तर प्रारंभ हुआ है, यह

पिताके सप्तमका (मारकका) स्वामी ही है। इस समय भी मंगल उसी राशि पर भ्रमण कर रहा है, तथा राहुके कन्या पर रहते हुए यह संदेह स्वाभाविक था कि कुम्भके गुरु, अष्टमके शनि राहुके कारण सहज ही हृदयगति अवरुद्ध हो सकती है। और यदि राहू परिवर्तनके समय तक यह किसी प्रकार जनताके सद्भावसे टल गया तो ८ मार्च ५१के गुरु परिवर्तन तक मारक योग तो खतरेका चलेगा ही। यह संदेह सूचना मैंने यथासमय उचित स्थान पर कर दी थी, प्रकाशमें लानेका विषय नहीं था। परन्तु संयोग की बात है कि गत ३ दिसम्बर ५० को मुझे गवालियर प्रवासका अवसर आया और वहांके प्रसिद्ध दैनिक- पत्र 'नव प्रभात' के प्रतिनिधिके पूछ लेने पर मुझे स्पष्ट प्रकट करना पड़ा। वहां जो ता० ७।१२।५० के 'नवप्रभात' में प्रकाशित हुआ वह पाठकोंके लिए यहां यथावत् उद्धृतकर देता हूं। यह स्पष्ट सूचना १सप्ताह पूर्व प्रकट हुई थी, तब तक लोगोंको ऐसा संदेह भी नहीं हो सकता था, और संदेह हो भी क्यों जब सरदार साधारण स्वस्थ हो-बम्बई तक वायु परिवर्तन भी करने चले गये थे, और सुधार भी हो रहा था, किन्तु मेरी शंका बढ़ी हुई थी कि यह सब खतरा ही है।

'नवप्रभात' में जो प्रकाशित हुआ था—वह इस प्रकार है —

लश्कर बुधवार (६।१२) ज्योतिषके प्रसिद्ध विद्वान् विक्रम सम्पादक, उजैन निवासी ज्योतिषाचार्य श्री सूर्य नारायण व्यास आज कल गवालियर आए हुए हैं।

'नवप्रभात' के प्रतिनिधिके पूछने पर कि 'भारत का भविष्य कैसा है?' आपने बतलाया कि मुझे तो निकट-भविष्यमें भारतीय शासनमें मार्च ५१के अंदर अन्दर आकस्मिक परिवर्तनकी संभावना प्रतीत होता है।

श्री व्यासजीने आगे कहा इसकी पूरी संभावना है कि श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचारीको कोई नयी जुम्मेदारी संभालनेको बाध्य होना पड़ेगा। श्री कन्हैयालाल मुन्शीके विभागमें भी परिवर्तनकी संभावना है।

उपप्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेलके स्वास्थ्यमें अत्यन्त चिन्ताजनक स्थिति आ जाएगी। १६ दिसम्बर ५० तकका अवसर कठिन है। यदि ईश्वरकी कृपासे यह चिंतापूर्ण अवधि निकल गई तो भी ८ मार्च ५१ तक उनके लिए अत्यंत सावधानी रखी जाना चाहिए।

अन्त में श्री व्यासजीने कहा—मेरे पास सरदारश्रीकी पत्रिका नहीं है। किन्तु उनके सुपुत्रकी पत्रिका देखकर मैंने बहुत समय पूर्व यह चिंता प्रकट कर दी थी, और यह वर्ष सावधानीका सुचित किया था, पंचांगमें भी संकेत है ईश्वर सरदारको दीर्घायु करे।

× × ×

'नवप्रभात' का यह भविष्य उसी दिन राष्ट्रपतिजी, और श्री डाह्या भाईके पास भिजवा दिया था। इसके बाद सभी जानते हैं कि यह १६ तारीख टल न सकी १५ को ही सरदारका शरीरान्त हो गया! सरदार श्रीके सुपुत्र की पत्रिकामें चलने वाले सूर्यान्तरमें यह घटना इस समय अथवा मार्चके आरंभ तक अवश्यम्भावी थी। ग्रहगणना के अनुसार यह चिंता विचित्र नहीं, न आकस्मिक ही। 'नवप्रभात' के ऊपर अंकित भविष्यमें समयसे पूर्व जो यह सूचना की गई थी कि शासनमें आकस्मिक परिवर्तन होगा और चक्रवर्ती राजगोपालाचारीके पदमें परिवर्तन होगा, आज यह कितना स्पष्ट है कि उनके लाख टालने पर भी होममिनिस्टरी उन्हें स्वीकार करनेको विवश होना पड़ा है।

काश, हमारी सरकार इस शास्त्रके अनुसंधान आदि कार्यमें रस ले, और परिणामों के जाननेका प्रयत्न करे तो कितना उत्तम हो। क्या वह इन सत्योंकी भी उपेक्षा कर सकती है? पुत्रकी पत्रिकासे भी पिताके विषयमें कितना स्पष्ट परिणाम प्रकट प्राप्त हो सकता है।

★

त्रैमासिक राशिफल

[लेखकः— श्री नन्दकिशोर 'गर्ग']

मेष

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे प्रथम मास अच्छा है, किन्तु ता० २१ फरवरीसे द्वादश भावगत मंगल रोगोत्पादक रहेगा, नेत्र और पांव में पीड़ा होनेका भय रहेगा। आर्थिक दृष्टिसे प्रथम दो मास लाभकारक है। पश्चिम दिशा तथा सफेद वस्तुसे लाभ प्राप्त होगा। धन्देमें प्रगति होगी। अन्तिम मास व्यय कारक है, शुभ कार्यमें खर्चा होगा। स्त्रीके स्वास्थ्यके लिये भी समय शुभ फल दायी नहीं है। संतान पक्षकी चिन्ता रहेगी, अचानक एक्सीडेण्टका भय है। शत्रु कृत उपद्रव नष्ट होंगे। कोर्ट कार्योंके लिये फरवरी मास विशेष लाभप्रद है। बन्धु वर्गकी उन्नतिके लिये अच्छा समय है। व्यापारी वर्गके लिये तीनों मास लाभ कारक हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियोंके लिये प्रथम दो मास उन्नति कारक है किन्तु अन्तिम मास चिन्ता तथा अशान्तिकारक है। सम्भवतः स्थानान्तर हो जावे। विद्यार्थियोंके विद्याध्ययन के लिये मार्चमास तक समय अच्छा है, परीक्षाके दिन नजदीक समझ कर अधिक परिश्रम करना स्वास्थ्यके लिये हानिप्रद होगा। मजदूर वर्गके लिये भी समय उन्नति कारक जावेगा। मिल मालिकों व कारखानेदारोंके लिये समय विरोध एवं अशान्तिप्रद है। महिलाओंके लिये यह तीनों मास श्रेष्ठ हैं। मांगालिक कार्योंमें सम्मिलित होने के अवसर प्राप्त होंगे।

वृषभ

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे समय निरोगता सूचक है। गत मासमें जो जो चिन्तायें थीं वे धीरे धीरे दूर होती जावेंगी। आर्थिक पक्ष बलवान् रहेगा। राजपक्षके लिये भी समय उत्तम है। कौटुम्बिक दृष्टिसे मास अच्छे हैं। सन्तान पक्षके लिये ग्यारहवां गुरु २३ मार्चसे शुभफलदायी है। फरवरी मासमें दशम भावमें होने वाली पंचग्रह युति मान संतान और पदको बढ़ाने वाली है, परन्तु शत्रु एवं राज्यकी ओरसे कुछ उत्पात कर सकेगी। व्यापारी वर्गके व्यापारमें वृद्धि होकर अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्थायी सम्पत्ति सम्बन्धित मामलोंके झगड़े सुलझते हुए प्रतीत होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियोंके लिये मार्च मास आफिसर वर्गके प्रकोपका रहेगा, स्थानान्तर भी हो जावे तो कोई आश्चर्य नहीं। अतः सावधानी अनिवार्य है। विद्यार्थी वर्ग जिन्होंने कि अब तकका समय मटरगश्तीमें बिताया है अब कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। महिलाओंके लिये मास उन्नति कारक है।

मिथुन

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे प्रथम दो मास शुभ नहीं कहे जा सकते। हृदयरोग, पित्तसंबन्धी रोग होनेका भय है। कौटुम्बिक दृष्टिसे प्रथम मास रोगोपद्रव एवं कलह सूचक है। किसी प्रेमीके वियोगकी भी सम्भावना है। संतानके लिये उत्कर्षका समय है, स्त्रीसे साधारण सुख रहेगा। विवाह योग्य युवक युवतियोंका विवाह हो जावेगा। आर्थिक दृष्टि से यह तीन मास शुभफलदायक है। लाल और पीली वस्तुसे लाभ होगा। मित्रवर्गसे विश्वासघात होगा। प्रवासका योग भी है, पर चोरी या एक्सीडेण्टसे सावधानी रक्खें। राज्यपक्षके लिये प्रथम मास चिन्ता तथा अशांति कारक है। शासन नियंत्रित वस्तुओंके व्यवसाइयों को विशेष सावधानीकी आवश्यकता है। सामान्यतः व्यापारीवर्गके लिये अन्तिम मास उन्नति कारक है। राज्यकर्मचारियोंको भी कार्य सावधानीसे करनेकी आवश्यकता है। विद्यार्थियोंके विद्याध्ययनके लिये समय अच्छा है, परन्तु राजनीतिसे इन तीन मासोंमें दूर रहना ही हित कर होगा। विद्याजीवी वर्गके लिये उन्नतिका समय है, विशेष कर वकील तथा न्यायाधीश लोग आर्थिक लाभ में रहेंगे। महिलाओंके लिये समय चिन्ता कारक है।

कर्क

यह मास अशांति प्रद ही दिखाई देते हैं। अष्टम भावमें पंचग्रही योग शारीरिक कष्टका संकेत कर रहा

है। चोरीसे सावधानी आवश्यक है। प्रवासका योग भी है। पत्नीके स्वास्थ्यकी सावधानी रखनेका समय है। भाइयों एवं मित्रोंकी उन्नति एवं उनसे लाभ होगा। प्रथम मास सन्तान पक्षके लिये चिन्ताकारक है, पिछले दो मासमें शुभ रहेगा। विगत वर्षसे चली आती हुई मनोभिलाषाएं अप्रेल माससे पूर्ण होनेके चिन्ह दृष्टिगोचर होंगे। व्यापारीवर्गके लिए समय साधारण है। परिश्रम अधिक एवं लाभ साधारण रहेगा। सट्टेका व्यवसाय सावधानी से करें अन्यथा हानिके योग बनेंगे। राजकर्मचारियोंको परिश्रमका समय है। अधिकारियों से विरोध हो सकता है, अतः बोलनेमें सावधानी रक्खें। विद्यार्थी वर्गको आगामी मार्च अप्रेलकी परीक्षायें सफलता कारक सिद्ध होंगी। विद्याजीवीवर्ग फरवरीके द्वितीय सप्ताह बाद अच्छा लाभ कमावेंगे। श्रमजीवी वर्गको समय कष्टकारक है। खदानमें कार्य करने वाले और धातु एवं अग्नि व्यवसायी एक्सीडेण्टसे बचनेका ध्यान रक्खें। महिला वर्गके लिये कुटुम्बमें विरोध व अशुभ समाचार सुननेका योग होगा अतः शांति रक्खें और धार्मिक कृत्यों में सावधानी रक्खें।

सिंह

विगत माससे चले आते हुए फल लगभग १९ दिन और प्रभावशील रहेंगे। पश्चात् स्वास्थ्यमें सुधार दिखाई देगा, पर आहारादिके विषयमें सावधानी रखना चाहिये अन्यथा मार्च उत्तरार्धसे शारीरिक कष्टोंका अनुभव होगा। पत्नीके स्वास्थ्यकी चिन्ता रहेगी, कौटुम्बिक कलह होते हुए भी कुटुम्बमें प्रथम तो वृद्धि होगी परन्तु मार्च अन्तमें किसी प्रियजनके वियोगका भय है, जो कि मातुल पक्षसे विशेष सम्बन्धित हो। सन्तान पक्षके लिये समय अच्छा है। बुद्धि अस्थिर रहेगी, तथा मानसिक अशांति भी विशेष रहेगी। व्यापारीवर्गके लिये समय मिश्रित फलदायक है। यही समय है जब कि व्यापारी बड़ा लाभ या बड़ी हानि उठा जाते हैं। पांतीका व्यवसाय नुकसान कारक है, राजकर्मचारियोंके लिये समय अच्छा है, मार्च के अन्तमें वेतन वृद्धि या रुका धन प्राप्त हो सकेगा। श्रमजीवीवर्ग लाभमें रहेगा। लोहेके व्यवसायियोंको ब्लेक मार्केटसे सावधानी रखना चाहिये। महिलाओंके लिये समय सावधानीका है, नवप्रसूता तथा गर्भवतियोंको विशेष सावधानी मार्च मासके प्रथम पक्षमें रखना चाहिये।

कन्या

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे ये तीन मास अच्छे हैं। गत मासके कष्टोंसे मुक्ति होकर मन प्रसन्न शरीर स्वस्थ एवं बलवान् होगा। रोजगार संबन्धी चिंताओंसे भी कुछ अंशोंमें छुटकारा मिलेगा। शत्रुपक्ष फिर भी उत्पात करता रहेगा, यद्यपि हानि नहीं पहुंचा सकेगा। राज्यपक्ष सहायता कारक रहेगा। अप्रेल मासमें कोर्ट कार्योंमें यश प्राप्त होगा। फरवरी मासमें संतान जन्मका योग है, आर्थिक दृष्टिसे भी यह मास ठीक रहेंगे। अप्रेलसे विशेष लाभकर समय है। स्त्री पक्षके लिये मार्चके प्रथमपक्षमें शारीरिक कष्ट सम्बन्धी चिन्तायें रहेंगी। कान एवं गलेके दर्द तथा वायु और कफ सम्बन्धी पीड़ा हो सकती है। व्यापारीवर्गके लिये समय लाभकर है। बुद्धिजीवीवर्ग परिश्रम अधिक एवं लाभ कम रहेगा, यद्यपि हानिका योग नहीं है। अप्रैलसे समय लाभदायी हो जावेगा। सरकारी कर्मचारियोंके लिये समय चिन्ताकारक ही है। वर्तमान परिस्थितिसे असंतोष एवं शत्रु उपद्रवके कारण मन अशांत रहेगा। विद्यार्थी वर्गको अपने अभ्यास और संततिका विशेष ध्यान रखना चाहिये। श्रमजीवीवर्ग आनन्दमें रहेगा। महिलाओंके लिए मार्चके द्वितीय पक्षसे समय ठीक आ रहा है। सैनिक लोगोंके लिये समय परीक्षाका है।

तुला

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे समय साधारण है। क्रोधकी मात्रा कम रखनेसे ही मानसिक शांति संभव है, नहीं तो मार्चमें अनेक चिन्तायें होंगी। स्त्री संतानकी ओरसे छोटी बड़ी चिंतायें चलती रहेंगी, तथापि कु[illegible] उन्नति एवं वृद्धिके योग अप्रेल माससे हैं। राज्[illegible] प्रबल नहीं है। अधिक विश्वास करना धोखेका कारण बनेगा। आर्थिक दृष्टिसे समय साधारण है, निजी कार्योंसे आय होती रहेगी। सट्टेका व्यवसाय लाभप्रद होते हुए भी जोखमसे खाली नहीं है। व्यापारी वर्गके लिये समय भाग्योदय कारक है परन्तु लाभ विलम्बसे होगा। मार्चका द्वितीय पक्ष लाभकारक रहेगा। श्रमजीवीवर्गको स्वास्थ्य संबन्धी पीड़ायें

होंगी, तथा आयमें भी कुछ कमी अनुभव होगी। अप्रेलकी १० तारीखके पश्चात् आर्थिक दशा सुधरेगी। विद्यार्थीवर्ग के लिए उन्नति कारक समय है पर समयका पूरा पूरा उपयोग करना चाहिये। राजकर्मचारियोंके लिये मार्च मासके द्वितीय पक्षसे ही उन्नति कारक समय है। बुद्धि जीवी वर्गके लिये समय जितना बुद्धिका प्रकाश करने वाला है उतना लाभ प्रद नहीं। यात्रासे भी कुछ लाभ संभव है। इस राशि वाले अनुशासन-हीन व्यक्तियोंको मार्च मास अपमान कारक सिद्ध होगा।

वृश्चिक

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे समय साधारण है विगत मासोंकी आई निर्बलता शनैः शनैः पूरी होगी। मकर का सूर्य राजकीय एवं अन्य कारणोंसे यात्रा कारक है। आर्थिकदृष्टिसे फरवरी माससे समय ठीक प्रारंभ हो रहा है, नवीन-नवीन कार्योंकी ओर लक्ष्य होगा। चतुर्थ भावमें पंचग्रही-योग माताके स्वास्थ्यके लिये हानिप्रद है। स्थायीसम्पत्ति सम्बन्धी मामलोंमें कुछ विवादके बाद सफलता दिखाई देती है। स्त्री संतानकी ओरसे समय सुख कारक है। राज्यपक्ष प्रबल है। मासके द्वितीय पक्षमें कुछ राज्य (कोर्ट)से विपरीत फल प्राप्तिकी संभावना है, अतः अपने मामलोंमें सावधानी रखें। व्यापारीवर्गको हानि उठानेके पश्चात् लाभ प्राप्त होगा। राज कर्मचारियों के लिये प्रथम दो मास उन्नति कारक है। तीसरे मासमें अधिकारियोंसे संयत व्यवहार रक्खें। श्रमजीवी वर्गका मालिकोंसे झगड़ा चलता रहेगा, अप्रेलमें जाकर निपटारा हो सकेगा। बुद्धिजीवीवर्गके लिये समय साधारण है। विद्यार्थीवर्ग थोड़ा भी ध्यान रखेंगे तो आगामी परीक्षामें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। महिलाओंके लिये समय अच्छा है। औषधी सम्बन्धी व्यवसाइयोंके लिये समय अच्छा लाभ कारक सिद्ध होगा।

धनुः

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे समय निरोगता सूचक है, फिर भी उष्ण तत्वोंसे बचना चाहिये। धर्म भावमें केतु का आ जाना धार्मिक कार्योंमें वृद्धि कारक, परन्तु मादक द्रव्योंका सेवन भाग्य वृद्धिमें रुकावट डालने वाला है। प्रवासमें कष्ट और बन्धुको कष्ट होगा। स्त्री संतानकी ओर से समय सुख शांतिकारी है। राजपक्ष साधारण है, मार्च मासमें कुछ चिंतायें उठ खड़ी होंगी। कोर्टके कार्योंमें यश प्राप्त होगा, आर्थिक दृष्टिसे समय साधारण है, धीरे धीरे स्वकार्यसे लाभ होता रहेगा। फरवरी मासमें यात्रा योग बनेगा, जो संभवतः पवित्र स्थानकी होगी। व्यापारीवर्गके लिये समय आर्थिक लाभ कारक है। मार्चके द्वितीया पक्ष में सावधानीसे कार्य करना चाहिये। राजकमचारियोंको उन्नति कर समय है। अपने ही लिखने या बोलनेसे कुछ उपद्रव हो सकता है। श्रमजीवीवर्गके लिये समय शुभ है। बुद्धिजीवीवर्गकी उन्नति होगी। कृषिकर्ताओंको पशुओंकी ओरसे चिंता होगी। अप्रेल माससे लाभ दिखाई देता है। विद्यार्थियोंके लिये समय साधारण है। महिलाओंके लिये समय शुभ है, प्रेम और आनन्दसे समय व्यतीत होगा, फरवरीमें सावधानीकी आवश्यकता है। कारखानेदार और मिल मालिकोंको समय लाभप्रद है।

मकर

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे मास साधारण है। मकर संक्रांतिसे ही मानसिक अशांति, स्वास्थ्यमें गड़बड़ी और कष्टप्रद यात्राओंका प्रारंभ होगा। ज्वर सिरदर्द और पित्त सम्बन्धी रोगोंसे सावधानी रखना चाहिये। कौटुम्बिक दृष्टिसे मास शुभ नहीं कहा जा सकता। किसी निकटस्थ संबंधीकी मृत्यु फरवरीके प्रथम पक्षमें होना संभव है। संतानको नेत्र संबंधी पीड़ा और कण्ठ संबंधी रोगोंसे सावधानी रखनेकी आवश्यकता है। मार्च मास स्वास्थ्य लाभ देने वाला होगा। स्त्रीके स्वास्थ्यकी ओरसे भी फरवरी मास कम कष्ट कारक नहीं है। व्यापारीवर्गके लिये समय विशेष परिवर्तनका है, परन्तु विशेष लाभकी संभावना नहीं है। विद्याजीवीवर्गके लिये समय अच्छा है। वक्ताओंको सावधानीसे बोलना चाहिये। श्रमजीवी वर्गको आर्थिक कष्ट चलते रहेंगे परन्तु काम मिलनेमें कठिनाई नहीं होगी। राज्यपक्ष मिश्रित फल दायी है। सरकारी कर्मचारियोंको फरवरीके द्वितीयपक्षसे अच्छा आने वाला है। विद्यार्थियोंके लिए प्रथम दो मास कष्ट कारक है। महिलाओंके लिये समय अशुभ फल कारी है शारीरिक कष्ट और कलहका प्राधान्य रहेगा।

कुम्भ

स्वास्थ्यके लिये आगामी तीन मास शुभ नहीं हैं। फरवरी मास और मार्चका प्रथम पक्ष विशेष हानिप्रद है। कौटुम्बिक दृष्टिसे अप्रेल माससे शुभ समय प्रारम्भ होगा कुटुम्बमें शुभकार्य वृद्धि आदिके योग बनेंगे। यही समय आर्थिक उन्नतिकी ओर ले जावेगा। राजकीय पक्ष सामान्य है, लाभकी सम्भावना नहीं होते हुए भी रुके काम सुलझ जावेंगे। स्त्री सन्तानकी ओरसे शुभ नहीं है। स्थायी सम्पत्ति सम्बन्धी मामलोंमें फरवरी मास लाभकारक सिद्ध होगा। अपनी ओर से विशेष महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं करना चाहिये। व्यापारी वर्गके लिये मार्चके पश्चात् शुभ समय आने वाला है, इसके पूर्व भी हानिके योग नहीं है। श्रमजीवीवर्ग ऋणगृस्त रहेगा। विद्यार्थीवर्गको स्वास्थ्यकी विशेष सावधानी रखना चाहिये। राजकीय कर्मचारियोंके लिये अप्रेलसे शुभ समय प्रारम्भ होता है। कार्याधिक्य और अधिकारियोंका दुर्व्यवहार इसके पूर्व खिन्नित करता रहेगा। खदान और कारखानेमें कार्य करने वालोंको मार्च मध्यमें सावधानी रखना चाहिये विस्फोटक पदार्थ वालोंको भय रहेगा। महिलाओंके लिये मार्च तकका समय ठीक है।

मीन

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे आरम्भिक समय अच्छा देखकर लापरवाही नहीं करना चाहिए अन्यथा फरवरी अन्तसे मार्च तक कष्ट उठाना पड़ेगा। कौटुम्बिक दृष्टिसे समय फरवरीसे ही ठीक रहेगा। आर्थिक दृष्टिसे समय ठीक नहीं है, इन तीन मासके पश्चात् लाभकारी समय आने वाला है। वैसे जन्मका गुरु आजीविकाके लिये बुरा नहीं है। सन्तान सम्बन्धी इच्छाएं मार्चके पश्चात् ही पूर्ण हो सकेंगी। स्त्रीके स्वास्थ्यकी ओर सावधानी रखना चाहिये। मार्चका द्वितीय पक्ष यात्रा कारक है। व्यापारी वर्गके लिये समय हानिकारक नहीं है। विद्यार्थी वर्गको आगामी परीक्षाओंका समय सफलताकी ओर ले जावेगा। स्वास्थ्य और मितव्ययिताकी ओर ध्यान रखना वांछनीय है। श्रमजीवी वर्गके लिये समय सामान्य है। है राजकीय कर्मचारियोंके लिये समय शुभ है। फरवरी के द्वितीय पक्षमें सतर्कतासे काम करना चाहिये। विद्याजीवी वर्ग आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताओंसे त्रस्त रहेगा। गुरुका उपचार शान्ति प्रदान कर सकेगा। सैनिक वर्ग और बालवृन्दकी मृत्यु संख्या बढ़ेगी। महिलाओंके लिये प्रथम मास साधारण कष्टकर है, गर्भवती स्त्रियां पुत्र प्रसव करेंगी।

—★—

व्यापार पर ग्रहयोगका प्रभाव

[लेखकः— श्री दुर्गाप्रसादजी 'सूद']

जनवरी फरवरी मार्च १६५१ ई०

ता० २१ जनवरीकी रात्रिसे सरसों गुवार कपास चांदी सोनाके बाजारमें तेजी प्रारम्भ होकर २२ तक रहे। ता० २३को बाजार दुतर्फा चले। ता० २६ जनवरीसे २फरवरी तक बेरोक तेजी। ३फरवरीसे ५फरवरी तक मंदीका जोर। ६ फरवरीको स्वल्प तेजी। ७ से ६फरवरी तक सोना चांदीमें स्वल्प मंदी। सरसों गुवारा कपासके भाव तेज होकर मंदे होंगे। ११-१२फरवरीको सोना चांदी मंदा और वस्तु तेज। ता० १३को चांदी सोना सरसों गुवार रुईमें मंदीका जोर रहेगा। ता० १६से १६ फरवरी तक सोना चांदीमें साधारण तेजी आकर मंदीका जोर रहेगा। सरसों गुवारा कपासमें अच्छी तेजी होगी। किन्तु २० फरवरी तक इस तेजीका अन्त समझें। यह समय सावधानीका है। ता० २१ फरवरीसे १ मार्च तक सब योग मंदीके बन रहे हैं। यहां सोना चांदी और अन्य वस्तुएं भी मंदी होंगी। ३ मार्चको सब वस्तुएं तेज। ६ से ८ मार्च तक सब वस्तुएं मंदी। ता० ६ से १८ मार्च तक चांदी सोनामें अच्छी मंदी, सरसों गुवारा कपासमें ६ से १२ मार्च तक बहुत तेजी और १२से १८मार्च तक इन वस्तुओंमें बहुत मंदी आयेगी ता० १६ से २० मार्च ३ बजे तक सरसों गुवार कपासमें बहुत तेजी और २१से २४ मार्च तक मंदी रहेगी।

व्यक्तिगत प्रश्नोंके उत्तर

['ज्यो० गर्ग']

(१) प्रश्न— धन स्थान एवं जीविका पर प्रकाश डालें।
—प्रभुदयाल वैश्य ग्राहक सं० २५८०

उत्तर— खेती, भूमि तथा मशीनरी अच्छा लाभ दे सकती है। ३६ वें वर्षसे विशेष उन्नति होगी। धन स्थान बलवान् है। गुरुकी उपासना करो। शत्रु पक्षसे सावधान रहें। बारंबार परिवर्तन करना ठीक नहीं है।

(२) प्रश्न— मित्रोंसे लाभ है या नहीं? है तो किस राशि या लग्न वालेसे?
—सीताराम मिश्र ग्राहक सं० १२२८

उत्तर—मित्रोंसे साधारण लाभ है। वृष, सिंह, मकर से विशेष लाभ है। अधिक विश्वास करना ठीक नहीं है। आगामी सं० २००८ लाभप्रद रहेगा।

(३) प्रश्न—सन् १९५१में किस व्यापारसे किस मास में लाभ होगा? —रोशनलाल ग्राहक सं० ३८५०

उ०—मार्च ५१के अन्तिम सप्ताह तक सब काम जम जायगा। सट्टे से लाभ नहीं। तरल पदार्थों एवं गुड़, मिर्च, अन्न तथा कटलरीका व्यसाय आगे वर्ष भर लाभकारी रहेगा। निराशा त्याग कर उठ बैठिये व जुट जाइये।

(४) प्र०— चन्द्रमा के लिए जप आदि क्या शांति करना चाहिये? —देवचन्द शाह ग्राहक सं० ३६८५

उ०— आप एक पक्का ४॥-५ रत्ती वजनका मोती अनामिका उंगलीमें स्वर्णकी अंगूठीमें धारण करें। आगामी वर्ष अच्छा लाभकारी है। शनिका दान जप लाभकारी है।

(५) प्रश्न— द्रव्य प्राप्तिका मार्ग, उपचार, साधन तथा सफलताका समय बतावें?
—पद्मनारायण माहेश्वरी ग्राहक सं० ३६०६

उ.—गुरुमें शनि अन्तर लाभकारक है। तर्जनी उंगलीमें पुखराज ३॥-४ रत्तीका धारण करें। स्वर्ण न हो तो चांदीमें ही बनावें। आगामी दो वर्ष लाभकारी हैं। शनि व शुक्र के धंधे लाभ देंगे। सट्टा व्यसाय बुद्धिमानीसे करेंगे तो लाभ होगा।

(६) प्रश्न— भाग्योदय एवं राजयोगोंकी भिन्न-भिन्न राय का समाधान करें। —श्यामलाल शर्मा ब्यावर

उत्तर— यह विवेचन इस स्तम्भकी परिधिके बाहर हैं, तथापि २५वें वर्षमें विदेशमें या विदेशी व्यक्तिके कारण भाग्योदय है। सन् ५१ भी लाभकारी है।

(७) प्रश्न— भाग्योदय कब होगा व कब तक रहेगा?
—युगलकिशोर सर्राफ ग्राहक सं० ७२७

उत्तर—२४, ३५ व ४१वां वर्ष उत्तम था। गुरु अंतर समाप्त होने पर शुभ समय आता है, क्रोध कम किया जाना चाहिये। १९५१ उत्तरार्ध लाभका है।

(८) प्रश्न— व्यापार, खेती, नौकरी किससे लाभ है, व कहां? —पतराम शर्मा ग्राहक सं० ३२१४

उ०—व्यापार व खेतीसे लाभ है। नौकरीका समय समाप्त हो चुका है। अपने वर्तमान स्थान पर जमे रहें। शनिकी शांति आवश्यक है। १९५२ विशेष लाभकारक रहेगा। भाव विवेचन कराइये, तब पूरी बात जान सकेंगे।

(९) प्रश्न— आर्थिक उन्नति कब और कैसे होगी?
एच० डी० वर्मा राघोगढ़ (मध्यभारत)

उ०—समय उन्नतिका प्रारम्भ हो चुका है। सं० २००१ विशेष लाभकारी है। क्रमशः उन्नति होती जावेगी। गीता अध्याय २, ६ व ११का पाठ करें।

नोट — सूरजमल अग्रवाल कालाहांडी और भागमल महता नई दिल्लीके प्रश्नोंका उत्तर पहलीबार डाक द्वारा उनके पते पर भेजा जा चुका है। गताङ्कके सब ग्राहकों को उत्तर डाक द्वारा ही भेजा गया था। अब किसीको भी डाक द्वारा उत्तर नहीं भेजा जावेगा। सबके उत्तर इसी प्रकार 'श्रीस्वाध्याय'में ही छपेंगे।

स्नेही सज्जनोंसे आवश्यक निवेदन

गत ६ माससे मैं स्वयं पूर्णरूपेण स्वस्थ नहीं रहा हूं। और न इस अवधिमें स्थायी रूपसे सोलन ही टिक सका हूं। मार्गशीर्ष मासमें जब मैं सोलन पहुंचा तो मेरे परम स्नेही श्रीमान् बा० भागीरथलालजीका विशेष आग्रहपूर्ण सन्देश मिला कि इस बार शीतकालमें स्वास्थ्य सुधारके लिए मैं सपरिवार उनके यहां लहरागागा पहुँचू। सोलनमें शीत असह्य हो गई थी और सहधर्मिणीका स्वास्थ्य भी खराब था। अतः मैं सपरिवार लहरागागा पहुंचा। यहां श्रीमान् बाबू भागीरथलाल जी ने हमारा स्नेहपूर्ण आतिथ्य सत्कार करके मुझे सब प्रकारकी स्वतन्त्र सुविधाएं सुलभ कर दीं जलवायु भी यहांका अनुकूल है, अतः अभी शीतकालका कुछ समय यहीं रहनेका विचार है। इस अवधिमें कई इष्ट मित्र एवं स्नेही सज्जनोंके पत्र और ज्योतिष सम्बन्धी कार्यके लिए मनीआर्डर तथा चैक सोलन पहुंचे थे, परन्तु अनुपस्थितिके कारण न तो समय पर मैं उन सज्जनोंको स्वयं उत्तर दे सका और न कार्य ही कर सका हूं, इसके लिए वे सब महानुभाव क्षमा करें। जिन्होंने पहले शुल्क भेज दिया है उनका कार्य यथासम्भव शीघ्र ही सोलन पहुंच कर भेजनेका प्रयत्न करूंगा।

विगत दो तीन वर्षोंसे योग्य कार्यकर्त्ताके अभावमें 'श्रीस्वाध्याय' और पंचांगका सम्पूर्ण कार्य भार स्वयं वहन करनेके कारण अहर्निश परिश्रमसे मेरे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा है, अतः यह अङ्क प्रकाशित करवा कर एक मास मैं विश्राम करना चाहता हूं। एतदर्थ अभी दो मास तक कोई भी सज्जन मेरे पास जन्मपत्र वर्षफलादिका श्रमसाध्य ज्योतिष सम्बन्धी कार्य भेजनेका कष्ट न करें। अत्यन्त आवश्यक निजी व्यक्तिगत पत्र और आगामी अङ्कके लिए लेख मुझे माघ शु० १५ ता० २१ फरवरी तक निम्न पते पर भेजे जा सकते हैं।

निवेदक :—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

C/o. श्री बा० भागीरथलालजी मिलआनर, लहरागागा E .P. R. (पटियाला यूनियन)

श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यो० को आघात

हमारे परम स्नेही और 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी लेखक श्रीमान् पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्यकी धर्मपत्नीका गत कार्तिक मासमें देहान्त हो गया। स्वर्गीया अपने पीछे चार छोटे-छोटे बालकोंको छोड़ गई हैं- उनमेंसे एक शिशु का शरीरान्त मातृवियोगके कुछ दिन बाद ही हो गया। इस प्रकार इस अवस्थामें आदर्श-अर्धाङ्गिनीके वियोगरूप वज्राघातके साथ ही अब शिशुओंके लालन पालनका सम्पूर्ण भार पण्डितजीके कन्धों पर आ पड़ा। इस महती विपत्तिके अवसर पर श्रीस्वाध्याय परिवारकी ओरसे सान्त्वना देते हुए हम प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गीयाकी आत्माको सद्गति और पण्डितजीको धैर्य साहस एवं शक्ति प्रदान करें।

इतनी आपत्ति ग्रस्त स्थितिमें होते हुए भी आपने 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लिए तीन मासकी तेजी-मन्दीका साप्ताहिक भविष्य शीर्षक लेख भेजा। किन्तु वह हमें बहुत विलम्बसे यह अन्तिम फार्म छपते समय मिला अतः प्रकाशित न हो सका इसका हमें खेद है। जो व्यापारी ग्राहक पण्डितजीके लेखसे लाभ उठाना चाहें वे प्रतिलिपि (नकल) करने वालेका पारिश्रमिक और मार्गव्यय (डाकखर्च) के लिए केवल १) एक रुपया श्रीस्वाध्यायसदन सोलनको भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए--

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन अध्यक्ष अ०भा० राष्ट्रीय महासभा—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ....इस पत्र और इसके सञ्चालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी........।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है।.... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है........।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी खाद्यमंत्री केन्द्रीय सरकार—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।........मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं........।

स्व० कविसम्राट श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्ध कर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूं।........"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।........यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"....वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।.... ...."

श्री डा० रामकुमार वर्मा जी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अन्वेषण और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......."

श्रीयुत '० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"........'श्रीस्वाध्याय'की सभी सामग्री ज्ञानवर्द्धक और उपादेय है।........प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......."

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (पू०सम्पादक 'सरस्वती')—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।........आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"....'श्रीस्वाध्याय' के विषय में विशेष क्या कहा जाय, वह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदय से इसकी सफलता चाहता हूं। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

Lh